

# निर्गमन

## मिम्न में याकूब का परिवार

**1** याकूब (इम्राएल) ने अपने पुत्रों के साथ मिम्न की यात्रा की थी, और हर एक पुत्र के साथ उसका अपना परिवार था। इम्राएल के पुत्रों के नाम हैं: २रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा, ३इस्साकर, जबलून, बिन्यामीन, ४दान, नप्ताली, गाद, आशेर। ५याकूब के अपने वंश में सत्तर लोग थे। उसके बारह पुत्रों में एक यूसुफ पहले से ही मिम्न में था।

६बाद में यूसुफ, उसके भाई और उसकी पीढ़ी के सभी लोग मर गए। ७किन्तु इम्राएल के लोगों की बहुत सन्तानें थीं, और उनकी संख्या बढ़ती ही गई। ये लोग शक्तिशाली हो गए और इन्हीं लोगों से मिम्न भर गया था।

## इम्राएल के लोगों को कष्ट

८तब एक नया राजा मिम्न पर शासन करने लगा। यह व्यक्ति यूसुफ को नहीं जानता था। ९इस राजा ने अपने लोगों से कहा, "इम्राएल के लोगों को देखो, इनकी संख्या अत्याधिक है, और हम लोगों से अधिक शक्तिशाली हैं। १०हम लोगों को निश्चय ही इनके विरुद्ध योजना बनानी चाहिए। यदि हम लोग ऐसा नहीं करते तो हो सकता है, कि कोई युद्ध छिड़े और इम्राएल के लोग हमारे शत्रुओं का साथ देने लगें। तब वे हम लोगों को हरा सकते हैं और हम लोगों के हाथों से निकल सकते हैं।"

११मिम्न के लोग इम्राएल के लोगों का जीवन कठिन बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने इम्राएल के लोगों पर दास-स्वामी नियुक्त किए। उन स्वामियों ने फिरौन के लिए पितोम और रामसेस नगरों को बनाने के लिए इम्राएली लोगों को विवश किया। उन्होंने इन नगरों में अन्न तथा अन्य चीजें इकट्ठी कीं।

१२मिम्नी लोगों ने इम्राएल के लोगों को कठिन से कठिन काम करने को विवश किया। किन्तु जितना अधिक काम करने के लिए इम्राएली लोगों को विवश किया गया उनकी संख्या उतनी ही बढ़ती चली गई और मिम्नी लोग इम्राएली लोगों से अधिकाधिक भयभीत होते गए। १३इसलिए मिम्न के लोगों ने इम्राएली लोगों को और भी अधिक कठिन काम करने को विवश किया। १४मिम्नी लोगों ने इम्राएली लोगों का जीवन दूभर कर दिया। उन्होंने इम्राएली लोगों को ईट-गारा बनाने का

बहुत कड़ा काम करने के लिए विवश किया। उन्होंने उन्हें खेतों में भी बहुत कड़ा काम करने को विवश किया। वे जो कुछ करते थे उन्हें कठिन परिश्रम के साथ करने को विवश किया।

## यहोवा की अनुगामी धाइयों

१५वहाँ शिप्रा और पूआ नाम की दो धाइयों थीं। ये धाइयों इम्राएली स्त्रियों के बच्चों का जन्म देने में सहायता करती थीं। मिम्न के राजा ने धाइयों से बातचीत की। १६राजा ने कहा, "तुम हिब्रू\* स्त्रियों को बच्चा जनने में सहायता करती रहोगी। यदि लड़की पैदा हो तो उसे जीवित रहने दो। किन्तु यदि लड़का पैदा हो तो तुम लोग उसे मार डालो।"

१७किन्तु धाइयों ने परमेश्वर पर विश्वास किया। इसलिए उन्होंने मिम्न के राजा के आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने सभी लड़कों को जीवित रहने दिया। १८मिम्न के राजा ने धाइयों को बुलाया और कहा, "तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया? तुम लोगों ने पुत्रों (लड़कों) को क्यों जीवित रहने दिया?"

१९धाइयों ने फिरौन से कहा, "हिब्रू स्त्रियाँ मिम्नी स्त्रियों से अधिक बलवान हैं। उनकी सहायता के लिए हम लोगों के पहुँचने से पहले ही वे बच्चों को जन्म दे देती हैं।"

२०२१(परमेश्वर धाइयों पर कृपालु था क्योंकि वे परमेश्वर से डरती थीं। इसलिए परमेश्वर उनके लिए अच्छा रहा और उन्हें अपने परिवार बनाने दिया और हिब्रू लोग अधिक बच्चे उत्पन्न करते रहे और वे बहुत शक्तिशाली हो गए।) २२इसलिए फिरौन ने अपने सभी लोगों को यह आदेश दिया: "जब कभी पुत्र पैदा हो तब तुम अवश्य ही उसे नील नदी में फेंक दो। किन्तु सभी पुत्रियों को जीवित रहने दो।"

## बालक मूसा

**2** लेवी के परिवार का एक व्यक्ति वहाँ था। उसने लेवी के परिवार की ही एक स्त्री से विवाह किया। २वह स्त्री गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म

दिया। इम्राएल के लोग। इस नाम का अर्थ एवर के वंशज भी हो सकता है या फरत नदी के पूर्व के लोग। देखें उत्पत्ति 10:25-31

दिया। माँ ने देखा कि बच्चा अत्याधिक सुन्दर है और उसने उसे तीन महीने तक छिपाए रखा। अकिन्तु तीन महीने बाद माँ डरी कि बच्चा ढूँढ लिया जायेगा तब वह मार डाला जाएगा, क्योंकि वह लड़का है। इसलिए उसने एक टोकरी बनाई और उस पर तारकोल का लेप इस प्रकार किया कि वह तैर सके। उसने बच्चे को टोकरी में रख दिया। तब उसने टोकरी को नदी के किनारे लम्बी घास में रख दिया। बच्चे की बहन वहाँ रुकी और उसकी रखवाली करती रही। वह देखना चाहती थी कि बच्चे के साथ क्या घटित होगा।

5उसी समय फिरौन की पुत्री नहाने के लिए नदी को गई। उसकी सखियाँ नदी के किनारे टहल रही थीं। उसने ऊँची घास में टोकरी देखी। उसने अपने दासियों में से एक को जाकर उसे लाने को कहा। राजा की पुत्री ने टोकरी को खोला और लड़के को देखा। बच्चा रो रहा था और उसे उस पर दया आ गई। उसने कहा, यह हिब्रू बच्चों में से एक है।

7बच्चे की बहन अभी तक छिपी थी। तब वह खड़ी हुई और फिरौन की पुत्री से बोली, “क्या आप चाहती हैं कि मैं बच्चे की देखभाल करने में आपकी सहायता के लिए एक हिब्रू स्त्री जाकर ढूँढ लाऊँ?”

8फिरौन की पुत्री ने कहा, “धन्यवाद हो।”

इसलिए लड़की गई और बच्चे की अपनी माँ को ही ढूँढ लाई।

9फिरौन की पुत्री ने कहा, “इस बच्चे को ले जाओ और मेरे लिए इसे पालो। इस बच्चे को अपना दूध पिलाओ मैं तुम्हें वेतन दूँगी।”

सो उस स्त्री ने अपने बच्चे को ले लिया और उसका पालन पोषण किया। 10बच्चा बड़ा हुआ और कुछ समय बाद वह स्त्री उस बच्चे को फिरौन की पुत्री के पास लाई। फिरौन की पुत्री ने अपने पुत्र के रूप में उस बच्चे को अपना लिया। फिरौन की पुत्री ने उसका नाम मूसा रखा। क्योंकि उसने उसे पानी से निकाला था।

### मूसा अपने लोगों की सहायता करता है

11मूसा बड़ा हुआ और युवक हो गया। उसने देखा कि उसके हिब्रू लोग अत्यन्त कठिन काम करने के लिए विवश किए जा रहे हैं। एक दिन मूसा ने एक मिश्री व्यक्ति द्वारा एक हिब्रू व्यक्ति को पीटते देखा। 12इसलिए मूसा ने चारों ओर नज़र घुमाई और देखा कि कोई देख नहीं रहा है। सो मूसा ने मिश्री को मार डाला और उसे रेत में छिपा दिया। 13अगले दिन मूसा ने दो हिब्रू व्यक्तियों को परस्पर लड़ते देखा। मूसा ने देखा कि एक व्यक्ति गलती पर था। मूसा ने उस आदमी से कहा, “तुम अपने पड़ोसी को क्यों मार रहे हो?”

14उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “क्या किसी ने कहा है कि तुम हमारे शासक और न्यायाधीश बनो? नहीं! मुझे

बताओ कि क्या तुम मुझे भी उसी प्रकार मार डालोगे जिस प्रकार तुमने कल मिश्री को मार डाला?”

तब मूसा डरा। मूसा ने मन ही मन सोचा, “अब हर एक व्यक्ति जानता है कि मैंने क्या किया है।”

15फिरौन ने सुना कि मूसा ने मिश्री की हत्या की है मूसा ने जो कुछ किया फिरौन ने उसके बारे में सुना, इसलिए उसने मूसा को मार डालने का निश्चय किया। किन्तु मूसा फिरौन की पकड़ से निकल भागा।

### मिद्यान में मूसा

मूसा मिद्यान देश में गया। उस प्रदेश में मूसा एक कुएँ के समीप रुका। 16मिद्यान में एक याजक था जिसकी सात पुत्रियाँ थीं। एक दिन उसकी पुत्रियाँ अपने पिता की भेड़ों के लिए पानी लेने उसी कुएँ पर गईं। वे कठौती को पानी से भरने का प्रयत्न कर रही थीं। 17किन्तु कुछ चरवाहों ने उन लड़कियों को भगा दिया और पानी नहीं लेने दिया। इसलिए मूसा ने लड़कियों की सहायता की और उनके जानवरों को पानी दिया।

18तब वे अपने पिता रुएल के पास लौट गईं। उनके पिता ने उनसे पूछा, “आज तुम लोग क्यों जल्दी घर चली आईं?”

19लड़कियों ने उत्तर दिया, “चरवाहों ने हम लोगों को भगाना चाहा। किन्तु एक मिश्री व्यक्ति ने हम लोगों की सहायता की। उसने हम लोगों के लिए पानी निकाला और हम लोगों के जानवरों को दिया।”

20इसलिए रुएल ने अपनी पुत्रियों से कहा, “यह व्यक्ति कहाँ है? तुम लोगों ने उसे छोड़ा क्यों? उसे यहाँ बुलाओ और हम लोगों के साथ उसे भोजन करने दो।”

21मूसा उस आदमी के साथ ठहरने से प्रसन्न हुआ। और उस आदमी ने अपनी पुत्री सिप्पोरा को मूसा की पत्नी के रूप में उसे दे दिया।

22सिप्पोरा ने एक पुत्र को जन्म दिया। मूसा ने अपने पुत्र का नाम गेशोम रखा। मूसा ने अपने पुत्र को यह नाम इसलिए दिया कि वह उस देश में अजनबी था जो उसका अपना नहीं था।

### परमेश्वर ने इब्राएल को सहायता देने का निश्चय किया

23लम्बा समय बीता और मिश्र का राजा मर गया। इब्राएली लोगों को जब भी कठिन परिश्रम करने के लिए विवश किया जाता था। वे सहायता के लिए पुकारते थे। और परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी। 24परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाएँ सुनीं और उस वाचा को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ की थी। 25परमेश्वर ने इब्राएली लोगों के कष्टों को देखा और उसने सोचा कि वे शीघ्र ही उनकी सहायता करेगा।

## जलती हुई झाड़ी

3 मूसा के ससुर का नाम यित्रो था। यित्रो मिद्यान का याजक था। मूसा यित्रो की भेड़ों का चरवाहा था। एक दिन मूसा भेड़ों को मरुभूमि के पश्चिम की ओर ले गया। मूसा होरेब नाम के उस एक पहाड़ को गया, जो परमेश्वर का पहाड़ था। मूसा ने उस पहाड़ पर यहोवा के दूत को एक जलती हुई झाड़ी में देखा। यह इस प्रकार घटित हुआ। मूसा ने एक झाड़ी को जलते हुए देखा जो भस्म नहीं हो रही थी। इसलिए मूसा ने कहा कि मैं झाड़ी के निकट जाऊँगा और देखूँगा कि बिना राख हुए कोई झाड़ी कैसे जलती रह सकती है।

4 यहोवा ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है। इसलिए परमेश्वर ने झाड़ी से मूसा को पुकारा। उसने कहा, "मूसा, मूसा!" और मूसा ने कहा, "हाँ, यहोवा!"

5 तब यहोवा ने कहा, "निकट मत आओ। अपनी जूतियाँ उतार लो। तुम पवित्र भूमि पर खड़े हो। मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर हूँ। मैं इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक का परमेश्वर तथा याकूब का परमेश्वर हूँ।"

मूसा ने अपना मुँह ढक लिया क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था।

7 तब यहोवा ने कहा, "मैंने उन कष्टों को देखा है जिन्हें मिश्र में हमारे लोगों ने सहा है और मैंने उनका रोना भी सुना है जब मिश्री लोग उन्हें चोट पहुँचाते हैं। मैं उनकी पीड़ा के बारे में जानता हूँ। मैं अब जाऊँगा और मिश्रियों से अपने लोगों को बचाऊँगा। मैं उन्हें उस देश से निकालूँगा और उन्हें मैं एक अच्छे देश में ले जाऊँगा जहाँ वे कष्टों से मुक्त हो सकेंगे। जो अनेक अच्छी चीज़ों से भरा पड़ा है।\* उस प्रदेश में विभिन्न लोग रहते हैं। कनानी, हिती, एमोरी, परिजी हिब्बी और यबूसी। मैंने इब्राएल के लोगों की पुकार सुनी है। मैंने देखा है कि मिश्रियों ने किस तरह उनके लिए जीवन को कठिन कर दिया है। 10 इसलिए अब मैं तुमको फिरौन के पास भेज रहा हूँ। जाओ! मेरे लोगों अर्थात् इब्राएल के लोगों को मिश्र से बाहर लाओ।"

11 किन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कोई महत्वपूर्ण आदमी नहीं हूँ। मैं ही वह व्यक्ति क्यों हूँ जो फिरौन के पास जाए और इब्राएल के लोगों को मिश्र के बाहर निकाल कर ले चले?"

12 परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुमको भेज रहा हूँ, यह प्रमाण होगा: लोगों को मिश्र के बाहर निकाल लाने के बाद तुम आओगे और इस पर्वत पर मेरी उपासना करोगे।"

13 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु यदि मैं इब्राएल के लोगों के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा,

'तुम लोगों के पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है,' तब लोग पूछेंगे, उसका क्या नाम है?' मैं उनसे क्या कहूँगा?"

14 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "उन्से कहो, 'मैं जो हूँ सो हूँ।'\* जब तुम इब्राएल के लोगों के पास जाओ, तो उनसे कहो, 'मैं हूँ जिसने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है।'"

15 परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "लोगों से तुम जो कहोगे वह यह है की: 'यहवे तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर है। मेरा नाम सदा यहोवा रहेगा। इसी रूप में लोग आगे पीढ़ी दर पीढ़ी मुझे जानेंगे।' लोगों से कहो, 'यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'"

16 यहोवा ने यह भी कहा, "जाओ और इब्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा करो और उनसे कहो, 'तुम्हारे, पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा, मेरे सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने मुझसे बातें कीं। यहोवा ने कहा है: मैंने तुम लोगों के बारे में सोचा है और उस सबके बारे में भी जो तुम लोगों के साथ मिश्र में घटित हुआ है। 17 मैंने निश्चय किया है कि मिश्र में तुम लोग जो कष्ट सह रहे हो उससे तुम्हें बाहर निकालूँ। मैं तुम लोगों को उस देश में ले चलूँगा जो अनेक लोगों अर्थात्: कनानी, हिती, एमोरी, परिजी, हिब्बी, और यबूसी का है। मैं तुम लोगों को ऐसे अच्छे देश को ले जाऊँगा जो बहुत अच्छी चीज़ों से भरा पूरा है। 18 बुजुर्ग (नेता) तुम्हारी बातें सुनेंगे और तब तुम और बुजुर्ग (नेता) मिश्र के राजा के पास जाओगे। तुम उससे कहोगे 'हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा है। हमारा परमेश्वर हम लोगों के पास आया था। उसने हम लोगों से तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने के लिए कहा है। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को निश्चय ही बलियाँ चढायेंगे।'

19 किन्तु मैं जानता हूँ कि मिश्र का राजा तुम लोगों को जाने नहीं देगा। केवल एक महान शक्ति ही तुम लोगों को जाने देने के लिए उसे विवश करेगी। 20 इसलिए मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग मिश्र के विरुद्ध करूँगा। मैं उस देश में चमत्कार होने दूँगा। जब मैं ऐसा करूँगा तो वह तुम लोगों को जाने देगा। 21 और मैं मिश्री लोगों को इब्राएली लोगों के प्रति कृपालु बनाऊँगा। इसलिए जब तुम लोग विदा होंगे तो वे तुम्हें भेंट देंगे।

22 हर एक हिब्रू स्त्री अपने मिश्री पड़ोसी से तथा अपने घर में रहने वालों से मांगेगी और वे लोग उसे भेंट देंगे। तुम्हारे लोग भेंट में चाँदी, सोना और सुन्दर वस्त्र पाएँगे। जब तुम लोग मिश्र को छोड़ोगे तुम लोग उन

जो ... पड़ा है शाब्दिक वह प्रदेश जिसमें मधु और दूध की नदियाँ बहती हों।

मैं जो हूँ सो हूँ हिब्रू शब्द 'यहवे (यहोवा) नाम की तरह है।"

भेटों को अपने बच्चों को पहनाओगे। इस प्रकार तुम लोग मिश्रियों का धन ले आओगे।”

### मूसा के लिए प्रमाण

4 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, “किन्तु इब्राएल के लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे जब मैं उनसे कहूँगा कि तूने मुझे भेजा है। वे कहेंगे, ‘यहोवा ने तुमसे बातें नहीं कीं।’”

2किन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा, “तुमने अपने हाथ में क्या ले रखा है?”

मूसा ने उत्तर दिया, “यह मेरी टहलने की लाठी है।”

तब परमेश्वर ने कहा, “अपनी लाठी को जमीन पर फेंको।”

इसलिए मूसा ने अपनी लाठी को जमीन पर फेंका और लाठी एक सौंप बन गया। मूसा डरा और इससे दूर भागा। 4किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, “आगे बढ़ो और सौंप की पूँछ पकड़ लो।”

इसलिए मूसा आगे बढ़ा और उसने सौंप की पूँछ पकड़ लिया। जब मूसा ने ऐसा किया तो सौंप फिर लाठी बन गया। तब परमेश्वर ने कहा, “अपनी लाठी का इसी प्रकार उपयोग करो और लोग विश्वास करेंगे कि तुमने यहोवा अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर, इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर तथा याकूब के परमेश्वर को देखा है।”

6तब यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं तुमको दूसरा प्रमाण दूँगा। तुम अपने हाथ को अपने लबादे के अन्दर करो।”

इसलिए मूसा ने अपने लबादे को खोला और हाथ को अन्दर किया। तब मूसा ने अपने हाथ को लबादे से बाहर निकाला और वह बदला हुआ था। उसका हाथ बर्फ की तरह सफेद दागों से ढका था।

7तब परमेश्वर ने कहा, “अब तुम अपना हाथ फिर लबादे के भीतर रखो।” इसलिए मूसा ने अपना हाथ अपने लबादे के भीतर फिर किया। तब मूसा ने अपना हाथ बाहर निकाला, और उसका हाथ बदल गया था। अब उसका हाथ पहले की तरह ठीक हो गया था।

8तब परमेश्वर ने कहा, “यदि लोग तुम्हारा विश्वास लाठी का उपयोग करने पर न करें, तो वे तुम पर तब विश्वास करेंगे जब तुम इस चिन्ह को दिखाओगे। 9यदि वे दोनों चीजों को दिखाने के बाद भी विश्वास न करें तो तुम नील नदी से कुछ पानी लेना। पानी को जमीन पर गिराना शुरू करना और ज्योंही यह जमीन को छुएगा, खून बन जाएगा।”

10किन्तु मूसा ने यहोवा से कहा, “किन्तु हे यहोवा, मैं सच कहता हूँ मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। मैं लोगों से कुशलतापूर्वक बात करने के योग्य नहीं हुआ और अब तुझ से बातचीत करने के बाद भी मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। तू जानता है कि मैं धीरे-धीरे

बोलता हूँ\* और उत्तम शब्दों का उपयोग नहीं करता।”

11तब यहोवा ने उससे कहा, “मनुष्य का मुँह किसने बनाया? और एक व्यक्ति को कौन बोलने और सुनने में असमर्थ बना सकता है? मनुष्य को कौन देखनेवाला और अन्धा बना सकता है? यह मैं हूँ जो इन सभी चीजों को कर सकता हूँ। मैं यहोवा हूँ। 12इसलिए जाओ। जब तुम बोलोगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें बोलने के लिए शब्द दूँगा।”

13किन्तु मूसा ने कहा, “मेरे यहोवा, मैं दूसरे व्यक्ति को भेजने के लिए प्रार्थना करता हूँ मुझे न भेजा।”

14यहोवा मूसा पर क्रुद्ध हुआ। यहोवा ने कहा, “मैं तुमको सहायता के लिये एक व्यक्ति दूँगा। मैं तुम्हारे भाई हारून का उपयोग करूँगा। वह कुशल वक्ता है। हारून पहले ही तुम्हारे पास आ रहा था। वह तुमको देखकर बहुत प्रसन्न होगा। 15वह तुम्हारे साथ फिरौन के पास जाएगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या कहना है। तब तुम हारून को बताओगे। हारून फिरौन से कहने के लिए उचित शब्द चुनेगा। 16हारून ही तुम्हारे लिए लोगों से बात करेगा। तुम उसके लिए महान राजा के रूप में रहोगे, और वह तुम्हारा अधिकृत वक्ता होगा।\* 17इसलिए जाओ और अपनी लाठी साथ ले जाओ। अपनी लाठी और दूसरे चमत्कारों का उपयोग लोगों को यह दिखाने के लिए करो कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

### मूसा मिश्र लौटता है

18तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा। मूसा ने यित्रो से कहा, “मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मिश्र में अपने लोगों के पास जाने दें। मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्या वे अभी तक जीवित हैं।”

यित्रो ने मूसा से कहा, “तुम शान्तिपूर्वक जा सकते हो।”

19उस समय जब मूसा मिद्यान में ही था, परमेश्वर ने उससे कहा, “इस समय तुम्हारे लिए मिश्र को जाना सुरक्षित है। जो व्यक्ति तुमको मारना चाहते थे वे मर चुके हैं।”

20इसलिए मूसा ने अपनी पत्नी और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गधे पर बिठाया। तब मूसा ने मिश्र देश की वापसी यात्रा की। मूसा उस लाठी को अपने साथ ले गया जिसमें परमेश्वर की शक्ति थी।

21जिस समय मूसा मिश्र की वापसी यात्रा पर था, परमेश्वर उससे बोला। परमेश्वर ने कहा, “जब तुम फिरौन से बात करो तो उन सभी चमत्कारों को दिखाना।

मैं धीरे ... हूँ या मैं हकलता हूँ और साफ़ नहीं बोलता।”

तुम्हारा ... होगा शाब्दिक “वह तुम्हारी वाणी होगा, और तुम उसके परमेश्वर होगे।”

याद रखना जिन्हें दिखाने की शक्ति मैंने तुम्हें दी है। किन्तु फ़िरौन को मैं बहुत हठी बना दूँगा। वह लोगों को जाने नहीं देगा। 22तब तुम फ़िरौन से कहना: 23यहोवा कहता है, 'इज़्राएल मेरा पहलौठा पुत्र है और मैं तुम से कहता हूँ कि मेरे पुत्र को जाने दो तथा मेरी उपासना करने दो। यदि तुम इज़्राएल को जाने से मना करते हो तो मैं तुम्हारे पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा।''

### मूसा के पुत्र का ख़तना

24मूसा मिश्र की अपनी यात्रा करता रहा। यात्रियों के लिए बने एक स्थान पर वह सोने के लिए रुका। यहोवा इस स्थान पर मूसा से मिला और उसे मार डालने की कोशिश की। 25किन्तु सिप्पोरा ने पत्थर का एक तेज चाकू लिया और अपने पुत्र का खतना किया। उसने चमड़े को लिया और उसके पैर छुए। तब उसने मूसा से कहा, "तुम मेरे खून बहाने वाले पति हो।" 26सिप्पोरा ने यह इसलिए कहा कि उसे अपने पुत्र का खतना करना पड़ा था। इसलिए परमेश्वर ने मूसा को क्षमा किया और उसे मारा नहीं।

### परमेश्वर के सामने मूसा और हारून

27यहोवा ने हारून से बात की थी। यहोवा ने उससे कहा था, "मरुभूमि में जाओ और मूसा से मिलो।" इसलिए हारून गया और परमेश्वर के पहाड़ पर मूसा से मिला। जब हारून ने मूसा को देखा, उसने उसे चूमा। 28मूसा ने हारून को यहोवा द्वारा भेजे जाने का कारण बताया और मूसा ने हारून को उन चमत्कारों और उन संकेतों को भी समझाया जिन्हें उसे प्रमाण रूप में प्रदर्शित करना था। मूसा ने हारून को वह सब कुछ बताया जो यहोवा ने कहा था।

29इस प्रकार मूसा और हारून गए और उन्होंने इज़्राएल के लोगों के सभी बुजुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा किया। 30तब हारून ने लोगों से कहा। उसने लोगों को वे सारी बातें बताईं जो यहोवा ने मूसा से कहीं थीं। तब मूसा ने सब लोगों को दिखाने के लिए सारे प्रमाणों को करके दिखाया। 31लोगों ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने मूसा को भेजा है। उन्होंने झुक कर प्रणाम किया और परमेश्वर की उपासना की, क्योंकि वे जान गए कि परमेश्वर इज़्राएल के लोगों की सहायता करने आ गया है और उन्होंने परमेश्वर की इसलिए उपासना की क्योंकि कि वे जान गए कि यहोवा ने उनके कष्टों को देखा है।

### मूसा और हारून फ़िरौन के सामने

5 लोगों से बात करने के बाद मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने कहा, "इज़्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे लोगों को मरुभूमि में जाने दे जिससे वे मेरे लिए उत्सव कर सकें।''

2किन्तु फ़िरौन ने कहा, "यहोवा कौन है? मैं उसका आदेश क्यों मानूँ? मैं इज़्राएलियों को क्यों जाने दूँ? मैं उसे नहीं जानता जिसे तुम यहोवा कहते हो। इसलिए मैं इज़्राएलियों को जाने देने से मना करता हूँ।"

3तब हारून और मूसा ने कहा, "हिब्रूओं के परमेश्वर ने हम लोगों को दर्शन दिया है। इसलिए हम लोग आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने दें। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को एक बलि चढ़ाएंगे। यदि हम लोग ऐसा नहीं करेंगे तो वह क्रुद्ध हो जायेगा और हमें नष्ट कर देगा। वह हम लोगों को रोग या तलवार से मार सकता है।"

4किन्तु फ़िरौन ने उनसे कहा, "मूसा और हारून, तुम लोगों को परेशान कर रहे हैं। तुम उन्हें काम करने से हटा रहे हो। उन दासों को काम पर लौटने को कहो। 5यहाँ बहुत से श्रमिक हैं तुम लोग उन्हें अपना काम करने से रोक रहे हो।"

### फ़िरौन द्वारा लोगों को दण्ड

6ठीक उसी दिन फ़िरौन ने इज़्राएल के लोगों के काम को और अधिक कड़ा बनाने का आदेश दिया। फ़िरौन ने दास स्वामियों से कहा, "तुम ने लोगों को सदा भूसा दिया है जिसका उपयोग वे ईंट बनाने में करते हैं। किन्तु अब उनसे कहो कि वे ईंट बनाने के लिए भूसा स्वयं जाकर इकट्ठा करें। 8किन्तु वे संख्या में अब भी उतनी ही ईंटें बनाएँ जितनी वे पहले बनाते थे। वे आलसी हो गए हैं। यही कारण है कि वे जाने की माँग कर रहे हैं। उनके पास करने के लिए काफी काम नहीं है इसलिए वे मुझसे माँग कर रहे हैं कि मैं उन्हें उनके परमेश्वर को बलि चढ़ाने दूँ। 9इसलिए इन लोगों से अधिक कड़ा काम कराओ। इन्हें काम में लगाए रखो। तब उनके पास इतना समय ही नहीं होगा कि वे मूसा की झूठी बातें सुनें।"

10इसलिए मिश्री दास स्वामी और हिब्रू कार्य-प्रबन्धक इज़्राएल के लोगों के पास गए और उन्होंने कहा, "फ़िरौन ने निर्णय किया है कि वह तुम लोगों को तुम्हारी ईंटों के लिए तुम्हें भूसा नहीं देगा। 11तुम लोगों को स्वयं जाना होगा और अपने लिए भूसा स्वयं इकट्ठा करना होगा। इसलिए जाओ और भूसा जुटाओ। किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।"

12इस प्रकार हर एक आदमी मिश्र में भूसा खोजने के लिए चारों ओर गया। 13दास स्वामी लोगों को अधिक कड़ा काम करने के लिए विवश करते रहे। वे लोगों को उतनी ही ईंटें बनाने के लिए विवश करते रहे जितनी वे पहले बनाया करते थे। 14मिश्री दास स्वामियों ने हिब्रू कार्य-प्रबन्धक चुन रखे थे और उन्हें लोगों के काम का उत्तरदायी बना रखा था। मिश्री दास स्वामी इन कार्य-प्रबन्धकों को पीटते थे और उनसे कहते थे,

“तुम उतनी ही ईंट क्यों नहीं बनाते जितनी पहले बना रहे थे। जब तुम यह काम पहले कर सकते थे तो तुम इसे अब भी कर सकते हो।”

15तब हिब्रू कार्य-प्रबन्धक फिरौन के पास गए। उन्होंने शिकायत की और कहा, “आप अपने सेवकों के साथ ऐसा बरताव क्यों कर रहे हैं? 16आपने हम लोगों को भूसा नहीं दिया। किन्तु हम लोगों को आदेश दिया गया कि उतनी ही ईंट बनाएं जितनी पहले बनती थीं और अब हम लोगों के स्वामी हमें पीटते हैं। ऐसा करने में आपके लोगों की गलती है।”

17फिरौन ने उत्तर दिया, “तुम लोग आलसी हो। तुम लोग काम करना नहीं चाहते। यही कारण है कि तुम लोग माँग करते हो कि मैं तुम लोगों को जाने दूँ और यही कारण है कि तुम लोग यह स्थान छोड़ना चाहते हो और यहोवा को बलि चढ़ाना चाहते हो। 18अब काम पर लौट जाओ! हम तुम लोगों को कोई भूसा नहीं देंगे। किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंट बनाओ जितनी पहले बनाया करते थे।”

19हिब्रू कार्य-प्रबन्धक समझ गए कि वे परेशानी में पड़ गए हैं। कार्य-प्रबन्धक जानते थे कि वे उतनी ईंट नहीं बना सकते जितनी बीते समय में बनाते थे।

20जब वे फिरौन से मिलने के बाद जा रहे थे, वे मूसा, और हारून के पास से निकले। मूसा और हारून उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। 21इसलिए उन्होंने मूसा और हारून से कहा, “तुम लोगों ने बुरा किया कि तुम ने फिरौन से हम लोगों को जाने देने के लिए कहा। यहोवा तुम को दण्ड दे क्योंकि तुम लोगों ने फिरौन और उसके प्रशासकों में हम लोगों के प्रति घृणा उत्पन्न की। तुम ने हम लोगों को मारने का एक बहाना उन्हें दिया है।”

### मूसा की परमेश्वर से शिकायत

22तब मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, “हे स्वामी, तूने अपने लोगों के लिए यह बुरा काम क्यों किया है? तूने हमको यहाँ क्यों भेजा है? 23मैं फिरौन के पास गया और जो तूने कहने को कहा उसे मैंने उससे कहा। किन्तु उस समय से वह लोगों के प्रति अधिक क्रूर हो गया। और तूने उनकी सहायता के लिए कुछ नहीं किया है।”

6 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अब तुम देखोगे कि फिरौन का मैं क्या करता हूँ। मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग उसके विरोध में करूँगा और वह मेरे लोगों को जाने देगा। वह उन्हें छोड़ने के लिए इतना अधिक आतुर होगा कि वह स्वयं उन्हें जाने के लिए विवश करेगा।”

2तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, 3मैं यहोवा हूँ। मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब के सामने प्रकट हुआ

था। उन्होंने मुझे एल-सद्दायी (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) कहा। मैंने उनको यह नहीं बताया था कि मेरा नाम यहोवा (परमेश्वर) है। 4मैंने उनके साथ एक साक्षीपत्र बनाया मैंने उनको कनान प्रदेश देने का वचन दिया। वे उस प्रदेश में रहते थे, किन्तु वह उनका अपना प्रदेश नहीं था। 5अब मैं इब्राएल के लोगों के कष्ट के बारे में जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि वे मिश्र के दास हैं और मुझे अपना साक्षीपत्र याद है। 6इसलिए इब्राएल के लोगों से कहो कि मैं उनसे कहता हूँ, मैं यहोवा हूँ। मैं तुम लोगों की रक्षा करूँगा। मैं तुम लोगों को स्वतन्त्र करूँगा। तुम लोग मिश्रियों के दास नहीं रहोगे। मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग करूँगा और मिश्रियों को भयंकर दण्ड दूँगा। तब मैं तुम लोगों को बचाऊँगा। 7तुम लोग मेरे लोग होगे और मैं तुम लोगों का परमेश्वर। मैं यहोवा तुम लोगों का परमेश्वर हूँ और जानोगे कि मैंने तुम लोगों को मिश्र की दासता से मुक्त किया। 8मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बड़ी प्रतिज्ञा की थी। मैंने उन्हें विशेष प्रदेश देने का वचन दिया था। इसलिए मैं तुम लोगों को उस प्रदेश तक ले जाऊँगा। मैं वह प्रदेश तुम लोगों को दूँगा। वह तुम लोगों का होगा। मैं यहोवा हूँ।”

9इसलिए मूसा ने यह बात इब्राएल के लोगों को बताई। किन्तु लोग इतना कठिन श्रम कर रहे थे कि वे मूसा के प्रति धीरज न रख सकें। उन्होंने उसकी बात नहीं सुनी। 10तब यहोवा ने मूसा से कहा, 11“जाओ और फिरौन से कहो कि वह इब्राएल के लोगों को इस देश से निश्चय ही जाने दे।”

12किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, “इब्राएल के लोग मेरी बात सुनना भी नहीं चाहते हैं इसलिए निश्चय ही फिरौन भी सुनना नहीं चाहेगा। मैं बहुत खराब वक्ता हूँ।”\*

13किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से बातचीत की। परमेश्वर ने उन्हें जाने और इब्राएल के लोगों से बातें करने का आदेश दिया और यह भी आदेश दिया कि वे जाएं और फिरौन से बातें करें। परमेश्वर ने आदेश दिया कि वे इब्राएल के लोगों को मिश्र के बाहर ले जाए।

### इब्राएल के कुछ परिवार

14इब्राएल के परिवारों के प्रमुख लोगों के नाम हैं: इब्राएल के पहले पुत्र रूबेन के चार पुत्र थे। वे थे हनोक, पल्लू, हेरोन और कम्मी। 15शिमोन के पुत्र थे: यमूल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और शाउल। शाउल एक कनानी स्त्री का पुत्र था। 16लेवी एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। लेवी के पुत्र थे गेशॉन, कहात और मरारी। 17गेशॉन के दो पुत्र थे—लिबनी और शिमी।

मैं बहुत खराब वक्ता हूँ या “मैं बोली से विदेशी सा लगता हूँ।” शाब्दिक “मेरे आँठ खतना रहित हैं।” यह एक अलंकार पूर्ण प्रयोग है।

18कहात एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। कहात के पुत्र थे अग्राम, यिसहार, हेब्रेन और उज्जीएल। 19मरारी के पुत्र थे महली और मशी। ये सभी परिवार इब्राएल के पुत्र लेवी के थे।

20अग्राम एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। अग्राम ने अपने पिता की बहन योकेबेद से विवाह किया। अग्राम और योकेबेद ने हारून और मूसा को जन्म दिया। 21यिसहार के पुत्र थे कोरह नेपग और जिक्की। 22उज्जीएल के पुत्र थे मीशाएल एलसापान और सित्री।

23हारून ने ऐलीशेबा से विवाह किया। (एलीशेबा अम्मीनादाब की पुत्री थी और नहशोन की बहन।) हारून और ऐलीशेबा ने नादाब, अबीह, ऐलाजार, और ईतामार को जन्म दिया। 24कोरह के पुत्र अर्थात् कोरही थे: अस्सीर एलकाना और अबीआसाप। 25हारून के पुत्र ऐलाजार ने पूतीएल की पुत्री से विवाह किया और उन्होंने पीनहास को जन्म दिया। ये सभी लोग इब्राएल के पुत्र लेवी से थे।

26इस प्रकार हारून और मूसा इसी परिवार समूह से थे और ये ही वे व्यक्ति हैं जिन्से परमेश्वर ने बातचीत की और कहा, "मेरे लोगों को समूहों \* में बाँटकर मिश्र से निकालो।" 27हारून और मूसा ने ही मिश्र के राजा फ़िरौन से बातचीत की। उन्होंने फ़िरौन से कहा कि वह इब्राएल के लोगों को मिश्र से जाने दे।

### यहोवा का मूसा को फिर बुलावा

28मिश्र देश में परमेश्वर ने मूसा से बातचीत की।

29उसने कहा, "मैं यहोवा हूँ, मिश्र के राजा से वे सारी बातें कहो जो मैं तुमसे कहता हूँ।"

30किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ, राजा मेरी बात नहीं सुनेगा।"

**7** यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। फ़िरौन के लिए तुम एक महान राजा\* की तरह होगे और हारून तुम्हारा अधिकृत वक्ता\* होगा। 2जो आदेश मैं दे रहा हूँ वह सब कुछ हारून से कहो। तब वह वे बातें जो मैं कह रहा हूँ, फ़िरौन से कहेगा और फ़िरौन इब्राएल के लोगों को इस देश से जाने देगा। 3किन्तु मैं फ़िरौन को हठी बनाऊँगा। वह उन बातों को नहीं मानेगा जो तुम कहोगे। तब मैं मिश्र में बहुत से चमत्कार करूँगा। किन्तु वह फिर भी नहीं सुनेगा। 4इसलिए तब मैं मिश्र को बुरी तरह दण्ड दूँगा और मैं अपने लोगों को उस देश के बाहर ले चलूँगा। 5तब मिश्र के लोग जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। मैं उनके विरुद्ध हो

समूहों या "टुकड़ियों।" यह सैनिक परिभाषिक शब्द है और इससे पता चलता है कि इब्राएल सेना के रूप में संगठित था।

महान राजा या "परमेश्वर।"

वक्ता या "नबी।"

जाऊँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। तब मैं अपने लोगों को उनके देश से बाहर ले जाऊँगा।"

6मूसा और हारून ने उन बातों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने कहा था। 7इस समय मूसा अस्सी वर्ष का था और हारून तिरासी का।

### मूसा की लाठी का साँप बनना

8यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "9फ़िरौन तुमसे तुम्हारी शक्ति को प्रमाणित करने के लिए कहेगा। वह तुम्हें चमत्कार दिखाने के लिए कहेगा। तुम हारून से उसकी लाठी ज़मीन पर फेंकने को कहना। जिस समय फ़िरौन देख रहा होगा तभी लाठी साँप बन जाएगी।"

10इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए और यहोवा की आज्ञा का पालन किया। हारून ने अपनी लाठी नीचे फेंकी। फ़िरौन और उसके अधिकारियों के देखते देखते लाठी साँप बन गयी।

11इसलिए फ़िरौन ने अपने गुणी पुरुषों और जादूगरों को बुलाया। इन लोगों ने अपने रहस्य चातुर्य का उपयोग किया और वे भी हारून के समान कर सके। 12उन्होंने अपनी लाठियाँ ज़मीन पर फेंकी और वे साँप बन गईं। किन्तु हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को खा डाला। 13फ़िरौन ने फिर भी, लोगों का जाना मना कर दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। फ़िरौन ने मूसा और हारून की बात सुनने से मना कर दिया।

### पानी का खून बनना

14तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फ़िरौन हठ पकड़े हुए है। फ़िरौन लोगों को जाने से मना करता है। 15सर्वेरे फ़िरौन नदी पर जाएगा। उसके साथ नील नदी के किनारे-किनारे जाओ। उस लाठी को अपने साथ ले लो जो साँप बनी थी। 16उससे यह कहो: 'हिब्रू लोगों के परमेश्वर यहोवा ने हमको तुम्हारे पास भेजा है। यहोवा ने मुझे तुमसे यह कहने को कहा है, मेरे लोगों को मेरी उपासना करने के लिए मरुभूमि में जाने दो। तुमने भी अब तक यहोवा की बात पर कान नहीं दिया है। 17इसलिए यहोवा कहता है कि, मैं ऐसा करूँगा जिससे तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। जो मैं अपने हाथ की इस लाठी को लेकर नील नदी के पानी पर मारूँगा और नील नदी खून में बदल जाएगी। 18तब नील नदी की मछलियाँ मर जाएंगी और नदी से दुर्गन्ध आने लगेगी। और मिश्री लोग नदी से पानी नहीं पी पाएँगे।"

19यहोवा ने मूसा को यह आदेश दिया: "हारून से कहो कि वह नदियों, नहरों, झीलों तथा तालाबों सभी स्थानों पर जहाँ मिश्र के लोग पानी एकत्र करते हैं, अपने हाथ की लाठी को बड़ाए। जब वह ऐसा करेगा तो सारा जल खून में बदल जाएगा। सारा पानी, यहाँ तक

कि लकड़ी और पत्थर के घड़ों का पानी भी, खून में बदल जाएगा।”

20 इसलिए मूसा और हारून ने यहोवा का जैसा आदेश था, वैसा किया। उसने लाठी को उठाया और नील नदी के पानी पर मारा। उसने यह फिरौन और उसके अधिकारियों के सामने किया। फिर नदी का सारा जल खून में बदल गया। 21 नदी में मछलियाँ मर गईं और नदी से दुर्गन्ध आने लगी। इसलिए मिश्री नदी से पानी नहीं पी सकते थे। मिश्र में सर्वत्र खून था।

22 जादूगरों ने अपनी जादूगरी दिखाई और उन्होंने भी वैसा ही किया। इसलिए फिरौन ने मूसा और हारून को सुनने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। 23 फिरौन मुड़ा और अपने घर चला गया। फिरौन ने, मूसा और हारून ने जो कुछ किया, उसकी उपेक्षा की।

24 मिश्री नदी से पानी नहीं पी सकते थे। इसलिए पीने के पानी के लिए उन्होंने नदी के चारों ओर कुएँ खोदे।

### मेंढक

25 यहोवा द्वारा नील नदी के बदले जाने के बाद सात दिन बीत गये।

8 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जाओ और उससे कहो कि यहोवा यह कहता है, ‘मेरे आदमियों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! यदि फिरौन उनको जाने से रोकता है तो मैं मिश्र को मेंढकों से भर दूँगा। 3 नील नदी मेंढकों से भर जाएगी। वे नदी से निकलेंगे और तुम्हारे घरों में घुसेंगे। वे तुम्हारे सोने के कमरों और तुम्हारे बिछौनों में होंगे। मेंढक तुम्हारे अधिकारियों के घरों में, रसोई में और तुम्हारे पानी के घड़ों में होंगे। 4 मेंढक पूरी तरह तुम्हारे ऊपर, तुम्हारे लोगों के ऊपर और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर होंगे।”

5 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून से कहो कि वह अपने हाथ की लाठी को नहरों, नदियों और झीलों के ऊपर उठाए और मेंढक बाहर निकलकर मिश्र देश में भर जाएँगे।”

6 तब हारून ने मिश्र देश में जहाँ भी जल था उसके ऊपर हाथ उठाया और मेंढक पानी से बाहर आने आरम्भ हो गए और पूरे मिश्र को ढक दिया।

7 जादूगरों ने भी वैसा ही किया। वे भी मिश्र देश में मेंढक ले आए।

8 फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फिरौन ने कहा, “यहोवा से कहो कि वे मुझ पर तथा मेरे लोगों पर से मेंढकों को हटाएँ। तब मैं लोगों को यहोवा के लिए बलि चढ़ाने को जाने दूँगा।”

9 मूसा ने फिरौन से कहा, “मुझे यह बताएँ कि आप कब चाहते हैं कि मेंढक चले जाएँ। मैं आपके लिए,

आपके लोगों के लिए तथा आपके अधिकारियों के लिए प्रार्थना करूँगा। तब मेंढक आपको और आपके घरों को छोड़ देंगे। मेंढक केवल नदी में रह जाएँगे। आप कब चाहते हैं कि मेंढक चले जाएँ?”

10 फिरौन ने कहा, “कल”

मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस प्रकार आप जान जायेंगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा के समान कोई अन्य देवता नहीं है। 11 मेंढक आपको, आपके घर को, आपके अधिकारियों को और आपके लोगों को छोड़ देंगे। मेंढक केवल नदी में रह जाएँगे।”

12 मूसा और हारून फिरौन से विदा हुए। मूसा ने उन मेंढकों के लिए, जिन्हें फिरौन के विरुद्ध यहोवा ने भेजा था, यहोवा को पुकारा। 13 और यहोवा ने वह किया जो मूसा ने कहा था। मेंढक घरों में, घर के आँगनों में और खेतों में मर गए। 14 वे सड़ने लगे और पूरा देश दुर्गन्ध से भर गया। 15 जब फिरौन ने देखा कि वे मेंढकों से मुक्त हो गए हैं तो वह फिर हठी हो गया। फिरौन ने वैसा नहीं किया जैसा मूसा और हारून ने उससे करने को कहा था। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

### जूँ

16 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “हारून से कहो कि वह अपनी लाठी उठाए और जमीन पर की धूल पर मारे। मिश्र में सर्वत्र धूल जूँ बन जाएगी।”

17 उन्होंने यह किया। हारून ने अपने हाथ की लाठी को उठाया और जमीन पर धूल में मारा मिश्र में सर्वत्र धूल जूँ बन गई। जूँ जानवरों और आदमियों पर छा गई। 18 जादूगरों ने अपने जादूओं का उपयोग किया और वैसा ही करना चाहा। किन्तु जादूगर धूल से जूँ न बना सके। जूँ जानवरों और आदमियों पर छाई रही। 19 इसलिए जादूगरों ने फिरौन से कहा कि परमेश्वर की शक्ति ने ही यह किया है। किन्तु फिरौन ने उनकी सुनने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

### मक्खियाँ

20 यहोवा ने मूसा से कहा, “सबरे उठो और फिरौन के पास जाओ। फिरौन नदी पर जाएँगा। उससे कहो कि यहोवा कह रहा है, ‘मेरे लोगों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! यदि तुम मेरे लोगों को नहीं जाने दोगे तो तुम्हारे घरों में मक्खियाँ आएँगीं। मक्खियाँ तुम्हारे और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर छा जाएँगीं। मिश्र के घर मक्खियों से भर जाएँगे। मक्खियाँ पूरी जमीन पर छा जाएँगीं।”

22 “किन्तु मैं इब्राएल के लोगों के साथ वैसा ही बरताव नहीं करूँगा जैसा मिश्री लोगों के साथ करूँगा। जहाँ गोशेन में मेरे लोग रहते हैं वहाँ कोई मक्खी नहीं



होगी। इस प्रकार तुम जानोगे कि मैं यहोवा, इस देश में हूँ। 23अतः मैं कल अपने लोगों के साथ तुम्हारे लोगों से भिन्न बरताव करूँगा। यही मेरा प्रमाण होगा।”

24अतः यहोवा ने वही किया, उसने जो कहा। झुण्ड की झुण्ड मक्खियाँ मिश्र में आईं। मक्खियाँ फिरौन के घर और उसके सभी अधिकारियों के घर में भरी थीं। मक्खियाँ पूरे मिश्र देश में भरी थीं। मक्खियाँ देश को नष्ट कर रही थीं। 25इसलिए फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फिरौन ने कहा, “तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को इसी देश में बलियाँ भेंट करो।”

26किन्तु मूसा ने कहा, “वैसा करना ठीक नहीं होगा। मिश्री सोचते हैं कि हमारे परमेश्वर यहोवा को जानवरों को मार कर बलि चढ़ाना एक भयंकर बात है। इसलिए यदि हम लोग यहाँ ऐसा करते तो मिश्री हमें देखेंगे वे हम लोगों पर पत्थर फेंकेंगे और हमें मार डालेंगे। 27हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में जाने दो और हमें अपने यहोवा परमेश्वर को बलि चढ़ाने दो। यही बात है जो यहोवा ने हम लोगों से करने को कहा है।”

28इसलिए फिरौन ने कहा, “मैं तुम लोगों को जाने दूँगा और मरुभूमि में तुम लोगों के यहोवा परमेश्वर को बलियाँ भेंट करने दूँगा। किन्तु तुम लोगों को ज्यादा दूर नहीं जाना होगा। अब तुम जाओ और मेरे लिए प्रार्थना करो।”

29मूसा ने कहा, “देखो, मैं जाऊँगा और यहोवा से प्रार्थना करूँगा कि कल वे तुम से, तुम्हारे लोगों से और तुम्हारे अधिकारियों से मक्खियों को हटा लें। किन्तु तुम लोग यहोवा को बलियाँ भेंट करने से मत रोको।”

30इसलिए मूसा फिरौन के पास से गया और यहोवा से प्रार्थना की 31और यहोवा ने यह किया जो मूसा ने कहा। यहोवा ने मक्खियों को फिरौन, उसके अधिकारियों और उसके लोगों से हटा लिया। कोई मक्खी नहीं रह गई। 32किन्तु फिरौन फिर हठी हो गया और उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

### खेतों के जानवरों को बीमारियाँ

9 तब यहोवा ने मूसा से कहा फिरौन के पास जाओ और उससे कहो: “हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मेरी उपासना के लिए मेरे लोगों को जाने दो!’ 2यदि तुम उन्हें रोकते रहे और उनका जाना मना करते रहे तब यहोवा अपनी शक्ति का उपयोग तुम्हारे खेत के जानवरों के विरुद्ध करेगा। यहोवा तुम्हारे सभी घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय, बैल, बकरियों और भेड़ों को भयंकर बीमारियों का शिकार बना देगा। 4यहोवा इज्राएल के जानवरों के साथ मिश्र के जानवरों से भिन्न बरताव करेगा। इज्राएल के लोगों का कोई जानवर नहीं मरेगा। 5यहोवा ने इसके घटित होने का समय निश्चित कर दिया है। कल यहोवा इस देश में इसे घटित होने देगा।”

6अगली सुबह मिश्र के सभी खेत के जानवर मर गए। किन्तु इज्राएल के लोगों के जानवरों में से कोई नहीं मरा। 7फिरौन ने लोगों को यह देखने भेजा कि क्या इज्राएल के लोगों का कोई जानवर मरा या इज्राएल के लोगों का कोई जानवर नहीं मरा था। फिरौन हठ पकड़े रहा। उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

### फोड़े फुंसियाँ

8यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, “अपनी अंजलियों में भट्टी की राख भरो। और मूसा तुम फिरौन के सामने राख को हवा में फेंका। 9यह धूल बन जाएगी और पूरे मिश्र देश में फैल जाएगी। जैसे ही धूल आदमी या जानवर पर मिश्र में पड़ेगी, चमड़े पर फोड़े फुंसी (घाव) फूट निकलेंगी।”

10इसलिए मूसा और हारून ने भट्टी से राख ली। तब वे गए और फिरौन के सामने खड़े हो गए। उन्होंने राख को हवा में फेंका और लोगों और जानवरों को फोड़े होने लगे। 11जादूगर मूसा को ऐसा करने से न रोक सके, क्योंकि जादूगरों को भी फोड़े हो गए थे। सारे मिश्र में ऐसा ही हुआ। 12किन्तु यहोवा ने फिरौन को हठी बनाए रखा। इसलिए फिरौन ने मूसा और हारून को सुनने से मना कर दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

### ओले

13तब यहोवा ने मूसा से कहा, “सवेरे उठो और फिरौन के पास जाओ। उससे कहो कि हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘मेरे लोगों को मेरी उपासना के लिए जाने दो। 14यदि तुम यह नहीं करोगे तो मैं तुम्हें, तुम्हारे अधिकारियों और तुम्हारे लोगों के विरुद्ध पूरी शक्ति का प्रयोग करूँगा। तब तुम जानोगे कि मेरे समान दुनिया में अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। 15मैं अपनी शक्ति का प्रयोग कर सकता हूँ तथा मैं ऐसी बीमारी फैला सकता हूँ जो तुम्हें और तुम्हारे लोगों को धरती से समाप्त कर देगी। 16किन्तु मैंने तुम्हें यहाँ किसी कारणवश रखा है। मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए रखा है कि तुम मेरी शक्ति को देख सको। तब सारे संसार के लोग मेरे बारे में जान जाएंगे। 17तुम अब भी मेरे लोगों के विरुद्ध हो। तुम उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक नहीं जाने दे रहे हो। 18इसलिए कल मैं इसी समय भयंकर ओला बारिश उत्पन्न करूँगा। जब से मिश्र राष्ट्र बना तब से मिश्र में ऐसी ओला बारिश पहले कभी नहीं आई होगी। 19अतः अपने जानवरों को सुरक्षित जगह में रखना। जो कुछ तुम्हारा खेतों में हो उसे सुरक्षित स्थानों में अवश्य रख लेना। क्यों? क्योंकि कोई भी व्यक्ति या जानवर जो मैदानों में होगा, मारा जाएगा। जो कुछ तुम्हारे घरों के भीतर नहीं रखा होगा उस सब पर ओले गिरेंगे।”

20फ़िरौन के कुछ अधिकारियों ने यहोवा के सन्देश पर ध्यान दिया। उन लोगों ने जल्दी-जल्दी अपने जानवरों और दासों को घरों में कर लिया। 21किन्तु अन्य लोगों ने यहोवा के सन्देश की उपेक्षा की। उन लोगों के वे दास और जानवर नष्ट हो गए जो बाहर मैदानों में थे।

22यहोवा ने मूसा से कहा, “अपनी भुजाएं हवा में उठाओ और मिश्र पर ओले गिरने आरम्भ हो जाएंगे। ओले पूरे मिश्र के सभी खेतों में लोगों, जानवरों और पेड़-पौधों पर गिरेंगे।”

23अतः मूसा ने अपनी लाठी को हवा में उठाया और यहोवा ने गर्जन और बिजलियां भेजे, तथा ज़मीन पर ओले बरसाये। ओले पूरे मिश्र पर पड़े। 24ओले पड़ रहे थे, और ओलों के साथ बिजली चमक रही थी। जब से मिश्र राष्ट्र बना था तब से मिश्र को हानि पहुँचाने वाले ओले वृष्टि में यह सबसे भयंकर थे। 25आँधी ने मिश्र के खेतों में जो कुछ था उसे नष्ट कर दिया। ओलों ने आदमियों, जानवरों और पेड़-पौधों को नष्ट कर दिया। ओले ने खेतों में सारे पेड़ों को भी तोड़ दिया। 26गोशेन प्रदेश ही, जहाँ इज़्राएल के लोग रहते थे, ऐसी जगह थी जहाँ ओले नहीं पड़े।

27फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने उनसे कहा, “इस बार मैंने पाप किया है। यहोवा सच्चा है, और मैं तथा मेरे लोग दुष्ट हैं। 28ओले और परमेश्वर की गरजती आवाज़ अत्याधिक हैं! परमेश्वर से तुफान को रोकने को कहो। मैं तुम लोगों को जाने दूँगा। तुम लोगों को यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।”

29मूसा ने फ़िरौन से कहा, “जब मैं नगर को छोड़ूँगा तब मैं प्रार्थना में अपनी भुजाओं को यहोवा के सामने उठाऊँगा और गर्जन तथा ओले रूक जाएंगे। तब तुम जानोगे कि पृथ्वी यहोवा ही की है। 30किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम और तुम्हारे अधिकारी अब भी यहोवा से नहीं डरते हैं और न ही उसका सम्मान करते हैं।”

31जूट में दाने पड़ चुके थे। और जौ पहले ही फट चुका था। इसलिए ये फ़सलें नष्ट हो गईं। 32गेहूँ और कठिया नामक गेहूँ अन्य अन्नों से बाद में पकते हैं अतः ये फ़सलें नष्ट नहीं हुई थीं।

33मूसा ने फ़िरौन को छोड़ा और नगर के बाहर गया। उसने यहोवा के सामने अपनी भुजाएं फैलाई और गरज

तथा ओले बन्द हो गये। वर्षा भी धरती पर होना बन्द हो गई। 34जब फ़िरौन ने देखा कि वर्षा, ओले और गर्जन बन्द हो गये तो उसने फिर गलत काम किया। वह और उसके अधिकारी फिर हठ पकड़े रहे। 35फ़िरौन ने इज़्राएल के लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक जाने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था।

## टिड्डियाँ

10 यहोवा ने मूसा से कहा, “फ़िरौन के यहाँ जाओ। मैंने उसे और उसके अधिकारियों को हठी बना दिया है। मैंने यह इसलिए किया है कि मैं उन्हें अपने शक्तिशाली चमत्कार दिखा सकूँ। मैंने इसे इसलिए भी किया कि तुम अपने पुत्र-पुत्रियों तथा पौत्र-पौत्रियों से उन चमत्कारों और अद्भुत बातों को बता सको जो मैंने मिश्र में किया है। तब तुम सभी जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।”

3इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, “हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, ‘तुम मेरे आदेशों का पालन करने से कब तक इन्कार करोगे? मेरे लोगों को मेरी उपासना करने के लिए जाने दो! यदि तुम मेरे लोगों को जाने से मना करते हो तो मैं कल तुम्हारे देश में टिड्डियों को लाऊँगा। 5टिड्डियाँ पूरी ज़मीन को ढक लेंगी। टिड्डियों की संख्या इतनी अधिक होगी कि तुम ज़मीन नहीं देख सकोगे। जो कोई चीज़ ओले भरी आँधी से बच गई है उसे टिड्डियाँ खा जाएंगी। टिड्डियाँ मैदानों में पेड़ों की सारी पत्तियाँ खा डालेंगी। 6टिड्डियाँ तुम्हारे सभी घरों, तुम्हारे अधिकारियों के सभी घरों और मिश्र के सभी घरों में भर जाएंगी। जितनी टिड्डियाँ तुम्हारे बाप-दादों ने कभी देखी होंगी उससे भी अधिक टिड्डियाँ यहाँ होंगी। जब से लोग मिश्र में, रहने लगे तब से जब कभी जितनी टिड्डियाँ हुई होंगी उससे अधिक टिड्डियाँ होंगी।” तब मूसा मुड़ा और उसने फ़िरौन को छोड़ दिया।

7फ़िरौन के अधिकारियों ने उससे पूछा, “हम लोग कब तक इन लोगों के जाल में फँसे रहेंगे। लोगों को उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना करने जाने दें। यदि आप उन्हें नहीं जाने देंगे तो आपके जानने से पहले मिश्र नष्ट हो जाएगा। 8अतः फ़िरौन के अधिकारियों ने मूसा और हारून को उसके पास वापस बुलाने को कहा। फ़िरौन ने उनसे कहा, “जाओ और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो। किन्तु मुझे बताओ कि सचमुच कौन-कौन जा रहा है?” 9मूसा ने उत्तर दिया, “हमारे युवक और बूढ़े लोग जाएंगे और हम लोग अपने साथ अपने पुत्रों और पुत्रियों, तथा भेड़ों और पशुओं को भी ले जाएंगे। हम सभी जाएंगे क्योंकि यह हमारे लिये हम लोगों के यहोवा का त्योंहार है।”

10फ़िरौन ने उनसे कहा, “इससे पहले कि मैं तुम्हें और तुम्हारे सभी बच्चों को मिश्र छोड़कर जाने दूँ यहोवा को वास्तव में तुम्हारे साथ होना होगा। देखो तुम लोग एक बहुत बुरी योजना बना रहे हो। 11केवल पुरुष जा सकते हैं और यहोवा की उपासना कर सकते हैं। तुमने प्रारम्भ में यही माँग की थी। किन्तु तुम्हारे सारे लोग नहीं जा सकते।” तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को भेज दिया।

12यहोवा ने मूसा से कहा, "मिन्न की भूमि के ऊपर अपना हाथ उठाओ और टिड्डियाँ आ जाएंगी। टिड्डियाँ मिन्न की सारी भूमि पर फैल जाएंगी। टिड्डियाँ ओलों से बचे सभी पेड़-पौधों को खा जाएंगी।"

13मूसा ने अपनी लाठी को मिन्न देश के ऊपर उठाया और यहोवा ने पूर्व से प्रबल आँधी उठाई। आँधी उस पूरे दिन और रात चलती रही। जब सवेरा हुआ, आँधी ने मिन्न देश में टिड्डियों को ला दिया था। 14टिड्डियाँ मिन्न देश में उड़कर आईं और भूमि पर बैठ गईं। मिन्न में कभी जितनी टिड्डियाँ हुई थीं उनसे अधिक टिड्डियाँ हुईं और उतनी संख्या में वहाँ टिड्डियाँ फिर कभी नहीं होंगी। 15टिड्डियों ने जमीन को ढक लिया और पूरे देश में अँधेरा छा गया। टिड्डियों ने उन सभी पौधों और पेड़ों के हर फल को, जो ओले से नष्ट नहीं हुआ था, खा डाला। मिन्न में कहीं भी किसी पेड़ या पौधे पर कोई पत्ती नहीं रह गई।

16फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी बुलवाया। फ़िरौन ने कहा, "मैंने तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। 17इस समय मेरे पाप को अब क्षमा करो। अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो कि इस 'मृत्यु' (टिड्डियों) को मुझ से दूर करे।"

18मूसा फ़िरौन को छोड़ कर चला गया और उसने यहोवा से प्रार्थना की। 19इसलिए यहोवा ने हवा का रूख बदल दिया। यहोवा ने पश्चिम से तेज़ आँधी उठाई और उसने टिड्डियों को दूर लाल सागर में उड़ा दिया। एक भी टिड्डी मिन्न में नहीं बची। 20किन्तु यहोवा ने फ़िरौन को फिर हठी बनाया और फ़िरौन ने इज़्राएल के लोगों को जाने नहीं दिया।

### अंधकार

21तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी बाहों को आकाश में ऊपर उठाओ और अंधकार मिन्न को ढक लेगा। यह अंधकार इतना सघन होगा कि तुम मानो उसे महसूस कर सकोगे।"

22अतः मूसा ने हवा में बाहें उठाई और घोर अन्धकार ने मिन्न को ढक लिया। मिन्न में तीन दिन तक अंधकार रहा। 23कोई भी किसी अन्य को नहीं देख सकता था और तीन दिन तक कोई अपनी जगह से नहीं उठ सका। किन्तु उन सभी जगहों पर जहाँ इज़्राएल के लोग रहते थे, प्रकाश था।

24फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "जाओ और यहोवा की उपासना करो! तुम अपने साथ अपने बच्चों को ले जा सकते हो। केवल अपनी भेड़ें और पशु यहाँ छोड़ देना।"

25मूसा ने कहा, "हम लोग केवल अपनी भेड़ें और पशु ही अपने साथ नहीं ले जाएंगे बल्कि जब हम लोग जाएंगे तुम हम लोगों को भेंट और बलि भी दोगे और

हम लोग इन बलियों का अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना के रूप में प्रयोग करेंगे। 26हम लोग अपने जानवर अपने साथ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना के लिए ले जाएंगे। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। अभी तक हम नहीं जानते कि यहोवा की उपासना के लिए किन चीज़ों की सचमुच आवश्यकता पड़ेगी। यह हम लोग तब जान सकेंगे जब हम लोग वहाँ पहुँचेंगे जहाँ हम जा रहे हैं। अतः ये सभी चीज़ें अवश्य ही हम अपने साथ ले जाएंगे।"

27यहोवा ने फ़िरौन को फिर हठी बनाया। इसलिए फ़िरौन ने उनको जाने से मना कर दिया। 28तब फ़िरौन ने मूसा से कहा, "मुझ से दूर हो जाओ! मैं नहीं चाहता कि तुम यहाँ फिर आओ! इसके बाद यदि तुम मुझसे मिलने आओगे तो मारे जाओगे!"

29तब मूसा ने फ़िरौन से कहा, "तुम जो कहते हो, सही है। मैं तुमसे मिलने फिर कभी नहीं आऊँगा!"

### पहलौतों की मृत्यु

11 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन और मिन्न के विरुद्ध मैं एक और विपत्ति लाऊँगा इसके बाद वह तुम लोगों को मिन्न से भेज देगा। वस्तुतः वह तुम लोगों को यह देश छोड़ने को विवश करेगा। 2तुम इज़्राएल के लोगों को यह सन्देश अवश्य देना: 'तुम सभी स्त्री और पुरुष अपने पड़ोसियों से चाँदी और सोने की बनी चीज़ें माँगना। यहोवा मिश्रियों को तुम लोगों पर कृपालु बनाएगा। मिश्री लोग, यहाँ तक कि फ़िरौन के अधिकारी भी पहले से मूसा को महान पुरुष समझते हैं।"

4मूसा ने लोगों से कहा, "यहोवा कहता है, 'आज आधी रात के समय, मैं मिन्न से होकर गुजरूँगा, 5और मिन्न का हर एक पहलौटे पुत्र मिन्न के शासक फ़िरौन के पहलौटे पुत्र से लेकर चक्की चलाने वाली दासी तक का पहलौटा पुत्र मर जाएगा। पहलौटे नर जानवर भी मरेंगे। 6मिन्न की समूची धरती पर रोना-पीटना मचेगा। यह रोना-पीटना किसी भी गुजरे समय के रोने-पीटने से अधिक बुरा होगा और यह भविष्य के किसी भी रोने-पीटने के समय से अधिक बुरा होगा। 7किन्तु इज़्राएल के किसी व्यक्ति को कोई चोट नहीं पहुँचेगी। यहाँ तक कि उन पर कोई कृता तक नहीं भौँकेगा। इज़्राएल के लोगों के किसी व्यक्ति या किसी जानवर को कोई चोट नहीं पहुँचेगी। इस प्रकार तुम लोग जानोगे कि मैंने मिश्रियों के साथ इज़्राएल वालों से भिन्न व्यवहार किया है।

8तब ये सभी तुम लोगों के दास मिश्री झुक कर मुझे प्रणाम करेंगे और मेरी उपासना करेंगे। वे कहेंगे, 'जाओ, और अपने सभी लोगों को अपने साथ ले जाओ।' तब मैं फ़िरौन को क्रोध में छोड़ दूँगा।"

शुभ यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन ने तुम्हारी बात नहीं सुनी। क्यों? इसलिए कि मैं अपनी महान शक्ति मिश्र में दिखा सकूँ।" 10<sup>थी</sup> कारण था कि मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए। और यही कारण है कि यहोवा ने फ़िरौन को इतना हठी बनाया कि उसने इम्राएल के लोगों को अपना देश छोड़ने नहीं दिया।

### फसह पर्व के निर्देश

**12** मूसा और हारून जब मिश्र में ही थे, यहोवा ने उनसे कहा। 2<sup>यह</sup> महीना तुम लोगों के लिए वर्ष का पहला महीना होगा। 3<sup>इम्राएल</sup> की पूरी जाति के लिए यह आदेश है: इस महीने के दसवें दिन हर एक व्यक्ति अपने परिवार के लोगों के लिए एक मेमना अवश्य प्राप्त करेगा। 4<sup>यदि</sup> पूरा मेमना खा सकने वाले पर्याप्त आदमी अपने परिवारों में न हों तो उस भोजन में सम्मिलित होने के लिए अपने कुछ पड़ोसियों को निमन्त्रित करना चाहिए। खाने के लिए हर एक को पर्याप्त मेमना होना चाहिए। 5<sup>एक</sup> वर्ष का यह नर मेमना दोषरहित होना चाहिए। यह जानवर या तो एक भेड़ का बच्चा हो सकता है या बकरे का बच्चा। 6<sup>तुम्हें</sup> इस जानवर को महीने के चौदहवें दिन तक सावधानी के साथ रखना चाहिए। उस दिन इम्राएल जाति के सभी लोग सन्ध्या काल में इन जानवरों को मारेंगे। 7<sup>इन</sup> जानवरों का खून तुम्हें इकट्ठा करना चाहिए। कुछ खून उन घरों के दरवाजों की चौखटों के ऊपरी सिरे तथा दोनों पटों पर लगाना चाहिए जिन घरों में लोग यह भोजन करें।

8<sup>"इस</sup> रात को तुम मेमने को अवश्य भून लेना और उसका माँस खा जाना। तुम्हें कड़वी जड़ी-बूटियों और अखमीरी रोटियाँ भी खानी चाहिए। 9<sup>तुम्हें</sup> मेमने को पानी में उबालना नहीं चाहिए। तुम्हें पूरे मेमने को आग पर भूनना चाहिए। इस दशा में भी मेमने का सिर, उसके पैर तथा उसका भीतरी भाग ठीक बना रहना चाहिए। 10<sup>उसी</sup> रात को तुम्हें सारा माँस अवश्य खा लेना चाहिए। यदि थोड़ा माँस सवेरे तक बच जाये तो उसे आग में अवश्य ही जला देना चाहिए।

11<sup>"जब</sup> तुम भोजन करो तो ऐसे वस्त्रों को पहनो जैसे तुम लोग यात्रा पर जा रहे हो तुम लोगों के लबादे तुम्हारी पेटियों में कसे होने चाहिए। तुम लोग अपने जूते पहने रहना और अपनी यात्रा की छड़ी को अपने हाथों में रखना। तुम लोगों को शीघ्रता से भोजन कर लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि यह यहोवा का फसह है वह समय जब यहोवा ने अपने लोगों की रक्षा की और उन्हें शीघ्रता से मिश्र के बाहर ले गया।

12<sup>"आज</sup> रात मैं मिश्र से होकर गुजरूँगा और मिश्र में प्रत्येक पहलौटे पुत्र को मार डालूँगा। मैं सभी पहलौटे

जानवरों और मनुष्यों को मार डालूँगा। मैं मिश्र के सभी देवताओं को दण्ड दूँगा और दिखा दूँगा कि मैं यहोवा हूँ। 13<sup>किन्तु</sup> तुम लोगों के घरों पर लगा हुआ खून एक विशेष चिन्ह होगा। जब मैं खून देखूँगा, तो तुम लोगों के घरों को छोड़ता हुआ गुजर जाऊँगा।\* मैं मिश्र के लोगों के लिए हानिकारक चीजें उत्पन्न करूँगा। किन्तु उन बुरी बीमारियों में से कोई भी तुम लोगों को हानि नहीं पहुँचाएगी।

14<sup>"सो</sup> तुम लोग आज की इस रात को सदा याद रखोगे, तुम लोगों के लिए यह एक विशेष पवित्र पर्व होगा। तुम्हारे वंशज सदा इस पवित्र पर्व को यहोवा की भक्ति किया करेंगे। 15<sup>इस</sup> पवित्र पर्व पर तुम लोग अखमीरी आटे की रोटियाँ सात दिनों तक खाओगे। इस पवित्र पर्व के आने पर तुम लोग पहले दिन अपने घरों से सारे खमीर को निकाल बाहर करोगे। इस पवित्र पर्व के पूरे सात दिन तक किसी को भी खमीर नहीं खाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति खमीर खाए तो उसे तुम इम्राएल के अन्य व्यक्तियों से निश्चय ही अलग कर देना। 16<sup>इस</sup> पवित्र पर्व के प्रथम और अन्तिम दिनों में धर्म सभा होगी। इन दिनों तुम्हें कोई भी काम नहीं करना होगा। इन दिनों केवल एक काम जो किया जा सकता, वह है अपना भोजन तैयार करना। 17<sup>तुम</sup> लोगों को अवश्य अखमीरी रोटीका पवित्र पर्व याद रखना होगा। क्यों? क्योंकि इस दिन ही मैंने तुम्हारे लोगों के सभी वर्गों को मिश्र से निकाला। अतः तुम लोगों के सभी वंशजों को यह दिन याद रखना ही होगा। यह नियम ऐसा है जो सदा रहेगा। 18<sup>इसलिए</sup> प्रथम महीने निसन के चौदहवें दिन की सन्ध्या से तुम लोग अखमीरी रोटी खाना आरम्भ करोगे। उसी महीने के इक्कीसवें दिन की सन्ध्या तक तुम ऐसी रोटी खाओगे। 19<sup>सात</sup> दिन तक तुम लोगों के घरों में कोई खमीर नहीं होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति चाहे वह इम्राएल का नागरिक हो या विदेशी, जो इस समय खमीर खाएगा अन्य इम्राएलियों से अवश्य अलग कर दिया जाएगा। 20<sup>इस</sup> पवित्र पर्व में तुम लोगों को खमीर नहीं खाना चाहिए। तुम जहाँ भी रहो अखमीरी रोटी ही खाना।"

21<sup>इसलिए</sup> मूसा ने सभी बुजुर्गों (नेताओं) को एक स्थान पर बुलाया। मूसा ने उनसे कहा, "अपने परिवारों के लिए मेमने प्राप्त करो। फसह पर्व के लिए मेमने को मारो। 22<sup>जुफा</sup> \* के गुच्छों को लो और खून से भरे प्यालों में उन्हें डुबाओ। खून से चौखटों के दोनों पटों और सिरों को रंग दो। कोई भी व्यक्ति सवेरा होने से

गुजर जाऊँगा या "रक्षा करूँगा।"

जुफा लगभग 3 फीट ऊँचे तनेवाला पौधा। इसकी पत्तियाँ और शाखाएँ केशों की तरह होती हैं, जिससे उनका उपयोग कूची की तरह हो सके।

पहले अपना घर न छोड़े। 23 उस समय जब यहोवा पहलौटे सन्तानों को मारने के लिए मिश्र से होकर जाएगा तो वह चौखट के दोनों पटों और सिरों पर खून देखेगा तब यहोवा उस घर की रक्षा करेगा। यहोवा नाश करने वाले को तुम्हारे घरों के भीतर आने और तुम लोगों को चोट नहीं पहुँचाने देगा। 24 तुम लोग इस आदेश को अवश्य याद रखना। यह नियम तुम लोगों तथा तुम लोगों के वंशजों के निमित्त सदा के लिए है। 25 तुम लोगों को यह कार्य तब भी याद रखना होगा जब तुम लोग उस देश में पहुँचोगे जो यहोवा तुम लोगों को देगा। 26 जब तुम लोगों के बच्चे तुम से पूछेंगे, 'हम लोग यह त्योहार क्यों मनाते हैं?' 27 तो तुम लोग कहोगे, 'यह फसह पर्व यहोवा की भक्ति के लिए है। क्यों? क्योंकि जब हम लोग मिश्र में थे तब यहोवा इम्राएल के घरों से होकर गुजरा था। यहोवा ने मिश्रियों को मार डाला, किन्तु उसने हम लोगों के घरों में लोगों को बचाया। इसलिए लोग अब यहोवा को झुककर प्रणाम करते हैं तथा उपासना करते हैं।'"

28 यहोवा ने यह आदेश मूसा और हारून को दिया था। इसलिए इम्राएल के लोगों ने वही किया जो यहोवा का आदेश था।

29 आधी रात को यहोवा ने मिश्र के सभी पहलौटे पुत्रों, फिरौन के पहलौटे पुत्र (जो मिश्र का शासक था) से लेकर बन्दीगृह में बैठे कैदी के पुत्र तक सभी को मार डाला। पहलौटे जानवर भी मर गए। 30 मिश्र में उस रात को हर घर में कोई न कोई मरा। फिरौन, उसके अधिकारी और मिश्र के सभी लोग जोर से रोने चिल्लाने लगे।

### इम्राएलियों द्वारा मिश्र को छोड़ना

31 इसलिए उस रात फिरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फिरौन ने उनसे कहा, "तैयार हो जाओ और हमारे लोगों को छोड़ कर चले जाओ। तुम और तुम्हारे लोग वैसा ही कर सकते हैं जैसा तुमने कहा है। जाओ और अपने यहोवा की उपासना करो। 32 और तुम लोग जैसा तुमने कहा है कि तुम चाहते हो, अपनी भेड़ें और मवेशी अपने साथ ले जा सकते हो, जाओ! और मुझे भी आशीष दो!" 33 मिश्र के लोगों ने भी उनसे शीघ्रता से जाने के लिए कहा। क्यों? क्योंकि उन्होंने कहा, "यदि तुम लोग नहीं जाते हो हम सभी मर जाएंगे।"

34 इम्राएल के लोगों के पास इतना समय न रहा कि वे अपनी रोटी में खमीर डालें। उन्होंने गुँधे आटे की परतों को अपने कपड़ों में लपेटा और अपने कंधों पर रख कर ले गए। 35 तब इम्राएल के लोगों ने वही किया जो मूसा ने करने को कहा। वे अपने मिश्री पड़ोसियों के पास गए और उनसे वस्त्र तथा चाँदी और सोने की बनी चीज़ें माँगी। 36 यहोवा ने मिश्रियों को इम्राएल के लोगों

के प्रति दयालु बना दिया। इसलिए उन्होंने अपना धन इम्राएल के लोगों को दे दिया।

37 इम्राएल के लोग रमसिज से सुककॉम गए। वे लगभग छः लाख\* पुरुष थे। इसमें बच्चे सम्मिलित नहीं हैं। 38 उनके साथ अनेक भेड़ें, गाय-बकरियाँ और अन्य पशुधन था। उनके साथ ऐसे अन्य लोग भी यात्रा कर रहे थे। जो इम्राएली नहीं थे, किन्तु वे इम्राएल के लोगों के साथ गए। 39 किन्तु लोगों को रोटी में खमीर डालने का समय न मिला। और उन्होंने अपनी यात्रा के लिए कोई विशेष भोजन नहीं बनाया। इसलिए उन्हें बिना खमीर के ही रोटियाँ बनानी पड़ीं।

40 इम्राएल के लोग मिश्र\* में चार सौ तीस वर्ष तक रहे। 41 चार सौ तीस वर्ष बाद, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना\* ने मिश्र से प्रस्थान किया। 42 वह विशेष रात है जब लोग याद करते हैं कि यहोवा ने क्या किया। इम्राएल के सभी लोग उस रात को सदा याद रखेंगे।

43 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फसह पर्व के नियम ये हैं: कोई विदेशी फसह पर्व में से नहीं खाएगा। 44 किन्तु यदि कोई व्यक्ति दास को खरीदेगा और यदि उसका खतना करेगा तो वह दास उस में से खा सकेगा। 45 किन्तु यदि कोई व्यक्ति केवल तुम लोगों के देश में रहता है या किसी व्यक्ति को तुम्हारे लिए मजदूरी पर रखा गया है तो उस व्यक्ति को उस में से नहीं खाना चाहिए। वह केवल इम्राएल के लोगों के लिए है।

46 प्रत्येक परिवार को घर के भीतर ही भोजन करना चाहिए। कोई भी भोजन घर के बाहर नहीं ले जाना चाहिए। मेमने की किसी हड्डी को न तोड़े। 47 पूरी इम्राएली जाति इस उत्सव को अवश्य मनाए। 48 यदि कोई ऐसा व्यक्ति तुम लोगों के साथ रहता है जो इम्राएल की जाति का सदस्य नहीं है किन्तु वह फसह पर्व में सम्मिलित होना चाहता है तो उसका खतना अवश्य होना चाहिए। तब वह इम्राएल के नागरिक के समान होगा, और वह भोजन में भाग ले सकेगा। किन्तु यदि उस व्यक्ति का खतना नहीं हुआ हो तो वह इस फसह पर्व के भोजन को नहीं खा सकता। 49 ये ही नियम हर एक पर लागू होंगे। नियमों के लागू होने में इस बात का कोई महत्व नहीं होगा कि वह व्यक्ति तुम्हारे देश का नागरिक है या विदेशी है। 50 इसलिए इम्राएल के सभी लोगों ने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा और हारून को दिया था। 51 इस प्रकार यहोवा

छः लाख या "छः सौ परिवारों के समूह" हिब्रू शब्द "सहस्र" उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "परिवार के समूह" होता है।

मिश्र प्राचीन ग्रीक और समरीती अनुवादों में "मिश्र और कनान" है। इससे पता चलता है कि वे लगभग इब्राहीम के समय से वर्षों की गणना कर रहे थे, यूसुफ के समय से नहीं। देखें उत्पत्ति 15:12-16 और गलतियों 3:17

यहोवा की सारी सेना अर्थात् इम्राएल के लोग।

उसी दिन इज्राएल के सभी लोगों को मिश्र से बाहर ले गया। लोगों ने समूहों में प्रस्थान किया।

**13** तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>2</sup>“प्रत्येक पहलौटा इज्राएली लड़का मुझे समर्पित होगा। हर एक स्त्री का पहलौटा नर बच्चा मेरा ही होगा। तुम लोग हर एक नर पहलौटे जानवर को भी मुझे समर्पित करना।”

<sup>3</sup>मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो। तुम लोग मिश्र में दास थे। किन्तु इस दिन यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग किया और तुम लोगों को स्वतन्त्र किया। तुम लोग खमीर के साथ रोटी मत खाना। <sup>4</sup>आज के दिन आबीब के महीने में तुम लोग मिश्र से प्रस्थान कर रहे हो। <sup>5</sup>यहोवा ने तुम लोगों के पूर्वजों से विशेष प्रतिज्ञा की थी। यहोवा ने तुम लोगों को कनानी, हिती, एमोरी, हिब्वी और यवूसी लोगों की धरती देने की प्रतिज्ञा की थी। यहोवा जब तुम लोगों को उस सम्पन्न और सुन्दर देश में पहुँचा दे तब तुम लोग इस दिन को अवश्य याद रखना। तुम लोग हर वर्ष के पहले महीने में इस दिन को उपासना का विशेष दिन रखना।

<sup>6</sup>“सात दिन तक तुम लोग वही रोटी खाना जिसमें खमीर न हो। सातवें दिन एक बड़ी दावत होगी। यह दावत यहोवा के सम्मान का सूचक होगी। <sup>7</sup>अतः सात दिन तक लोगों को खमीर के साथ बनी रोटी खानी नहीं चाहिए। तुम्हारे प्रदेश में किसी भी जगह खमीर की कोई रोटी नहीं होनी चाहिए। <sup>8</sup>इस दिन तुम को अपने बच्चों से कहना चाहिए, ‘हम लोग यह दावत इसलिए कर रहे हैं कि यहोवा ने मुझ को मिश्र से बाहर निकाला।’

<sup>9</sup>“यह पवित्र दिन तुम लोगों को याद रखने में सहायता करेगा अर्थात् तुम लोगों की हाथ पर बंधे धागे \* का काम करेगा। यह पवित्र दिन यहोवा के उपदेशों को याद करने में तुमको सहायता करेगा। तुम्हें यह याद दिलाने में सहायता करेगा कि यहोवा ने तुम लोगों को मिश्र से बाहर निकालने के लिए अपनी महान शक्ति का उपयोग किया। <sup>10</sup>इसलिए हर वर्ष इस दिन को ठीक समय पर याद रखो।

<sup>11</sup>“यहोवा तुम लोगों को उस देश में ले चलेगा जिसे तुम लोगों को देने के लिए उसने प्रतिज्ञा की है। इस समय वहाँ कनानी लोग रहते हैं। किन्तु यहोवा ने तुम से पहले तुम्हारे पूर्वजों से यह प्रतिज्ञा की थी कि वह यह प्रदेश तुम लोगों को देगा। परमेश्वर जब यह प्रदेश तुम को देगा उसके बाद <sup>12</sup>तुम लोग अपने हर एक पहलौटे पुत्र को उसे समर्पित करना याद रखना और हर एक

बंधे धागे शाब्दिक तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह, तुम्हारे ललाट पर एक प्रतीक। यह उस विशेष चीज का संकेत कर सकता है जिसे यहूदी व्यक्ति अपनी भुजाओं और ललाट पर परमेश्वर के नियमों को याद दिलाने के लिए बाँधता है।

पहलौटा नर जानवर यहोवा को अवश्य समर्पित होना चाहिए। <sup>13</sup>हर एक पहलौटा गधा यहोवा से वापस खरीदा जा सकता है। तुम लोग उसके बदले मेमने को अर्पित कर सकते हो और गधे को वापस ले सकते हो। यदि तुम यहोवा से गधे को खरीदना नहीं चाहते तो इसे मार डालो। यह एक बलि होगी तुम उसकी गर्दन अवश्य तोड़ दो। हर एक पहलौटा लड़का यहोवा से पुनः अवश्य खरीद लिया जाना चाहिए।

<sup>14</sup>“भविष्य में तुम्हारे बच्चे पूछेंगे कि तुम यह क्यों करते हो। वे कहेंगे, ‘इस सबका क्या मतलब है?’ और तुम उत्तर दोगे, ‘यहोवा ने हम लोगों को मिश्र से बचाने के लिए महान शक्ति का उपयोग किया। हम लोग वहाँ दास थे। किन्तु यहोवा ने हम लोगों को बाहर निकाला और वह यहाँ लाया। <sup>15</sup>मिश्र में फ़िरौन हठी था। उसने हम लोगों को प्रस्थान नहीं करने दिया। किन्तु यहोवा ने उस देश के सभी पहलौटे नर सन्तानों को मार डाला। (यहोवा ने पहलौटे नर जानवरों और पहलौटे पुत्रों को मार डाला।) इसलिए हम लोग हर एक पहलौटे नर जानवर को यहोवा को समर्पित करते हैं। और यही कारण है कि हम प्रत्येक पहलौटे पुत्रों को फिर यहोवा से खरीदते हैं।’ <sup>16</sup>यह तुम्हारी हाथ पर बँधे धागे की तरह है और यह तुम्हारी आँखों के सामने बँधे चिन्ह की तरह है। यह इसे याद करने में सहायक है कि यहोवा अपनी महान शक्ति से हम लोगों को मिश्र से बाहर लाया।”

### मिश्र से बाहर यात्रा

<sup>17</sup>फ़िरौन ने लोगों को मिश्र छोड़ने के लिये विवश किया। यहोवा ने लोगों को समुद्र के तट की सड़क को नहीं पकड़ने दिया। वह सड़क पलिशती तक का सबसे छोटा रास्ता है, किन्तु यहोवा ने कहा, “यदि लोग उस रास्ते से जाएँगे तो उन्हें लड़ना पड़ेगा। तब वे अपना मन बदल सकते हैं और मिश्र को लौट सकते हैं।” <sup>18</sup>इसलिए यहोवा उन्हें अन्य रास्ते से ले गया। वह लाल सागर की तटीय मरुभूमि से उन्हें ले गया। किन्तु इज्राएल के लोग तब युद्ध के लिए वस्त्र पहने थे जब उन्होंने मिश्र छोड़ा।

### यूसुफ़ की अस्थियों का घर ले जाया जाना

<sup>19</sup>मूसा यूसुफ़ की अस्थियों को अपने साथ ले गया। (मरने के पहले यूसुफ़ ने इज्राएल की सन्तानों से प्रतिज्ञा कराई कि वे यह करेंगे। मरने के पहले यूसुफ़ ने कहा, “जब परमेश्वर तुम लोगों को बचाए, मेरी अस्थियों को मिश्र के बाहर अपने साथ ले जाना याद रखना।”)

### यहोवा का अपने लोगों को ले जाया जाना

<sup>20</sup>इज्राएल के लोगों ने सुक्कोत नगर छोड़ा और एताम में डेरा डाला। एताम मरुभूमि के छोर पर था।

21यहोवा ने रास्ता दिखाया। दिन में यहोवा ने एक बड़े बालक का उपयोग लोगों को ले चलने के लिए किया। और रात में यहोवा ने रास्ता दिखाने के लिए एक ऊँचे अग्नि स्तम्भ का उपयोग किया। यह आग उन्हें प्रकाश देती थी अतः वे रात को भी यात्रा कर सकते थे। 22एक ऊँचे स्तम्भ के रूप में बालक सदा उनके साथ दिन में रहा और रात को अग्नि स्तम्भ सदा उनके साथ रहा।

**14** तब यहोवा ने मूसा से कहा, "लोगों से पीहाहीरोत तक पीछे मुड़कर यात्रा करने को कहो। रात में मिंगदोल और समुद्र के बीच उनसे उठरने को कहो। यह बाल सपोन के करीब है। १फ़िरौन सोचेगा कि इब्राएल के लोग मरुभूमि में भटक गए हैं और वह सोचेगा कि लोगों को कोई स्थान नहीं मिलेगा जहाँ वे जाएँ। 4मैं फ़िरौन की हिम्मत बढ़ाऊँगा ताकि वह तुम लोगों का पीछा करे। किन्तु फ़िरौन और उसकी सेना को हराऊँगा। इससे मुझे गौरव प्राप्त होगा। तब मिश्र के लोग जानेंगे कि मैं ही यहोवा हूँ।" इब्राएल के लोगों ने परमेश्वर का आदेश माना अर्थात् उन्होंने वही किया जो उसने कहा।

### फ़िरौन द्वारा इब्राएलियों का पीछा किया जाना

5जब फ़िरौन को यह सूचना मिली कि इब्राएल के लोग भाग गये हैं तो उसने और उसके अधिकारियों ने उन्हें वहाँ से चले जाने देने का जो वचन दिया था, उसके प्रति अपना मन बदल दिया। फ़िरौन ने कहा, "हमने इब्राएल के लोगों को क्यों जाने दिया? हमने उन्हें भागने क्यों दिया? अब हमारे दास हमारे हाथों से निकल चुके हैं।"

6इसलिए फ़िरौन ने अपने युद्ध रथ को तैयार किया और अपनी सेना को साथ लिया। 7फ़िरौन ने अपने लोगों में से छः सौ सबसे अच्छे आदमियों तथा अपने सभी रथों को लिया। हर एक रथ में एक अधिकारी बैठा था। 8इब्राएल के लोग विजय के उत्साह में अपने शस्त्रों को ऊपर उठाए जा रहे थे किन्तु यहोवा ने मिश्र के राजा फ़िरौन को साहसी बनाया। और फ़िरौन ने इब्राएल के लोगों का पीछा करना शुरू कर दिया।

9मिश्री सेना के पास बहुत से घोड़े, सैनिक, और रथ थे। उन्होंने इब्राएल के लोगों का पीछा किया और उस समय जब वे लाल सागर के तट पर पीहाहीरोत में, बालसपोन के पूर्व में डेरा डाले थे, वे उनके समीप आ गए।

10इब्राएल के लोगों ने फ़िरौन और उसकी सेना को अपनी ओर आते देखा तो लोग बुरी तरह डर गए। उन्होंने सहायता के लिए यहोवा को पुकारा। 11उन्होंने मूसा से कहा, "तुम हम लोगों को मिश्र से बाहर क्यों लाए? तुम हम लोगों को इस मरुभूमि में मरने के लिए क्यों ले आए? हम लोग शान्तिपूर्वक मिश्र में मरते, मिश्र

में बहुत सी कब्रें थीं। 12हम लोगों ने कहा था कि ऐसा होगा। मिश्र में हम लोगों ने कहा था, 'कृपया हम लोगों को कष्ट न दो। हम लोगों को यहीं उठरने और मिश्रियों की सेवा करने दो।' यहाँ आकर मरुभूमि में मरने से अच्छा यह होता कि हम लोग वहीं मिश्रियों के दास बनकर रहते।"

13किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "डरो नहीं! भागो नहीं रुक जाओ! जरा उठरो और देखो कि आज तुम लोगों को यहोवा कैसे बचाता है। आज के बाद तुम लोग इन मिश्रियों को कभी नहीं देखोगे। 14तुम लोगों को शान्त रहने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना है। यहोवा तुम लोगों के लिए लड़ता रहेगा।"

15तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम्हें मुझको पुकारना नहीं पड़ेगा! इब्राएल के लोगों को आगे चलने का आदेश दो। 16अपने हाथ की लाठी को लाल सागर के ऊपर उठाओ और लाल सागर फट जाएगा। तब लोग सूखी भूमि से समुद्र को पार कर सकेंगे। 17मैंने मिश्रियों को साहसी बनाया है। इस प्रकार वे तुम्हारा पीछा करेंगे। किन्तु मैं दिखाऊँगा कि मैं फ़िरौन, उसके सभी घुड़सवारों और रथों से अधिक शक्तिशाली हूँ। 18तब मिश्री समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। जब मैं फ़िरौन, उसके घुड़सवारों और रथों को हराऊँगा वे तब मुझे सम्मान देंगे।"

### यहोवा का मिश्री सेना को हराना

19उस समय यहोवा का दूत लोगों के पीछे गया। (यहोवा का दूत प्रायः लोगों के आगे था और उन्हें ले जा रहा था।) इसलिए बादल का स्तम्भ लोगों के आगे से हट गया और उनके पीछे आ गया। 20इस प्रकार बादल मिश्रियों और इब्राएलियों के बीच खड़ा हुआ। इब्राएल के लोगों के लिए प्रकाश था किन्तु मिश्रियों के लिए अँधेरा। इसलिए मिश्री उस रात इब्राएलियों के अधिक निकट न आ सके।

21मूसा ने अपनी बाहें लाल सागर के ऊपर उठाईं और यहोवा ने पूर्व से तेज आँधी चला दी। आँधी रात भर चलती रही। समुद्र फटा और पुरवायी हवा ने जमीन को सुखा दिया। 22इब्राएल के लोग सूखी जमीन पर चलकर समुद्र के पार गए। उनकी दायीं और बाईं ओर पानी दीवार की तरह खड़ा था। 23तब फ़िरौन के सभी रथों और घुड़सवारों ने समुद्र में उनका पीछा किया। 24बहुत सवरे ही यहोवा ने लम्बे बादल और आग के स्तम्भ पर से मिश्र की सेना को देखा और यहोवा ने उन पर हमला किया और उन्हें हरा दिया।

25रथों के पहिए धंस गए। रथों का नियन्त्रण कठिन हो गया। मिश्री चिल्लाए, "हम लोग यहाँ से निकल चलें! यहोवा हम लोगों के विरुद्ध लड़ रहा है। यहोवा इब्राएल के लोगों के लिए लड़ रहा है।"

26तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने हाथ को समुद्र के ऊपर उठाओ। फिर पानी गिरेगा तथा मिश्री रथों और घुड़सवारों को डूबो देगा।"

27इसलिए ठीक दिन निकलने से पहले मूसा ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर उठाया और पानी अपने उचित तल पर वापस पहुँच गया। मिश्री भागने का प्रयत्न कर रहे थे। किन्तु यहोवा ने मिश्रियों को समुद्र में बहा कर डूबो दिया। 28पानी अपने उचित तल तक लौटा और उसने रथों तथा घुड़सवारों को ढक लिया। फिरौन की पूरी सेना जो इब्राएली लोगों का पीछा कर रही थी, डूबकर नष्ट हो गई। उनमें से कोई भी न बचा।

29किन्तु इब्राएल के लोगों ने सूखी जमीन पर चलकर समुद्र पार किया। उनकी दायीं और बायीं ओर पानी दीवार की तरह खड़ा था। 30इसलिए उस दिन यहोवा ने इब्राएल के लोगों को मिश्रियों से बचाया और इब्राएल के लोगों ने मिश्रियों के शवों को लाल सागर के किनारे देखा। 31इब्राएल के लोगों ने यहोवा की महान शक्ति को देखा जब उसने मिश्रियों को हराया। अतः लोगों ने यहोवा का भय माना और सम्मान किया और उन्होंने यहोवा और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया।

### मूसा का गीत

**15** तब मूसा और इब्राएल के लोग यहोवा के लिए यह गीत गाने लगे:

"मैं यहोवा के लिए गाऊँगा क्योंकि उसने महान काम किये हैं। उसने घोड़ों और सवारों को समुद्र में फेंका है।

2यहोवा ही मेरी शक्ति है। वह हमें बचाता है और मैं गाता हूँ गीत उसकी प्रशंसा के। \* मेरा परमेश्वर यहोवा है और मैं उसकी स्तुति करता हूँ। मेरे पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा है और मैं उसका आदर करता हूँ।

3यहोवा महान योद्धा है। उसका नाम यहोवा है।

4उसने फिरौन के रथ और सैनिकों को समुद्र में फेंक दिया। फिरौन के उत्तम अधिकारी लाल सागर में डूब गए।

5गहरे पानी ने उन्हें ढका। वे चट्टानों की तरह गहरे पानी में डूबे।

6तेरी दायीं भुजा अद्भुत शक्तिशाली है। यहोवा, तेरी दायीं भुजा ने शत्रु को चकनाचूर कर दिया।

7तूने अपनी महामहिमा में नष्ट किया उन्हें जो व्यक्ति तेरे विरुद्ध खड़े हुए। तेरे क्रोध ने उन्हें उस प्रकार नष्ट किया जैसे आग तिनके को जलाती है।

8तूने जिस तेज आँधी को चलाया, उसने जल को ऊँचा उठाया। वह तेज बहता जल ठोस दीवार बना। समुद्र ठोस बन गया अपने गहरे से गहरे भाग तक।

यहोवा ... प्रशंसा के शाब्दिक "यहोवा मेरी शक्ति और स्तुति और वह मेरी मुक्ति बनाता है।"

9शत्रु ने कहा, 'मैं उनका पीछा करूँगा और उनको पकड़ूँगा। मैं उनका सारा धन लूँगा। मैं अपनी तलवार चलाऊँगा और उनसे हर चीज़ लूँगा। मैं अपने हाथों का उपयोग करूँगा और अपने लिए सब कुछ लूँगा।'

10किन्तु तू उन पर टूट पड़ा और उन्हें समुद्र से ढक दिया तूने वे सीसे की तरह डूबे गहरे समुद्र में।

11क्या कोई देवता यहोवा के समान है? नहीं! तेरे समान कोई देवता नहीं, तू है अद्भुत अपनी पवित्रता में! तुझमें है विस्मयजनक शक्ति तू अद्भुत चमत्कार करता है!

12तू अपना दाँया हाथ उठा कर संसार को नष्ट कर सकता था!

13परन्तु तू कृपा कर उन लोगों को ले चला जिन्हें तूने बचाया है। तू अपनी शक्ति से इन लोगों को अपने पवित्र और सुहावने देश को ले जाता है।

14अन्य राष्ट्र इस कथा को सुनेंगे और वे भयभीत होंगे। पलिशती लोग भय से काँपेंगे।

15तब एदोम के मुखिया भय से काँपेंगे मोआब के शक्तिशाली नेता भय से काँपेंगे कनान के व्यक्ति अपना साहस खो देंगे।

16वे लोग आतंक और भय से आक्रांत होंगे जब वे तेरी शक्ति देखेंगे। वे चट्टान के समान शान्त रहेंगे जब तक तुम्हारे लोग गुज़रेंगे जब तक तेरे द्वारा लाए गए लोग गुज़रेंगे।

17यहोवा अपने लोगों को स्वयं ले जाएगा अपने पर्वत पर उस स्थान तक जिसे तूने अपने सिंहासन के लिए बनाया है। हे स्वामी, तू अपना मन्दिर अपने हाथों बनायेगा!

18यहोवा सदा सर्वदा शासन करता रहेगा।"

19हाँ, ये सचमुच हुआ! फिरौन के घोड़े, सवार, और रथ समुद्र में चले गए और यहोवा ने उन्हें समुद्र के पानी से ढक दिया। किन्तु इब्राएल के लोग सूखी जमीन पर चलकर समुद्र के पार चले गए। 20तब हारून की बहन नबिया मरियम ने एक डफ़ली ली। मरियम और स्त्रियों ने नाचना, गाना आरम्भ किया। मरियम की टेक थी,

21"यहोवा के लिए गाओ क्योंकि उसने महान काम किये हैं फेंका उसने घोड़े को और उसके सवार को सागर के बीच में।"

22मूसा इब्राएल के लोगों को लाल सागर से दूर ले जाता रहा, लोग शूर मरुभूमि में पहुँचे। वे तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करते रहे। लोग तनिक भी पानी न पा सके। 23तीन दिन के बाद लोगों ने मारा की यात्रा की। मारा में पानी था, किन्तु पानी इतना कड़वा था कि लोग पी नहीं सकते थे। (यही कारण था कि इस स्थान का नाम मारा पड़ा।)

24लोगों ने मूसा से शिकायत शुरू की। लोगों ने कहा, "अब हम लोग क्या पीएँ?"



25मूसा ने यहोवा को पुकारा। इसलिए यहोवा ने उसे एक पेड़ दिखाया। मूसा ने पेड़ को पानी में डाला। जब उसने ऐसा किया, पानी अच्छा पीने योग्य हो गया।

उस स्थान पर यहोवा ने लोगों की परीक्षा ली और उन्हें एक नियम दिया। यहोवा ने लोगों के विश्वास की जाँच की। 26यहोवा ने कहा, "तुम लोगों को अपने परमेश्वर यहोवा का आदेश अवश्य मानना चाहिए। तुम लोगों को वह करना चाहिए जिसे वह ठीक कहता है। यदि तुम लोग यहोवा के आदेशों और नियमों का पालन करोगे तो तुम लोग मिश्रियों की तरह बीमार नहीं होगे। मैं तुम्हारा यहोवा तुम लोगों को कोई ऐसी बीमारी नहीं दूँगा जैसी मैंने मिश्रियों को दी। मैं यहोवा हूँ। मैं ही वह हूँ जो तुम्हें स्वस्थ बनाता है।"

27तब लोगों ने एलीम तक की यात्रा की। एलीम में पानी के बारह सोते थे। और वहाँ सतर खजूर के पेड़ थे। इसलिए लोगों ने वहाँ पानी के निकट डेरा डाला।

**16** तब लोगों ने एलीम से यात्रा की और सीनै मरुभूमि में पहुँचे। यह स्थान एलीम और सीनै के बीच था। वे इस स्थान पर दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन\* मिश्र छोड़ने के बाद पहुँचे। 2तब इम्राएल के लोगों ने फिर शिकायत करनी शुरू की। उन्होंने मूसा और हारून से मरुभूमि में शिकायत की। 3लोगों ने मूसा और हारून से कहा, "यह हमारे लिये अच्छा होता कि यहोवा ने हम लोगों को मिश्र में मार डाला होता। मिश्र में हम लोगों के पास खाने को बहुत था। हम लोगों के पास वह सारा भोजन था जिसकी हमें आवश्यकता थी। किन्तु अब तुम हमें मरुभूमि में ले आये हो। हम सभी यहाँ भूख से मर जाएंगे।"

4तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं आकाश से भोजन गिराऊँगा। यह भोजन तुम लोगों के खाने के लिए होगा। हर एक दिन लोग बाहर जायें और उस दिन खाने के जरूरत के लिए भोजन इकट्ठा करें। मैं यह इसलिए करूँगा कि मैं देखूँ कि क्या लोग वही करेंगे जो मैं करने को कहूँगा। 5हर एक दिन लोग प्रत्येक दिन के लिए पर्याप्त भोजन इकट्ठा करें। किन्तु शुक्रवार को जब भोजन तैयार करने लगे तो देखें कि वे दो दिन के लिए पर्याप्त भोजन रखते हैं।"\*

6इसलिए मूसा और हारून ने इम्राएल के लोगों से कहा, "आज की रात तुम लोग यहोवा की शक्ति देखोगे। तुम लोग जानोगे कि एक मात्र वह ही ऐसा है जिसने तुम लोगों को मिश्र देश से बचा कर बाहर निकाला। 7कल सवेरे तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे। तुम लोगों ने

**दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन** अर्थात् पन्द्रहवाँ इय्यर। इम्राएल के लोग एक महीने तक यात्रा करते रहे थे।

**शुक्रवार ... है** यह इसलिए हुआ ताकि लोग सब्त (शनिवार) को विश्राम न करें।

यहोवा से शिकायत की। उसने तुम लोगों की सुनी। तुम लोग हम लोगों से शिकायत पर शिकायत कर रहे हो। संभव है कि हम लोग अब कुछ आराम कर सकें।"

8और मूसा ने कहा, "तुम लोगों ने शिकायत की और यहोवा ने तुम लोगों कि शिकायतें सुन ली है। इसलिए रात को यहोवा तुम लोगों को मॉस देगा और हर सवेरे तुम लोग वह सारा भोजन पाओगे, जिसकी तुम को जरूरत है। तुम लोग मुझसे और हारून से शिकायत करते रहे हो। याद रखो तुम लोग मेरे और हारून के विरुद्ध शिकायत नहीं कर रहे हो। तुम लोग यहोवा के विरुद्ध शिकायत कर रहे हो।"

9तब मूसा ने हारून से कहा, "इम्राएल के लोगों को सम्बोधित करो। उनसे कहो, 'यहोवा के सामने इकट्ठे हों क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुनी हैं।'"

10हारून ने इम्राएल के सभी लोगों को सम्बोधित किया। वे सभी एक स्थान पर इकट्ठे थे। जब हारून बातें कर रहा था तभी लोग मुड़े और उन्होंने मरुभूमि की ओर देखा और उन्होंने यहोवा की महिमा को बादल में प्रकट होते देखा।

11यहोवा ने मूसा से कहा, "12मैंने इम्राएल के लोगों की शिकायत सुनी है। इसलिए उनसे मेरी बातें कहो। मैं कहता हूँ, 'आज साँझ को तुम मॉस खाओगे और कल सवेरे तुम लोग भरपेट रोटीयाँ खाओगे, तब तुम लोग जानोगे कि तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास कर सकते हो।'"

13उस रात बटेरें (पक्षियाँ) डेरे के चारों ओर आईं। लोगों ने इन बटेरों को मॉस के लिए पकड़ा। सवेरे डेरे के पास ओस पड़ी होती थी। 14सूरज के निकलने पर ओस पिघल जाती थी किन्तु ओस के पिघलने पर पाले की तह की तरह जमीन पर कुछ रह जाता था। 15इम्राएल के लोगों ने इसे देखा और परस्पर कहा, "वह क्या है?\*" उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा कि वे नहीं जानते थे कि वह क्या चीज़ है। इसलिए मूसा ने उनसे कहा, "यह भोजन है जिसे यहोवा तुम्हें खाने को दे रहा है। 16यहोवा कहता है, 'हर व्यक्ति उतना इकट्ठा करे जितना उसे आवश्यक है। तुम लोगों में से हर एक लगभग दो क्वार्ट\* अपने परिवार के हर व्यक्ति के लिए इकट्ठा करे।'"

17इसलिए इम्राएल के लोगों ने ऐसा ही किया। हर व्यक्ति ने इस भोजन को इकट्ठा किया। कुछ व्यक्तियों ने अन्य लोगों से अधिक इकट्ठा किया। 18उन लोगों ने अपने परिवार के हर एक व्यक्ति को भोजन दिया। जब भोजन नापा गया तो हर एक व्यक्ति के लिए सदा पर्याप्त रहा, किन्तु कभी भी आवश्यकता से अधिक नहीं

"वह क्या है?" हिब्रू में यह "मन्ना" की तरह उच्चारित होता है।

दो क्वार्ट मूल में एक ओमेर।

हुआ। हर व्यक्ति ने ठीक अपने लिए तथा अपने परिवार के खाने के लिए पर्याप्त इकट्ठा किया।

19मूसा ने उनसे कहा, “अगले दिन खाने के लिए वह भोजन मत बचाओ।” 20किन्तु लोगों ने मूसा की बात न मानी। कुछ लोगों ने अपना भोजन बचाया जिसे वे उसे अगले दिन खा सकें। किन्तु जो भोजन बचाया गया था उसमें कीड़े पड़ गए और वह दुर्गन्ध देने लगा। मूसा उन लोगों पर क्रुद्ध हुआ जिन्होंने यह किया था।

21हर सबेरे लोग भोजन इकट्ठा करते थे। हर एक व्यक्ति उतना इकट्ठा करता था जितना वह खा सके। किन्तु जब धूप तेज होती थी भोजन गल जाता था और वह समाप्त हो जाता था।

22शुक्रवार को लोगों ने दुगना भोजन इकट्ठा किया। उन्होंने चार क्वार्ट हर व्यक्ति के लिए इकट्ठा किया। इसलिए लोगों के सभी मुखिया आए और उन्होंने यह बात मूसा से कही।

23मूसा ने उनसे कहा, “यह वैसा ही है जैसा यहोवा ने बताया था। क्यों? क्योंकि कल यहोवा के आराम का पवित्र दिन सब्त है। तुम लोग आज के लिए जितना भोजन तुम्हें चाहिए पका सकते हो। किन्तु शेष भोजन कल सबेरे के लिए बचाना।”

24इसलिए लोगों ने अगले दिन के लिए बाकी भोजन बचाया और कोई भोजन खराब नहीं हुआ। और इनमें कहीं कोई कीड़े नहीं पड़े।

25शनिवार को मूसा ने लोगों से कहा, “आज यहोवा को समर्पित आराम का पवित्र दिन सब्त है। इसलिए तुम लोगों में से कल कोई भी खेत में बाहर नहीं होगा। कल का इकट्ठा भोजन खाओ। 26तुम लोगों को छः दिन भोजन इकट्ठा करना चाहिए। किन्तु सातवाँ दिन आराम का दिन है इसलिए जमीन पर कोई विशेष भोजन नहीं होगा।”

27शनिवार को कुछ लोग थोड़ा भोजन एकत्र करने गए, किन्तु वे वहाँ जरा सा भी भोजन नहीं पा सके। 28तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम्हारे लोग मेरे आदेश का पालन करने और उपदेशों पर चलने से कब तक मना करेंगे? 29देखो यहोवा ने शनिवार को तुम्हारे आराम का दिन बनाया है। इसलिए शुक्रवार को यहोवा दो दिन के लिये पर्याप्त भोजन तुम्हें देगा। इसलिए सब्त को हर एक को बैठना और आराम करना चाहिए। वहीं ठहरे रहो जहाँ हो।” 30इसलिए लोगों ने सब्त को आराम किया।

31इब्राएली लोगों ने इस विशेष भोजन को “मन्ना” कहना आरम्भ किया। मन्ना छोटे सफ़ेद धनिया के बीजों के समान था और इसका स्वाद शहद के साथ बने पापड़ की तरह था। 32तब मूसा ने कहा, “यहोवा ने आदेश दिया कि, ‘इस भोजन का आठ प्याले भर अपने वंशजों के लिए बचाना। तब वे उस भोजन को देख

सकेंगे जिसे मैंने तुम लोगों को मरुभूमि में तब दिया था जब मैंने तुम लोगों को मिश्र से निकाला था।”

33इसलिए मूसा ने हारून से कहा, “एक घड़ा लो और इसे आठ प्याले मन्ना से भरो और इस मन्ना को यहोवा के सामने रखने के लिये और अपने वंशजों के लिए बचाओ।” 34(इसलिए हारून ने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। हारून ने आगे चलकर मन्ना के घड़े को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखा।) 35लोगों ने चालीस वर्ष तक मन्ना खाया। वे मन्ना तब तक खाते रहे जब तक उस प्रदेश में नहीं आ गए जहाँ उन्हें बसना था। वे उसे तब तक खाते रहे जब तक वे कनान के निकट नहीं आ गए। 36(वे मन्ना के लिए जिस तोल का उपयोग करते थे, वह ओमेर था। एक ओमेर \* लगभग आठ प्यालों के बराबर था।)

**17** इब्राएल के सभी लोगों ने सीन की मरुभूमि से एक साथ यात्रा की। वे यहोवा जैसा आदेश देता रहा, एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहे। लोगों ने रपीदीम की यात्रा की और वहाँ उन्होंने डेरा डाला। वहाँ लोगों के पीने के लिए पानी न था। 2इसलिए वे मूसा के विरुद्ध हो गए और उससे बहस करने लगे। लोगों ने कहा, “हमें पीने के लिए पानी दो।”

किन्तु मूसा ने उनसे कहा, “तुम लोग मेरे विरुद्ध क्यों हो रहे हो? तुम लोग यहोवा की परीक्षा क्यों ले रहे हो? क्या तुम लोग समझते हो कि यहोवा हमारे साथ नहीं है?”

3किन्तु लोग बहुत प्यासे थे। इसलिए उन्होंने मूसा से शिकायत जारी रखी। लोगों ने कहा, “हम लोगों को तुम मिश्र से बाहर क्यों लाए? क्या तुम इसलिए लाए कि पानी के बिना हमको, हमारे बच्चों को, और हमारी गाय, बकरियों को प्यासा मार डालो? 4इसलिए मूसा ने यहोवा को पुकारा, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? ये मुझे मार डालने को तैयार हैं।” 5यहोवा ने मूसा से कहा, “इब्राएल के लोगों के पास जाओ और उनके कुछ बुजुर्गों (नेताओं) को अपने साथ लो। अपनी लाठी अपने साथ ले जाओ। यह वही लाठी है जिसे तुमने तब उपयोग में लिया था जब नील नदी पर इससे चोट की थी। 6होरेब (सौने) पहाड़ पर मैं तुम्हारे सामने एक चट्टान पर खड़ा होऊँगा। लाठी को चट्टान पर मारो और इससे पानी बाहर आ जाएगा। तब लोग पी सकते हैं।”

मूसा ने वही बातें कीं और इब्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) ने इसे देखा। 7मूसा ने इस स्थान का नाम मरीबा और मस्सा रखा। क्योंकि यह वह स्थान था जहाँ इब्राएल के लोग उसके विरुद्ध हुए और उन्होंने यहोवा की परीक्षा ली थी। लोग यह जानना चाहते थे कि यहोवा उनके साथ है या नहीं।

ओमेर एक ओमेर एपा का 1/10 भाग था।

8अमालेकी लोग रपीदीम आए और इम्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़े। 9इसलिए मूसा ने यहोशू से कहा, “कुछ लोगों को चुनों और अगले दिन अमालेकियों से जाकर लड़ो। मैं पर्वत की चोटी पर खड़ा होकर तुम्हें देखूँगा। मैं परमेश्वर द्वारा दी गई छड़ी को पकड़े रहूँगा।”

10यहोशू ने मूसा की आज्ञा मानी और अगले दिन अमालेकियों से लड़ने गया। उसी समय मूसा, हारून और हूर पहड़ी की चोटी पर गए। 11जब कभी मूसा अपने हाथ को हवा में उठाता तो इम्राएल के लोग युद्ध जीत लेते। किन्तु जब मूसा अपने हाथ को नीचे करता तो इम्राएल के लोग युद्ध में हारने लगते।

12कुछ समय बाद मूसा की बाहें थक गईं। मूसा के साथ के लोग ऐसा उपाय करना चाहते थे जिससे मूसा की बाहें हवा में रह सकें। इसलिए उन्होंने एक बड़ी चट्टान मूसा के नीचे बैठने के लिए रखी तथा हारून और हूर ने मूसा की बाहों को हवा में पकड़े रखा। हारून मूसा की एक ओर था तथा हूर दूसरी ओर। वे उसके हाथों को वैसे ही ऊपर तब तक पकड़े रहे जब तक सूरज नहीं डूबा। 13इसलिए यहोशू और उसके सैनिकों ने अमालेकियों को इस युद्ध में हरा दिया।

14तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इस युद्ध के बारे में लिखो। इस युद्ध की घटनाओं को एक पुस्तक में लिखो जिससे लोग याद करेंगे कि यहाँ क्या हुआ था और यहोशू से कहो कि मैं अमालेकी लोगों को धरती से पूर्णरूप से नष्ट कर दूँगा।”

15तब मूसा ने एक वेदी बनायी। मूसा ने वेदी का नाम “यहोवा निस्सी” रखा। 16मूसा ने कहा, “मैंने यहोवा के सिंहासन की ओर अपने हाथ फैलाए। इसलिए यहोवा अमालेकी लोगों से लड़ा जैसा उसने सदा किया है।”

### मूसा को उसके ससुर की सलाह

18 मूसा का ससुर यित्रो मिद्यान में याजक था। परमेश्वर ने मूसा और इम्राएल के लोगों की अनेक प्रकार से जो सहायता की उसके बारे में यित्रो ने सुना। यित्रो ने इम्राएल के लोगों को यहोवा द्वारा मिन्न से बाहर ले जाए जाने के बारे में सुना। 2इसलिए यित्रो मूसा के पास गया जब वह परमेश्वर के पर्वत के पास डेरा डाले था। वह मूसा की पत्नी सिप्पोरा को अपने साथ लाया। (सिप्पोरा मूसा के साथ नहीं थी क्योंकि मूसा ने उसे उसके घर भेज दिया था।) 3यित्रो मूसा के दोनों पुत्रों को भी साथ लाया। पहले पुत्र का नाम गेशोम रखा क्योंकि जब वह पैदा हुआ, मूसा ने कहा, “मैं विदेश में अजनबी हूँ।” 4दूसरे पुत्र का नाम एलीएजर रखा क्योंकि जब वह उत्पन्न हुआ तो मूसा ने कहा, “मेरे पिता के परमेश्वर ने मेरी सहायता की और मिन्न के राजा की तलवार से मुझे बचाया है।” 5इसलिए यित्रो मूसा के पास तब गया जब वह परमेश्वर के पर्वत (सीनै पर्वत) के

निकट मरुभूमि में डेरा डाले था। मूसा की पत्नी और उसके दो पुत्र यित्रो के साथ थे।

6यित्रो ने मूसा को एक सन्देश भेजा। यित्रो ने कहा, “मैं तुम्हारा ससुर यित्रो हूँ और मैं तुम्हारी पत्नी और उसके दोनों पुत्रों को तुम्हारे पास ला रहा हूँ।”

7इसलिए मूसा अपने ससुर से मिलने गया। मूसा उसके सामने झुका और उसे चूमा। दोनों लोगों ने एक दूसरे का कुशल क्षेम पूछा। तब वे मूसा के डेरे में और अधिक बातें करने गए। 8मूसा ने अपने ससुर यित्रो को हर एक बात बताई जो यहोवा ने इम्राएल के लोगों के लिए की थी। मूसा ने वे चीजें भी बताई जो यहोवा ने फ़िरौन और मिन्न के लोगों के लिए की थीं। मूसा ने रास्ते की सभी समस्याओं के बारे में बताया और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि किस तरह यहोवा ने इम्राएली लोगों को बचाया, जब-जब वे कष्ट में थे।

9यित्रो उस समय बहुत प्रसन्न हुआ जब उसने यहोवा द्वारा इम्राएल के लिए की गई सभी अच्छी बातों को सुना। यित्रो इसलिए प्रसन्न था कि यहोवा ने इम्राएल के लोगों को मिन्नियों से स्वतन्त्र कर दिया था।

10यित्रो ने कहा, “यहोवा की स्तुति करो! उसने तुम्हें मिन्न के लोगों से स्वतन्त्र कराया। यहोवा ने तुम्हें फ़िरौन से बचाया है।

11अब मैं जानता हूँ कि यहोवा सभी देवताओं से महान है उन्होंने सोचा कि सबकुछ उनके काबू में है लेकिन देखो, परमेश्वर ने क्या किया।”

12तब यित्रो ने परमेश्वर के सम्मान में बलि तथा भेंटें दीं। तब हारून तथा इम्राएल के सभी बुजुर्ग (नेता) मूसा के ससुर यित्रो के साथ भोजन करने आए। यह उन्होंने परमेश्वर की उपासना की विशेष विधि के रूप में किया।

13अगले दिन मूसा लोगों का न्याय करने वाला था। वहाँ लोगों की संख्या बहुत अधिक थी। इस कारण लोगों को मूसा के सामने सारे दिन खड़ा रहना पड़ा। 14यित्रो ने मूसा को न्याय करते देखा। उसने पूछा, “तुम ही यह क्यों कर रहे हो? एक मात्र न्यायाधीश तुम्हीं क्यों हो? और लोग केवल तुम्हारे पास ही सारे दिन क्यों आते हैं?”

15तब मूसा ने अपने ससुर से कहा, “लोग मेरे पास आते हैं और अपनी समस्याओं के बारे में मुझे से परमेश्वर का निर्णय पूछते हैं। 16यदि उन लोगों का कोई विवाद होता है तो वे मेरे पास आते हैं। मैं निर्णय करता हूँ कि कौन ठीक है। इस प्रकार मैं परमेश्वर के नियमों और उपदेशों की शिक्षा लोगों को देता हूँ।”

17किन्तु मूसा के ससुर ने उससे कहा, “जिस प्रकार तुम यह कर रहे हो, ठीक नहीं है। 18तुम्हारे अकेले के लिए यह काम अत्याधिक है। इससे तुम थक जाते हो और इससे लोग भी थक जाते हैं। तुम यह काम स्वयं

अकेले नहीं कर सकते। 19मैं तुम्हें कुछ सुझाव दूँगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर तुम्हारा साथ देगा। जो तुम्हें करना चाहिए वह यह है। तुम्हें परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते रहना चाहिए और तुम्हें उनके इन विवादों और समस्याओं को परमेश्वर के सामने रखना चाहिए। 20तुम्हें परमेश्वर के नियमों और उपदेशों की शिक्षा लोगों को देनी चाहिए। लोगों को चेतावनी दो कि वे नियम न तोड़ें। लोगों को जीने की ठीक राह बताओ। उन्हें बताओ कि वे क्या करें। 21किन्तु तुम्हें लोगों में से अच्छे लोगों को चुनना चाहिए।

“तुम्हें अपने विश्वासपात्र आदमियों का चुनाव करना चाहिए अर्थात् उन आदमियों का जो परमेश्वर का सम्मान करते हों। उन आदमियों को चुनो जो धन के लिए अपना निर्णय न बदलें। इन आदमियों को लोगों का प्रशासक बनाओ। हजार, सौ, पचास, और दस लोगों पर भी प्रशासक होने चाहिए। 22इन्हीं प्रशासकों को लोगों का न्याय करने दो। यदि कोई बहुत ही गंभीर मामला हो तो वे प्रशासक निर्णय के लिए तुम्हारे पास आ सकते हैं। किन्तु अन्य मामलों का निर्णय वे स्वयं ही कर सकते हैं। इस प्रकार यह तुम्हारे लिए अधिक सरल होगा। इसके अतिरिक्त, ये तुम्हारे काम में हाथ बटा सकेंगे। 23यदि तुम यहोवा की इच्छानुसार ऐसा करते हो तब तुम अपना कार्य करते रहने योग्य हो सकोगे। और इसके साथ ही साथ सभी लोग अपनी समस्याओं के हल हो जाने से शान्तिपूर्वक घर जा सकेंगे।”

24इसलिए मूसा ने वैसे ही किया जैसा यित्री ने कहा था। 25मूसा ने इब्राएल के लोगों में से योग्य पुरुषों को चुना। मूसा ने उन्हें लोगों का अगुआ बनाया। वहाँ हजार, सौ, पचास और दस लोगों के ऊपर प्रशासक थे। 26ये प्रशासक लोगों के न्यायाधीश थे। लोग अपनी समस्याएं इन प्रशासकों के पास सदा ला सकते थे। और मूसा को केवल गंभीर मामले ही निपटाने पड़ते थे।

27कुछ समय बाद मूसा ने अपने ससुर यित्री से विदा ली और यित्री अपने घर लौट गया।

### इब्राएल के साथ परमेश्वर का साक्षीपत्र

**19** मिश्र से अपनी यात्रा करने के तीसरे महीने में इब्राएल के लोग सीनै मरुभूमि में पहुँचे। 2लोगों ने रपीदीम को छोड़ दिया था और वे सीनै मरुभूमि में आ पहुँचे थे। इब्राएल के लोगों ने मरुभूमि में पर्वत\* के निकट डेरा डाला। अतब मूसा पर्वत के ऊपर परमेश्वर के पास गया। जब मूसा पर्वत पर था तभी पर्वत से परमेश्वर ने उससे कहा, “ये बातें इब्राएल के लोगों अर्थात् याकूब के बड़े परिवार से कही: 4तुम लोगों ने

देखा कि मैं अपने शत्रुओं के साथ क्या कर सकता हूँ। तुम लोगों ने देखा कि मैंने मिश्र के लोगों के साथ क्या किया। तुम ने देखा कि मैंने तुम को मिश्र से बाहर एक उकाब की तरह पंखों पर बैठाकर निकाला। और यहाँ अपने समीप लाया। 5इसलिए अब मैं कहता हूँ तुम लोग मेरा आदेश मानो। मेरे साक्षीपत्र का पालन करो। यदि तुम मेरे आदेश मानोगे तो तुम मेरे विशेष लोग बनोगे। सम्स्त संसार मेरा है। 6तुम एक विशेष लोग और याजकों का राज्य बनोगे।’ मूसा, जो बातें मैंने बताई हैं उन्हें इब्राएल के लोगों से अवश्य कह देना।”

7इसलिए मूसा पर्वत से नीचे आया और लोगों के बुजुर्ग (नेताओं) को एक साथ बुलाया। मूसा ने बुजुर्गों से वह बातें कहीं जिन्हें कहने का आदेश यहोवा ने उसे दिया था। 8फिर सभी लोग एक साथ बोले, “हम लोग यहोवा की कही हर बात मानेंगे।”

तब मूसा परमेश्वर के पास पर्वत पर लौट आया। मूसा ने कहा कि लोग उसके आदेश का पालन करेंगे। 9और यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तुम्हारे पास आऊँगा। मैं तुमसे बात करूँगा। सभी लोग मुझे तुमसे बातें करते हुए सुनेंगे। मैं यह इसलिए करूँगा जिससे लोग उन बातों में सदा विश्वास करेंगे जो तुमने उन्से कहीं।”

तब मूसा ने परमेश्वर को वे सभी बातें बताई जो लोगों ने कही थीं।

10यहोवा ने मूसा से कहा, “आज और कल तुम लोगों को विशेष सभा के लिए अवश्य तैयार करो। लोगों को अपने वस्त्र धो लेने चाहिए। 11और तीसरे दिन मेरे लिए तैयार रहना चाहिए। तीसरे दिन मैं (यहोवा) सीनै पर्वत पर नीचे आऊँगा और सभी लोग मुझे (यहोवा) को देखेंगे। 1213किन्तु उन लोगों से अवश्य कह देना कि वे पर्वत से दूर ही रुकें। एक रेखा खींचना और उसे लोगों को पार न करने देना। यदि कोई व्यक्ति या जानवर पर्वत को छूँगा तो उसे अवश्य मार दिया जाएगा। वह पत्थरों से मारा जाएगा या बाणों से बेधा जाएगा। किन्तु किसी व्यक्ति को उसे छूने नहीं दिया जाएगा। लोगों को तुरही बजने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। उसी समय उन्हें पर्वत पर जाने दिया जाएगा।”

14सो मूसा पर्वत से नीचे उतरा। वह लोगों के समीप गया और विशेष बैठक के लिए उन्हें तैयार किया। लोगों ने अपने वस्त्र धोए।

15तब मूसा ने लोगों से कहा, “परमेश्वर से मिलने के लिए तीन दिन में तैयार हो जाओ। उस समय तक कोई भी पुरुष स्त्री से सम्पर्क न करे।”

16तीसरे दिन पर्वत पर बिजली की चमक और मेघ की गरज हुई। एक घना बादल पर्वत पर उतरा और तुरही की तेज ध्वनि हुई। डेरे के सभी लोग डर गए। 17तब मूसा लोगों को पर्वत की तलहटी पर परमेश्वर से

पर्वत अर्थात् हारेब पर्वत जिसे सीनै पर्वत भी कहा जाता है।

मिलने के लिए डेरे के बाहर ले गया। 18सैनै पर्वत धूँएँ से ढका था। पर्वत से धूँआँ इस प्रकार उठा जैसे किसी भट्टी से उठता है। यह इसलिए हुआ कि यहोवा आग में पर्वत पर उतरे और साथ ही सारा पर्वत भी काँपने लगा। 19पुरही की ध्वनि तीव्र से तीव्रतर होती चली गई। जब भी मूसा ने परमेश्वर से बात की, मेघ की गरज में परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया। 20इस प्रकार यहोवा सैनै पर्वत पर उतरा। यहोवा स्वर्ग से पर्वत की चोटी पर उतरा। तब यहोवा ने मूसा को अपने साथ पर्वत की चोटी पर आने को कहा। इसलिए मूसा पर्वत पर चढ़ा।

21यहोवा ने मूसा से कहा, “जाओ और लोगों को चेतावनी दो कि वे मेरे पास न आएँ न ही मुझे देखें। यदि वे ऐसा करेंगे तो वे मर जाएंगे और इस तरह बहुत सी मौतें हो जाएंगी। 22उन याजकों से भी कहो जो मेरे पास आएंगे कि वे इस विशेष, मिलन के लिए स्वयं को तैयार करें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।”

23मूसा ने यहोवा से कहा, “किन्तु लोग पर्वत पर नहीं आ सकते। तूने स्वयं ही हम से एक रेखा खींचकर पर्वत को पवित्र समझने और उसे पार न करने के लिए कहा था।”

24यहोवा ने उससे कहा, “लोगों के पास जाओ और हारून को लाओ। उसे अपने साथ वापस लाओ। किन्तु याजकों और लोगों को मत आने दो। यदि वे मेरे पास आएंगे तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।” 25इसलिए मूसा लोगों के पास गया और उनसे ये बातें कहीं।

### दस आदेश

**20** तब परमेश्वर ने ये बातें कहीं, 2<sup>मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिश्र देश से बाहर लाया। मैंने तुम्हें दासता से मुक्त किया। इसलिए तुम्हें निश्चय ही इन आदेशों का पालन करना चाहिए:</sup>

3<sup>तुम्हें मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता को, नहीं मानना चाहिए।</sup>

4<sup>तुम्हें कोई भी मूर्ति नहीं बनानी चाहिए। किसी भी उस चीज़ की आकृति मत बनाओ जो ऊपर आकाश में या नीचे धरती पर अथवा धरती के नीचे पानी में हो। किसी भी प्रकार की मूर्ति की पूजा मत करो, उसके आगे मत झुको। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मेरे लोग जो दूसरे देवताओं की पूजा करते हैं मैं उनसे घृणा करता हूँ। यदि कोई व्यक्ति मेरे विरुद्ध पाप करता है तो मैं उसका शत्रु हो जाता हूँ। मैं उस व्यक्ति की सन्तानों की तीसरी और चौथी पीढ़ी तक को दण्ड दूँगा। 6किन्तु मैं उन व्यक्तियों पर बहुत कृपालू रहूँगा जो मुझसे प्रेम करेंगे और मेरे आदेशों को</sup>

मानेंगे। मैं उनके परिवारों के प्रति सहस्रों पीढ़ी तक कृपालू रहूँगा।

7<sup>तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के नाम का उपयोग तुम्हें गलत ढंग से नहीं करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति यहोवा के नाम का उपयोग गलत ढंग से करता है तो वह अपराधी है और यहोवा उसे निरपराध नहीं मानेंगा।</sup>

8<sup>सब्त को एक विशेष दिन के रूप में मानने का ध्यान रखना। 9सप्ताह में तुम छः दिन अपना कार्य कर सकते हो। 10किन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की प्रतिष्ठा में आराम का दिन है। इसलिए उस दिन कोई व्यक्ति चाहें तुम, या तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ तुम्हारे दास और दासियाँ, पशु तथा तुम्हारे नगर में रहने वाले सभी विदेशी काम नहीं करेंगे। 11क्यों? क्योंकि यहोवा ने छः दिन काम किया और आकाश, धरती, सागर, और उनकी हर चीज़ें बनाई। और सातवें दिन परमेश्वर ने आराम किया। इस प्रकार यहोवा ने शनिवार को वरदान दिया कि उसे आराम के पवित्र दिन के रूप में मनाया जाएगा। यहोवा ने उसे बहुत ही विशेष दिन के रूप में स्थापित किया।</sup>

12<sup>अपने माता और अपने पिता का आदर करो। यह इसलिए करो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा जिस धरती को तुम्हें दे रहा है, उसमें तुम दीर्घ जीवन बिता सको।</sup>

13<sup>तुम्हें किसी व्यक्ति की हत्या नहीं करनी चाहिए।</sup>

14<sup>तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए।</sup>

15<sup>तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए।</sup>

16<sup>तुम्हें अपने पड़ोसियों के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए।</sup>

17<sup>दूसरे लोगों की चीज़ों को लेने की इच्छा तुम्हें नहीं करनी चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी का घर, उसकी पत्नी, उसके सेवक और सेविकाओं, उसकी गावों, उसके गधों को लेने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। तुम्हें किसी की भी चीज़ को लेने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।”</sup>

### लोगों का परमेश्वर से डरना

18घाटी में लोगों ने इस पूरे समय गर्जन सुनी और पर्वत पर बिजली की चमक देखी। उन्होंने तुरही की ध्वनि सुनी और पर्वत से उठते धूँएँ को देखा। लोग डरे और भय से काँप उठे। वे पर्वत से दूर खड़े रहे और देखते रहे। 19तब लोगों ने मूसा से कहा, “यदि तुम हम लोगों से कुछ कहना चाहोगे तो हम लोग सुनेंगे। किन्तु परमेश्वर को हम लोगों से बात न करने दो। यदि यह होगा तो हम लोग मर जाएंगे।”

20तब मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत! यहोवा यह प्रमाणित करने आया है कि वह तुमसे प्रेम करता है।"

21लोग उस समय उठकर पर्वत से दूर चले आए जबकि मूसा उस गहरे बादल में गया जहाँ यहोवा था। 22तब यहोवा ने मूसा से झ्राएलियों को बताने के लिए ये बातें कहीं: "तुम लोगों ने देखा कि मैंने तुमसे आकाश से बातें की। 23इसलिए तुम लोग मेरे विरोध में सोने या चाँदी की मूर्तियाँ न बनाना। तुम्हें इन झूठे देवताओं की मूर्तियाँ कदापि नहीं बनानी हैं।

24"मेरे लिए एक विशेष वेदी बनाओ। इस वेदी को बनाने के लिए धूलि का उपयोग करो। इस वेदी पर बलि के रूप में होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाओ। इस काम के लिए अपनी भेड़ों और गाय, बकरियों का उपयोग करो। उन सभी स्थानों पर यही करो जहाँ मैं अपने को याद करने के लिए कह रहा हूँ। तब मैं आऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। 25यदि तुम लोग वेदी को बनाने के लिए चट्टानों का उपयोग करो तो तुम लोग उन चट्टानों का उपयोग न करो जिन्हें तुम लोगों ने अपने किसी लोहे के औज़ारों से चिकना किया है। यदि तुम लोग चट्टानों पर किसी औज़ारों का उपयोग करोगे तो मैं वेदी को स्वीकार नहीं करूँगा। 26तुम लोग वेदी तक पहुँचाने वाली सीढ़ियाँ भी न बनाना। यदि सीढ़ियाँ होंगी तो जब लोग ऊपर वेदी को देखेंगे तो वे तुम्हारे वस्त्रों के भीतर नीचे से तुम्हारी नग्नता को भी देख सकेंगे।"

### अन्य नियम एवं आदेश

21 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "ये वे अन्य नियम हैं, जिन्हें तुम लोगों को बताना होगा:

"यदि तुम एक हिब्रू दास खरीदते हो तो उसे तुम्हारी सेवा केवल छः वर्ष करनी होगी। छः वर्ष बाद वह स्वतन्त्र हो जाएगा। उसे कुछ भी नहीं देना पड़ेगा। 2 तुम्हारा दास होने के पहले यदि उसका विवाह नहीं हुआ है तो वह पत्नी के बिना ही स्वतन्त्र होकर चला जाएगा। किन्तु यदि दास होने के समय वह व्यक्ति विवाहित होगा तो स्वतन्त्र होने के समय वह अपनी पत्नी को अपने साथ ले जाएगा। 3 यदि दास विवाहित नहीं होगा तो उसका स्वामी उसे पत्नी दे सकेगा। यदि वह पत्नी, पुत्र या पुत्रियों को जन्म देगी तो वह स्त्री तथा बच्चे उस दास के स्वामी के होंगे। अपने सेवाकाल के पूरा होने पर केवल वह दास ही स्वतन्त्र किया जाएगा।

4"किन्तु यह हो सकता है कि दास यह निश्चय करे कि वह अपने स्वामी के साथ रहना चाहता है। तब उसे कहना पड़ेगा, 'मैं अपने स्वामी से प्रेम करता हूँ। मैं अपनी पत्नी और अपने बच्चों से प्रेम करता हूँ। मैं स्वतन्त्र नहीं होऊँगा मैं यहीं रहूँगा।' 6 यदि ऐसा ही तो दास का स्वामी उसे परमेश्वर के सामने लाएगा। दास

का स्वामी उसे किसी दरवाजे तक या उसकी चौखट तक ले जाएगा और दास का स्वामी एक तेज औज़ार से दास के कान में एक छेद करेगा। तब दास उस स्वामी की सेवा जीवन भर करेगा।

7"कोई भी व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी के रूप में बेचने का निश्चय कर सकता है। यदि ऐसा हो तो उसे स्वतन्त्र करने के लिए वे ही नियम नहीं हैं जो पुरुष दासों को स्वतन्त्र करने के लिए हैं। 8 यदि स्वामी उस स्त्री से सन्तुष्ट नहीं है तो वह उसके पिता को उसे वापस बेच सकता है। किन्तु यदि दासी का स्वामी उस स्त्री से विवाह करने का वचन दे तो वह दूसरे व्यक्ति को उसे बेचने का अधिकार खो देता है। 9 यदि दासी का स्वामी उस दासी से अपने पुत्र का विवाह करने का वचन दे तो उससे दासी जैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा। उसके साथ पुत्री जैसा व्यवहार करना होगा।

10"यदि दासी का स्वामी किसी दूसरी स्त्री से भी विवाह करे तो उसे चाहिए कि वह पहली पत्नी को कम भोजन या वस्त्र न दे और उसे चाहिए कि उन चीज़ों को लगातार वह उसे देता रहे जिन्हें पाने का उसे अधिकार विवाह से मिला है। 11 उस व्यक्ति को ये तीन चीज़ें उसके लिए करनी चाहिए। यदि वह इन्हें नहीं करता तो स्त्री स्वतन्त्र की जाएगी और इसके लिए उसे कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। उसे उस व्यक्ति को कोई धन नहीं देना होगा।

12"यदि कोई व्यक्ति किसी को चोट पहुँचाए और उसे मार डाले तो उस व्यक्ति को भी मार दिया जाय। 13 किन्तु यदि ऐसा संयोग होता है कि कोई बिना पूर्व योजना के किसी व्यक्ति को मार दे, तो ऐसा परमेश्वर की इच्छा से ही हुआ होगा। मैं कुछ विशेष स्थानों को चुनूँगा जहाँ लोग सुरक्षा के लिए दौड़कर जा सकते हैं। इस प्रकार वह व्यक्ति दौड़कर इनमें से किसी भी स्थान पर जा सकता है। 14 किन्तु कोई व्यक्ति यदि किसी व्यक्ति के प्रति क्रोध या घृणा रखने के कारण उसे मारने की योजना बनाए तो हत्यारे को दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। उसे मेरी वेदी से दूर ले जाओ और उसे मार डालो।

15"कोई व्यक्ति जो अपने माता-पिता को चोट पहुँचाये वह अवश्य ही मार दिया जाये। 16 यदि कोई व्यक्ति किसी को दास के रूप में बेचने या अपना दास बनाने के लिए चुराए तो उसे अवश्य मार दिया जाये। 17 कोई व्यक्ति, जो अपने माता-पिता को शाप दे तो उसे अवश्य मार दिया जाये। 18 दो व्यक्ति बहस कर सकते हैं और एक दूसरे को पथर या मुक्के से मार सकते हैं। उस व्यक्ति को तुम्हें कैसे दण्ड देना चाहिए? यदि चोट खाया हुआ व्यक्ति मार न जाये तो चोट पहुँचाने वाला व्यक्ति मारा न जाए। 19 किन्तु यदि चोट खाए व्यक्ति को कुछ समय तक चारपाई पकड़नी पड़े तो चोट पहुँचाने वाले व्यक्ति को उसे हर्जाना देना चाहिए। चोट पहुँचाने वाला

व्यक्ति उसके समय की हानि को धन से पूरा करे। वह व्यक्ति तब तक उसे हर्जाना दे जब तक वह पूरी तरह ठीक न हो जाये।

20“कभी-कभी लोग अपने दास और दासियों को पीटते हैं। यदि पिटाई के बाद दास मर जाये तो हत्यारे को अवश्य दण्ड दिया जाये। 21किन्तु दास यदि मरता नहीं और कुछ दिनों बाद वह स्वस्थ हो जाता है तो उस व्यक्ति को दण्ड नहीं दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि दास के स्वामी ने दास के लिए धन दिया और दास उसका है।

22“दो व्यक्ति आपस में लड़ सकते हैं और किसी गर्भवती स्त्री को चोट पहुँचा सकते हैं। यदि वह स्त्री अपने बच्चे को समय से पहले जन्म देती है, और माँ बुरी तरह घायल नहीं है तो चोट पहुँचानेवाला व्यक्ति उसे अवश्य धन दे। उस स्त्री का पति यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना धन दे। न्यायाधीश उस व्यक्ति को यह निश्चय करने में सहायता करेंगे कि वह धन कितना होगा। 23किन्तु यदि स्त्री बुरी तरह घायल हो तो वह व्यक्ति जिसने उसे चोट पहुँचाई है अवश्य दण्डित किया जाये। यदि एक व्यक्ति मार दिया जाता है तो हत्यारा अवश्य मार दिया जाये। तुम एक जीवन के बदले दूसरा जीवन लो। 24तुम आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पैर के बदले पैर लो। 25जले के बदले जलाओ, खरोंच के बदले खरोंच करो और घाव के बदले घाव।

26“यदि कोई व्यक्ति किसी दास की आँख को चोट पहुँचाए और दास उस आँख से अन्धा हो जाये तो वह दास स्वतन्त्र हो जाने दिया जाएगा। उसकी आँख उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है। यह नियम दास या दासी दोनों के लिए समान है। 27यदि दास का स्वामी दास के मुँह पर मारे और दास का कोई दाँत टूट जाए तो दास को स्वतन्त्र कर दिया जाएगा। दास का दाँत उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है। यह दास और दासी दोनों के लिए समान है।

28“यदि किसी व्यक्ति का कोई बैल किसी स्त्री को या पुरुष को मार देता है तो तुम पत्थरों का उपयोग करो और बैल को मार डालो। तुम्हें उस बैल को खाना नहीं चाहिए। किन्तु बैल का स्वामी अपराधी नहीं है। 29किन्तु यदि बैल ने पहले लोगों को चोट पहुँचाई हो और स्वामी को चेतावनी दी गई हो तो वह स्वामी अपराधी है। क्यों? क्योंकि इसने बैल को बाँधा या बन्द नहीं रखा। यदि बैल स्वतन्त्र छोड़ा गया हो और किसी को वह मारे तो स्वामी अपराधी है। तुम पत्थरों से बैल और उसके स्वामी को भी मार दो। 30किन्तु मृतक का परिवार यदि चाहे तो बदले में धन लेकर बैल के मालिक को छोड़ सकता है। किन्तु वह उतना धन दे जितना न्यायाधीश निश्चित करे।

31“यही नियम उस समय भी लागू होगा जब बैल किसी व्यक्ति के पुत्र या पुत्री को मारता है। 32किन्तु बैल

यदि दास को मार दे तो बैल का स्वामी दास के स्वामी को एक नये दास का मूल्य चाँदी के तीस सिक्के\* दे और बैल भी पत्थरों से मार डाला जाये। यह नियम दास और दासी के लिए समान होगा।

33“कोई व्यक्ति कोई गड़बा या कुँआ खोदे और उसे ढके नहीं और यदि किसी व्यक्ति का जानवर आए और उसमें गिर जाये तो गड़बे का स्वामी दोषी है। 34गड़बे का स्वामी जानवर के लिए धन देगा। किन्तु जानवर के लिए धन देने के बाद उसे उस मरे जानवर को लेने दिया जायेगा।

35“यदि किसी का बैल किसी दूसरे व्यक्ति के बैल को मार डाले तो वे दोनों उस जीवित बैल को बेच दें। दोनों व्यक्ति बेचने से प्राप्त आधा-आधा धन और मरे बैल का आधा-आधा भाग ले लें। 36किन्तु यदि उस व्यक्ति के बैल ने पहले भी किसी दूसरे जानवर को चोट पहुँचाई हो तो उस बैल का स्वामी अपने बैल के लिए उत्तरदायी है। यदि उसका बैल दूसरे बैल को मार डालता है तो वह अपराधी है क्योंकि उसने बैल को स्वतन्त्र छोड़ा। वह व्यक्ति बैल के बदले बैल अवश्य दे। वह मारे गए बैल के बदले अपना बैल दे।

**22** “जो व्यक्ति किसी बैल या भेड़ को चुराता है उसे तुम कैसे दण्ड दोगे? यदि वह व्यक्ति जानवर को मार डाले या बेच दे तो वह उसे लौटा तो नहीं सकता। इसलिए वह एक चुराए बैल के बदले पाँच बैल दे। या वह एक चुराई गई भेड़ के बदले चार भेड़ दे। वह चोरी के लिए कुछ धन भी दे। 24किन्तु यदि उसके पास अपना कुछ भी नहीं है तो चोरी के लिए उसे दास के रूप में बेचा जाएगा। किन्तु यदि उसके पास चोरी का जानवर पाया जाए तो वह व्यक्ति जानवर के स्वामी को हर एक चुराए गए जानवर के बदले दो जानवर देगा। इस बात का कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि जानवर बैल, गधा या भेड़ हो। यदि कोई चोर रात को घर में संध लगाने का प्रयत्न करते समय मारा जाये तो उसे मारने का अपराधी कोई नहीं होगा। किन्तु यदि यह दिन में हो तो उसका हत्यारा व्यक्ति अपराध का दोषी होगा। चोर को निश्चय ही क्षतिपूर्ति करनी होगी।

5“यदि कोई व्यक्ति अपने खेत या अँगूर के बाग में आग लगाये और वह उस आग को फैलने दे और वह उसके पड़ोसी के खेत या अँगूर के बाग को जला दे तो वह अपने पड़ोसी की हानि की पूर्ति में देने के लिए अपनी सबसे अच्छी फसल का उपयोग करेगा।\*

चाँदी के तीस सिक्के नये दास के लिए मूल्य।

व्यक्ति ... उपयोग करेगा “यदि कोई व्यक्ति अपने जानवरों को अपने खेत या अपने अँगूर के बाग में चरने के लिए छोड़े और जानवर दूसरे के खेत या अँगूर के बाग में बहक जाए तो स्वामी को अवश्य बदले में देना होगा। भुगतान उसकी सबसे अच्छी फसल का किया जायेगा।”

“कोई व्यक्ति अपने खेत की झाड़ियों को जलाने के लिए आग लगाए। किन्तु यदि आग बढ़े और उसके पड़ोसी की फसल या पड़ोसी के खेत में उगे अन्न को जला दे तो आग लगाने वाला व्यक्ति जली हुयी चीजों के बबले भुगतान करेगा।

“कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से उसके घर में कुछ धन या कुछ अन्य चीजें रखने को कहे और यदि वह धन या वे चीजें पड़ोसी के घर से चोरी चली जायें तो तुम क्या करोगे? तुम्हें चोर का पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि तुमने चोर को पकड़ लिया तो वह चीजों के मूल्य का दुगना देगा। 8 किन्तु यदि तुम चोर का पता न लगा सके तब परमेश्वर निर्णय करेगा कि पड़ोसी अपराधी है या नहीं। घर का स्वामी परमेश्वर के सामने जाए और परमेश्वर ही निर्णय करेगा कि उसने चुराया है या नहीं।

9 “यदि दो व्यक्ति किसी खोए बैल, गधा, भेड़, वस्त्र, यदि किसी अन्य खोई हुई चीज़ के बारे में सहमत न हों तो तुम क्या करोगे? एक व्यक्ति कहता है, ‘यह मेरी है।’ और दूसरा कहता है, ‘नहीं, यह मेरी है।’ दोनों व्यक्ति परमेश्वर के सामने जाएँ। परमेश्वर निर्णय करेगा कि अपराधी कौन है। जिस व्यक्ति को परमेश्वर अपराधी पाएगा वह उस चीज़ के मूल्य से दुगना भुगतान करे।

10 “कोई अपने पड़ोसी से कुछ समय के लिए अपने जानवर की देखभाल के लिए कहे। यह जानवर बैल, भेड़, गधा या कोई अन्य पशु हो और यदि वह जानवर मर जाये, उसे चोट आ जाये या कोई उसे तब हाँक ले जाये जब कोई न देख रहा हो तो तुम क्या करोगे? 11 वह पड़ोसी स्पष्ट करे कि उसने जानवर को नहीं चुराया है। यदि यह सत्य हो तब पड़ोसी यहोवा की शपथ उठाए कि उसने वह नहीं चुराया है। जानवर का मालिक इस शपथ को अवश्य स्वीकार करे। पड़ोसी को जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं करना होगा। 12 किन्तु यदि पड़ोसी ने जानवर को चुराया हो तो वह मालिक को जानवर के लिए भुगतान अवश्य करे। 13 यदि जंगली जानवरों ने जानवर को मारा हो तो प्रमाण के लिए उसके शरीर को पड़ोसी लाए। पड़ोसी मारे गए जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं करेगा।

14 “यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से किसी जानवर को उधार ले तो उसके लिए वह व्यक्ति ही उत्तरदायी है। यदि उस जानवर को चोट पहुँचे या वह मर जाये तो पड़ोसी मालिक को उस जानवर के लिए भुगतान करे। पड़ोसी इसलिए उत्तरदायी है क्योंकि उसका मालिक स्वयं वहाँ नहीं था। 15 किन्तु यदि मालिक जानवर के साथ वहाँ हो तब पड़ोसी को भुगतान नहीं करना होगा। या यदि पड़ोसी काम लेने के लिए धन का भुगतान कर

रहा हो तो जानवर के मरने या चोट खाने पर उसे कुछ भी नहीं देना होगा। जानवर के उपयोग के लिए दिया गया भुगतान ही पर्याप्त होगा।

16 “यदि कोई पुरुष किसी अविवाहित कुँवारी कन्या से यौन सम्बन्ध करे तो वह उससे निश्चय ही विवाह करे। और वह उस लड़की के पिता को पूरा दहेज\* दे। 17 यदि पिता अपनी पुत्री को उसे विवाह के लिए देने से इन्कार करता है तो भी उस व्यक्ति को धन देना पड़ेगा। वह उसे दहेज का पूरा धन दे।

18 “तुम किसी स्त्री को जादू टोना मत करने देना। यदि वह ऐसा करे तो तुम उसे जीवित मत रहने देना।

19 “तुम किसी व्यक्ति को किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध न रखने देना। यदि ऐसा हो तो वह व्यक्ति अवश्य मार डाला जाये।

20 “यदि कोई किसी मिथ्या देवता को बलि चढ़ाए तो उस व्यक्ति को अवश्य नष्ट कर दिया जाये। केवल परमेश्वर यहोवा ही ऐसा है जिसे तुमको बलि चढ़ानी चाहिए।

21 “याद रखो इससे पहले तुम लोग मिश्र देश में विदेशी थे। अतः तुम लोग उस व्यक्ति को न उगो, न ही चोट पहुँचाओ जो तुम्हारे देश में विदेशी हो।

22 “निश्चय ही तुम लोग ऐसी स्त्रियों का कभी बुरा नहीं करोगे जिनके पति मर चुके हों या उन बच्चों का जिनके माता-पिता न हों। 23 यदि तुम लोग उन विधवाओं या अनाथ बच्चों का कुछ बुरा करोगे तो वे मेरे आगे जाएंगे और मैं उनके कष्टों को सुनूँगा। 24 और मुझे बहुत क्रोध आएगा। मैं तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। तब तुम्हारी पत्नियाँ विधवा हो जाएंगी और तुम्हारे बच्चे अनाथ हो जाएंगे।

25 “यदि मेरे लोगों में से कोई गरीब हो और तुम उसे कर्ज़ दो तो उस धन के लिए तुम्हें ब्याज नहीं लेना चाहिए। और जल्दी चुकाने के लिए भी तुम उसे मजबूर नहीं करोगे। 26 कोई व्यक्ति उधार लिए हुए धन के भुगतान के लिए अपना लबादा गिरवी रख सकता है। किन्तु तुम सूरज डूबने के पहले उसका वह वस्त्र अवश्य लौटा देना। 27 यदि वह व्यक्ति अपना लबादा नहीं पाता तो उसके पास शरीर ढकने को कुछ भी नहीं रहेगा। जब वह सोएगा तो उसे सर्दी लगेगी। यदि वह मुझे रोकर पुकारेगा तो मैं उसकी सुनूँगा। मैं उसकी बात सुनूँगा क्योंकि मैं कृपालु हूँ।

28 “तुम्हें परमेश्वर या अपने लोगों के मुखियाओं को शाप नहीं देना चाहिए।

दहेज वह धन जो एक व्यक्ति दुल्हन के पिता को इसलिए देता था ताकि वह उस युवती से विवाह कर सके।



29<sup>9</sup> फ़सल कटने के समय तुम्हें अपना प्रथम अन्न और प्रथम फल का रस मुझे देना चाहिए। इसे टालो मत। मुझे अपने पहलौठे पुत्रों को दो। 30 अपनी पहलौठी गायों तथा भेड़ों को भी मुझे देना। पहलौठे को उसकी माँ के साथ सात दिन रहने देना। उसके बाद आठवें दिन उसे मुझको देना।

31<sup>10</sup> तुम लोग मेरे विशेष लोग हो। इसलिए ऐसे किसी जानवर का माँस मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने मारा हो। उस मरे जानवर को कुत्तों को खाने दो।

23<sup>11</sup> "लोगों के विरुद्ध झूठ मत बोलो। यदि तुम न्यायालय में गवाह हो तो बुरे व्यक्ति की सहायता के लिए झूठ मत बोलो।

2<sup>12</sup> उस भौड़ का अनुसरण मत करो, जो गलत कर रहा हो। जो जन समूह बुरा कर रहा हो उसका अनुसरण करते हुए न्यायालय में उसका समर्थन मत करो।

3<sup>13</sup> न्यायालय में किसी गरीब का इसलिए पक्ष मत लो कि वह गरीब है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि वह सही है तब ही उसका समर्थन करो।

4<sup>14</sup> यदि तुम्हें कोई खोया हुआ बैल या गधा मिले तो तुम्हें उसे उसके मालिक को लौटा देना चाहिए। चाहे वह तुम्हारा शत्रु ही क्यों न हो।

5<sup>15</sup> यदि तुम देखो कि कोई जानवर इसलिए नहीं चल पा रहा है कि उस अत्याधिक बोझ ढोना पड़ रहा है तो तुम्हें उसे रोकना चाहिए और उस जानवर की सहायता करनी चाहिए। तुम्हें उस जानवर की सहायता तब भी करनी चाहिए जब वह जानवर तुम्हारे शत्रुओं में से भी किसी का हो।

6<sup>16</sup> तुम्हें, लोगों को गरीबों के प्रति अन्यायी नहीं होने देना चाहिए। उनके साथ भी अन्य लोगों के समान ही न्याय होना चाहिए।

7<sup>17</sup> तुम किसी को किसी बात के लिए अपराधी कहते समय बहुत सावधान रहो। किसी व्यक्ति पर झूठे दोष न लगाओ। किसी निर्दोष व्यक्ति को उस अपराध के दण्ड के द्वारा मत मरने दो जो उसने नहीं किया। कोई व्यक्ति जो निर्दोष की हत्या करे, दुष्ट है। और मैं उस दुष्ट व्यक्ति को क्षमा (माफ) नहीं करूँगा।

8<sup>18</sup> यदि कोई व्यक्ति गलत होने पर अपने से सहमत होने के लिए रिश्वत देने का प्रयत्न करे तो उसे मत लो। ऐसी रिश्वत न्यायाधीशों को अन्धा कर देगी जिसे वे सत्य को नहीं देख सकेंगे। रिश्वत अच्छे लोगों को झूठ बोलना सिखाएगी। 9 तुम किसी विदेशी के साथ कभी बुरा बरताव न करो। याद रखो जब तुम मिश्र देश में रहते थे तब तुम विदेशी थे।

### विशेष पर्व

10<sup>19</sup> छः वर्ष तक बीज बोओ, अपनी फ़सलों को काटो और खेत को तैयार करो। 11 किन्तु सातवें वर्ष अपनी

भूमि का उपयोग न करो। सातवाँ वर्ष भूमि के विश्राम का विशेष समय होगा। अपने खेतों में कुछ भी न बोओ। यदि कोई फ़सल वहाँ उगती है तो उसे गरीब लोगों को ले लेने दो। जो भी खाने की चीज़ें बच जायें उन्हें जंगली जानवरों को खा लेने दो। यही बात तुम्हें अपने अंगूर और जैतून के बागों के सम्बन्ध में भी करनी चाहिए।

12<sup>20</sup> छः दिन तक काम करो। तब सातवें दिन विश्राम करो। इससे तुम्हारे दासों और तुम्हारे दूसरे मजदूरों को भी विश्राम का समय मिलेगा। और तुम्हारे बैल और गधे भी आराम कर सकेंगे।

13<sup>21</sup> संकल्प करो कि तुम इन नियमों का पालन करोगे। मिथ्या देवताओं की पूजा मत करो। तुम्हें उनका नाम भी नहीं लेना चाहिए।

14<sup>22</sup> प्रति वर्ष तुम्हारे तीन विशेष पवित्र पर्व होंगे। इन दिनों तुम लोग मेरी उपासना के लिए मेरी विशेष जगह पर आओगे। 15 पहला पवित्र पर्व अखमीरी रोटी का पर्व होगा। यह वैसा ही होगा, जैसा मैंने आदेश दिया है। इस दिन तुम लोग ऐसी रोटी खाओगे जिसमें खमीर न हो। यह सात दिन तक चलेगा। तुम लोग यह आबीब के महीने में करोगे। क्योंकि यही वह समय है जब तुम लोग मिश्र से आए थे। इन दिनों कोई भी व्यक्ति मेरे सामने खाली हाथ नहीं आएगा।

16<sup>23</sup> दूसरा पवित्र पर्व कटनी का पर्व होगा। यह पवित्र पर्व ग्रीष्म के आरम्भ में, तब होगा जब तुम अपने खेतों में उगायी गई फ़सल को काटोगे।

"तीसरा पवित्र पर्व बटोरने का पर्व होगा। यह पतझड़ में होगा।\* यह उस समय होगा जब तुम अपनी सारी फ़सलें खेतों से इकट्ठा करते हो।

17<sup>24</sup> इस प्रकार प्रति वर्ष तीन बार सभी पुरुष यहोवा परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे।

18<sup>25</sup> जब तुम किसी जानवर को मारो और इसका खून बलि के रूप में भेंट चढ़ाओ तब ऐसी रोटी भेंट नहीं करो जिसमें खमीर हो। और जब तुम इस बलि के माँस को खाओ तब तुम्हें एक ही दिन में वह सारा माँस खा लेना चाहिए। अगले दिन के लिए कुछ भी माँस न बचाओ।

19<sup>26</sup> फ़सल काटने के समय जब तुम अपनी फ़सलें इकट्ठी करो तब अपनी काटी हुई फ़सल की पहली उपज अपने यहोवा परमेश्वर के भवन में लाओ।

"तुम्हें छोटी बकरी के उस माँस को नहीं खाना चाहिए जो उस बकरी की माँ के दूध में पका हो।

पतझड़ में होगा शाब्दिक "वर्ष के अन्त में।" इसका अर्थ फ़सल उगाने के मौसम की समाप्ति है।

### परमेश्वर इम्राएलियों को उनकी भूमि लेने में सहायता करेगा

20परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने एक दूत भेज रहा हूँ। यह दूत तुम्हें उस स्थान तक ले जाएगा जिसे मैंने तुम्हारे लिए तैयार किया है। यह दूत तुम्हारी रक्षा करेगा। 21दूत की आज्ञा मानो और उसका अनुसरण करो। उसके विरुद्ध विद्रोह न करो। वह दूत उन अपराधों को क्षमा नहीं करेगा जो तुम उसके प्रति करोगे। उसमें मेरी शक्ति निहित है। 22वह जो कुछ कहे उसे मानो। तुम्हें हर एक वह कार्य करना चाहिए जो मैं तुम्हें कहता हूँ। यदि तुम यह करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के विरुद्ध होऊँगा। और मैं उस हर व्यक्ति का शत्रु होऊँगा जो तुम्हारे विरुद्ध होगा।"

23परमेश्वर ने कहा, "मेरा दूत तुम्हें इस देश से होकर ले जाएगा। वह तुम्हें कई भिन्न लोगों—एमोरी, हिती, परिजी, कनानी, हिब्वी, और यबूसी के विरुद्ध कर देगा। किन्तु मैं उन सभी लोगों को नष्ट कर दूँगा।

24"उनके देवताओं को मत पूजो। उन देवताओं को झुककर कभी प्रणाम मत करो। तुम उस ढंग से कभी न रहो जिस ढंग से वे रहते हैं। तुम्हें उनकी मूर्तियों को निश्चय ही नष्ट कर देना चाहिए और तुम्हें उनके प्रस्तर पिण्डों को तोड़ देना चाहिए जो उन्हें उनके देवताओं को याद दिलाने में सहायता करती है। 25तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करनी चाहिए। यदि तुम यह करोगे तो मैं तुम्हें भरपूर रोटी और पानी का वरदान दूँगा। मैं तुम्हारी सारी बीमारियों को दूर कर दूँगा। 26तुम्हारी सभी स्त्रियाँ बच्चों को जन्म देने लायक होंगी। जन्म के समय उनका कोई बच्चा नहीं मरेगा और मैं तुम लोगों को भरपूर लम्बा जीवन प्रदान करूँगा।

27"जब तुम अपने शत्रुओं से लड़ोगे, मैं अपनी प्रबल शक्ति तुमसे भी पहले वहाँ भेज दूँगा।\* मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा। वे लोग जो तुम्हारे विरुद्ध होंगे वे युद्ध में घबरा कर भाग जाएंगे। 28मैं तुम्हारे आग-आगे बर्रे भेजूँगा वह तुम्हारे शत्रुओं को भागने के लिए विवश करेगा। हिब्वी, कनानी और हिती लोग तुम्हारा प्रदेश छोड़ कर भाग जाएंगे। 29किन्तु मैं उन लोगों को तुम्हारे प्रदेश से बाहर जाने को शीघ्रतापूर्वक विवश नहीं करूँगा। मैं यह केवल एक वर्ष में नहीं करूँगा। यदि मैं लोगों को अति शीघ्रता से बाहर जाने को विवश करूँ तो प्रदेश ही निर्जन हो जाए। तब सभी प्रकार के जंगली जानवर बढ़ेंगे और वे तुम्हारे लिए बहुत कष्टकर होंगे। 30मैं उन्हें धीरे और उस समय तक बाहर खदेड़ता रहूँगा जब तक तुम उस धरती पर फैल न जाओ और उस पर अधिकार न कर लो।

मैं ... दूँगा या मेरी शक्ति का समाचार तुमसे पहले पहुँच जाएगा और तुम्हारे शत्रु डर जाएंगे।

31"मैं तुम लोगों को लाल सागर से लेकर फरात तक का सारा प्रदेश दूँगा। पश्चिमी सीमा पलिशती सागर (भूमध्य सागर) होगा और पूर्वी सीमा अरब मरुभूमि होगी। मैं ऐसा करूँगा कि वहाँ के रहने वालों को तुम हराओ। और तुम इन सभी लोगों को वहाँ से भाग जाने के लिए विवश करोगे। 32तुम उनके देवताओं या उन लोगों में से किसी के साथ कोई समझौता नहीं करोगे। 33उन्हें अपने देश में मत रहने दो। यदि तुम उन्हें रहने दोगे तो तुम उनके जाल में फँस जाओगे। वे तुमसे मेरे विरुद्ध पाप करवाएंगे और तुम उनके देवताओं की सेवा आरम्भ कर दोगे।"

### परमेश्वर का इम्राएल से वाचा

24 परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम हारून नादाब, अबीहू और इम्राएल के सत्तर बुजुर्ग (नेता) पर्वत पर आओ और कुछ दूर से मेरी उपासना करो। 2तब मूसा अकेले यहोवा के समीप आयेगा। अन्य लोग यहोवा के समीप न आएँ, और शेष व्यक्ति पर्वत तक भी न आएँ।"

3इस प्रकार मूसा ने यहोवा के सभी नियमों और आदेशों को लोगों को बताया। तब सभी लोगों ने कहा, "यहोवा ने जिन सभी आदेशों को दिया उनका हम पालन करेंगे।"

4इसलिए मूसा ने यहोवा के सभी आदेशों को चर्म पत्र पर लिखा। अगली सुबह मूसा उठा और पर्वत की तलहटी के समीप उसने एक वेदी बनाई और उसने बारह शिलाएँ इम्राएल के बारह कबीलों के लिए स्थापित कीं। 5तब मूसा ने इम्राएल के युवकों को बलि चढ़ाने के लिए बुलाया। इन व्यक्तियों ने यहोवा को होमबलि और मेलबलि के रूप में बैल की बलि चढ़ाई।

6मूसा ने इन जानवरों के खून को इकट्ठा किया। मूसा ने आधा खून प्याले में रखा और उसने दूसरा आधा खून वेदी पर छिड़का।\*

7मूसा ने चर्म पत्र पर लिखे विशेष साक्षीपत्र को पढ़ा। मूसा ने साक्षीपत्र को इसलिए पढ़ा कि सभी लोग उसे सुन सकें और लोगों ने कहा, "हम लोगों ने उन नियमों को जिन्हें यहोवा ने हमें दिया, सुन लिया है और हम सब लोग उनके पालन करने का वचन देते हैं।"

8तब मूसा ने खून को लिया और उसे लोगों पर छिड़का। उसने कहा, "यह खून बताता है कि यहोवा ने तुम्हारे साथ विशेष साक्षीपत्र स्थापित किया। ये नियम जो यहोवा ने दिए हैं वे साक्षीपत्र को स्पष्ट करते हैं।"

9तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इम्राएल के सत्तर बुजुर्ग (नेता) ऊपर पर्वत पर चढ़े। 10पर्वत पर इन

मूसा ... छिड़का खून यहोवा और लोगों के बीच की वाचा की पुष्टि के लिये प्रयोग में आता था। खून वेदी पर यह दिखाने के लिये डाला जाता था कि यहोवा वाचा में साथ है।

लोगों ने इज़्राएल के परमेश्वर को देखा। परमेश्वर किसी ऐसे आधार पर खड़ा था जो नीलमणि सा दिखता था ऐसा निर्मल जैसा आकाश। 11 इज़्राएल के सभी नेताओं ने परमेश्वर को देखा, किन्तु परमेश्वर ने उन्हें नष्ट नहीं किया।\* तब उन्होंने एक साथ खाया और पिया।”

### मूसा को पत्थर की पट्टियाँ मिलीं

12 यहोवा ने मूसा से कहा, “मेरे पास पर्वत पर आओ। मैंने अपने उपदेशों और आदेशों को दो समतल पत्थरों पर लिखा है। ये उपदेश लोगों के लिए हैं। मैं इन समतल पत्थरों को तुम्हें दूँगा।”

13 इसलिए मूसा और उसका सहायक यहोशू परमेश्वर के पर्वत तक गए। 14 मूसा ने चुने हुए बुजुर्गों से कहा, “हम लोगों की यहाँ प्रतीक्षा करो, हम तुम्हारे पास लौटेंगे। जब तक मैं अनुपस्थित रहूँ, हारून और हर आप लोगों के अधिकारी होंगे। यदि किसी को कोई समस्या हो तो वह उनके पास जाए।”

### मूसा का परमेश्वर से मिलना

15 तब मूसा पर्वत पर चढ़ा और बादल ने पर्वत को ढक लिया। 16 यहोवा की दिव्यज्योति सीने पर्वत पर उतरी। बादल ने छः दिन तक पर्वत को ढके रखा। सातवें दिन यहोवा, बादल में से मूसा से बोला। 17 इज़्राएल के लोग यहोवा की दिव्यज्योति को देख सकते थे। यह पर्वत की चोटी पर दीप्त प्रकाश की तरह थी। 18 तब मूसा बादलों में और ऊपर पर्वत पर चढ़ा। मूसा पर्वत पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

### पवित्र वस्तुओं के लिए भेंट

25 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 इज़्राएल के लोगों से मेरे लिए भेंट लाने को कहो। हर एक व्यक्ति अपने मन में निश्चय करे कि वह मुझे इन वस्तुओं में से क्या अर्पित करना चाहता है। इन उपहारों को मेरे लिए अर्पित करो। 3 इन वस्तुओं की सूची यह है जिन्हें तुम लोगों से स्वीकार करोगे: सोना, चाँदी, काँसा, 4 नीला बैंगनी और लाल सूत, सुन्दर रेशमी कपड़ा, बकरियों के बाल, शलाल रंग से रंगा भेड़ का चमड़ा, सुइयों के चमड़े; 5 बबूल की लकड़ी; 6 दीपक में जलाने का तेल, धूप के लिए सुगन्धित द्रव्य, अभिषेक के तेल के लिए भीनी सुगन्ध देने वाले मसाले। 7 गोमेदक रत्न तथा अन्य मूल्यवान रत्न भी जो याजकों के पहनने की एपोद और न्याय की थैली पर जड़े जायें, अर्पित करो।”

**परमेश्वर ... किया** बाइबल कहती है कि यहोवा अदृश्य है। उसे देखा नहीं जा सकता। किन्तु यहोवा चाहता था कि ये प्रमुख उसे किसी विशेष प्रकार से देख सकें सो यहोवा ने उन्हें अपना दर्शन करने दिया।

### पवित्र तम्बू

8 परमेश्वर ने यह भी कहा, “लोग मेरे लिए एक पवित्र तम्बू बनाएँगे। तब मैं उनके साथ रह सकूँगा। 9 मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि पवित्र तम्बू कैसा दिखाई पड़ना चाहिए। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि इसमें सभी चीज़ें कैसी दिखाई देनी चाहिए। जैसा मैंने दिखाया है हर एक चीज़ ठीक वैसा ही बनाओ।

### साक्षीपत्र का सन्दूक

10 बबूल की लकड़ी का उपयोग करके एक विशेष सन्दूक बनाओ। यह सन्दूक निश्चय ही पैतालिस इंच\* लम्बा, सताईस इंच\* चौड़ा और सताईस इंच ऊँचा होना चाहिए। 11 सन्दूक को भीतर और बाहर से ढकने के लिए शुद्ध सोने का उपयोग करो। सन्दूक के कोनों को सोने से मढ़ो। 12 सन्दूक को उठाने के लिए सोने के चार कड़े बनाओ। सोने के कड़ों को चारों कोनों पर लगाओ। दोनों तरफ़ दो-दो कड़े हों। 13 तब सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियाँ बनाओ। ये बल्लियाँ बबूल की लकड़ी की बनी हो और सोने से मढ़ी होनी चाहिए। 14 सन्दूक के बगलों के कोनों पर लगे कड़ों में इन बल्लियों को डाल देना। इन बल्लियों का उपयोग सन्दूक को ले जाने के लिए करो। 15 ये बल्लियाँ सन्दूक के कड़ों में सदा पड़ी रहनी चाहिए। बल्लियों को बाहर न निकालो।”

16 परमेश्वर ने कहा, “मैं तुम्हें साक्षीपत्र दूँगा। इस साक्षीपत्र को इस सन्दूक में रखो। 17 तब एक ढक्कन बनाओ। इसे शुद्ध सोने का बनाओ। इसे पैतालिस इंच लम्बा और सताईस इंच चौड़ा बनाओ। 18 तब दो करूब बनाओ और उन्हें ढक्कन के दोनों सिरों पर लगाओ। इन करूबों को बनाने के लिए स्वर्ण पत्रों का उपयोग करो। 19 एक करूब को ढक्कन के एक सिर पर लगाओ तथा दूसरे को दूसरे सिर पर। करूब और ढक्कन को परस्पर जोड़ कर के एक इकाई के रूप में बनाया जाये। 20 करूब एक दूसरे के आमने-सामने होने चाहिए। करूबों के मुख ढक्कन की ओर देखते हुए होने चाहिए। करूबों के पंख ढक्कन पर फैले हों।

21 मैंने तुमको साक्षीपत्र को जो प्रमाण दिया है उसे साक्षीपत्र के सन्दूक में रखो और विशेष ढक्कन से सन्दूक को बन्द करो। 22 जब मैं तुमसे मिलूँगा तब मैं करूबों के बीच से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के विशेष ढक्कन पर हैं, बात करूँगा। मैं अपने सभी आदेश इज़्राएल के लोगों को उसी स्थान से दूँगा।

**पैतालिस इंच** शाब्दिक “ढाई हाथा”

**सताईस इंच** शाब्दिक “डेढ़ हाथा”

### विशेष रोटी की मेज़

23“बबूल की लकड़ी का एक मेज बनाओ। मेज छत्तीस इंच\* लम्बा अट्टारह इंच चौड़ा और सताईस इंच ऊँचा होना चाहिए। 24मेज को शुद्ध सोने से मढ़ो और उसके चारों ओर सोने की झालर लगाओ। 25तब तीन इंच चौड़ा सोने का चौखरा मेज के ऊपर चारों ओर जड़ दो। और उसके चारों ओर सोने की झालर लगाओ। 26तब सोने के चार कड़े बनाओ और मेज के चारों कोनों पर पायों के पास लगाओ। 27हर एक पाए पर एक कड़ा लगा दो। जो मेज के ऊपर की चारों ओर की सजावट के समीप हो। इन कड़ों में मेज को ले जाने के लिए बनी बल्लियाँ फँसी होंगी। 28बल्लियों को बनाने के लिए बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और उन्हें सोने से मढ़ो। बल्लियाँ मेज को ले जाने के लिए हैं। 29पात्र, तवे, मर्तबान और अर्ध के लिए कटोरे—इन सबको शुद्ध सोने का बनाना। 30विशेष रोटी मेज पर मेरे सम्मुख रखो। यह सदैव मेरे सम्मुख वहाँ रहनी चाहिए।

### दीपाधार

31“तब तुम्हें एक दीपाधार बनाना चाहिए। दीपाधार के हर एक भाग को बनाने के लिए शुद्ध सोने के पत्र तैयार करो। सुन्दर दिखने के लिए दीप पर फूल बनाओ। ये फूल, इनकी कलियाँ और पंखुडियाँ शुद्ध सोने की बनी होनी चाहिए और ये सभी चीज़ें एक ही में जुड़ी हुई होनी चाहिए।

32“दीपाधार की छः शाखाएँ होनी चाहिए। तीन शाखाएँ एक ओर और तीन शाखाएँ दूसरी ओर होनी चाहिए। 33हर शाखा पर बादाम के आकार के तीन प्याले होने चाहिए। हर प्याले के साथ एक कली और एक फूल होना चाहिए। 34और स्वयं दीपाधार पर बादाम के फूल के आकार के चार और प्याले होने चाहिए। इन प्यालों के साथ भी कली और फूल होने चाहिए। 35दीपाधार से निकलने वाली छः शाखाएँ दो दो के तीन भागों में बटी होनी चाहिए। हर एक दो शाखाओं के जोड़े के नीचे एक एक कली बनाओ जो दीपाधार से निकलती हो। 36ये सभी शाखाएँ और कलियाँ दीपाधार के साथ एक इकाई बननी चाहिए। और हर एक चीज़ शुद्ध सोने से तैयार की जानी चाहिए। 37तब सात छोटे दीपक दीपाधार पर रखे जाने के लिए बनाओ। ये दीपक दीपाधार के सामने के स्थान को प्रकाश देंगे। 38दीपक की बलियाँ बुझाने के पात्र और तश्तरियाँ शुद्ध सोने के बनाने चाहिए। 39पचहत्तर पौंड\* शुद्ध सोने का उपयोग दीपाधार और इसके साथ की सभी चीज़ों को बनाने में करें। 40सावधानी

के साथ हर एक चीज़ ठीक-ठीक उसी ढँग से बनायी जाये जैसी मैंने पर्वत पर तुम्हें दिखाई है।”

### पवित्र तम्बू

26 यहोवा ने मूसा से कहा, “पवित्र तम्बू दस कनातों से बनाओ। इन कनातों को अच्छे रेशम तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों से बनाओ। किसी कुशल कारीगर को चाहिए कि वह करूबों को पंख सहित कनातों पर काढ़े। 2हर एक कनात को एक बराबर बनाओ। हर एक कनात चौदह गज़\* लम्बी और दो गज़\* चौड़ी होनी चाहिए। 3सभी कनातों को दो भागों में सीओ। एक भाग में पाँच कनातों को एक साथ सीओ और दूसरे भाग में पाँच को एक साथ। 4आखिरी कनात के सिरे के नीचे छल्ले बनाओ। इन छल्लों को बनाने के लिए नीला कपड़ा उपयोग में लाओ। कनातों के दोनों भागों में एक और नीचे छल्ले होंगे। 5पहले भाग की आखिरी कनात में पचास छल्ले होंगे और दूसरे भाग की आखिरी कनात में पचास। 6तब पचास सोने के कड़े छल्लों को एक साथ मिलाने के लिए बनाओ। यह कनातों को इस प्रकार जोड़ेंगे कि पवित्र तम्बू एक ही हो जायेगा।

7“तब तुम दूसरा तम्बू बनाओगे जो पवित्र तम्बू को ढकेगा। इस तम्बू को बनाने के लिए बकरियों के बाल से बनी ग्यारह कनातों का उपयोग करो। 8ये सभी कनातों एक बराबर होनी चाहिए। वे पन्द्रह गज़\* लम्बी और दो गज़ चौड़ी होनी चाहिए। 9एक भाग में पाँच कनातों को एक साथ सीओ तब बाकी छः कनातों को दूसरे भाग में एक साथ सीओ। छठी कनात का उपयोग तम्बू के सामने के पर्दे के लिए करो। इसे इस प्रकार लपेटे कि यह द्वार की तरह खुले। 10एक भाग की आखिरी कनात के सिरे पर पचास छल्ले बनाओ, ऐसा ही दूसरे भाग की आखिरी कनात के लिए करो। 11तब पचास काँसे के कड़े बनाओ। इन काँसे के कड़ों का उपयोग छल्लों को एक साथ जोड़ने के लिए करो। ये कनातों को एक साथ तम्बू के रूप में जोड़ेंगे। 12ये कनातों पवित्र तम्बू से अधिक लम्बी होंगी। इस प्रकार अन्त के कनात का आधा हिस्सा तम्बू के पीछे किनारों के नीचे लटका रहेगा।

13“वहाँ अट्टारह इंच\* कनात तम्बू के बगलों में निचले किनारों से लटकती रहेगी। यह तम्बू को पूरी तरह ढक लेगी। 14बाहरी आवरण को ढकने के लिए दो अन्य पर्दे बनाओ। एक लाल रंगे मेड़े के चमड़े से

चौदह गज़ शाब्दिक “अट्टाइस हाथा।”

दो गज़ शाब्दिक “चार हाथा।”

पन्द्रह गज़ शाब्दिक “तीस हाथा।”

अट्टारह इंच शाब्दिक “एक हाथा।”

छत्तीस इंच शाब्दिक “दो हाथा।”

पचहत्तर पौंड शाब्दिक “एक किवकार।”

बनाना चाहिए तथा दूसरा पर्दा सुइसों के चमड़े का बना होना चाहिए।

15“तम्बू के सहारे के लिए बबूल की लकड़ी के तख्ते बनाओ। 16तख्ते पन्द्रह फुट\* लम्बे और सत्ताईस इंच चौड़े होने चाहिए। 17हर तख्ता एक जैसा होना चाहिए। हर एक तख्ते के तले में\* उन्हें जोड़ने के लिए साथ-साथ दो खूंटियाँ होनी चाहिए। 18तम्बू के दक्षिणी भाग के लिए बीस तख्ते बनाओ। 19ढाँचों के ठीक नीचे चाँदी के दो आधार हर एक तख्ते के लिए होने चाहिए। इसलिए तुम्हें तख्तों के लिए चाँदी के चालीस आधार बनाने चाहिए। 20तम्बू के उत्तरी भाग के लिए बीस तख्ते और बनाओ। 21इन तख्तों के लिए भी चाँदी के चालीस आधार बनाओ, अर्थात् एक तख्ते के लिए दो आधार। 22तुम्हें तम्बू के पश्चिमी छोर के लिए छः और तख्ते बनाने चाहिए। 23दो तख्ते पिछले कोनों के लिए बनाओ। 24कोनों के दोनों तख्ते एक साथ जोड़ देने चाहिए। तले में दोनों तख्तों की खूंटियाँ चाँदी के एक ही आधार में लगेंगी, और ऊपर धातु का एक छल्ला दोनों तख्तों को एक साथ रखेगा। 25इस प्रकार सब मिलाकर आठ तख्ते तम्बू के सिरे के लिए होंगे, और हर तख्ते के नीचे दो आधारों के होने से सोलह चाँदी के आधार पश्चिमी छोर के लिए होंगे।

26“बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और तम्बू के तख्तों के लिए कुण्डियाँ बनाओ। तम्बू के पहले भाग के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी। 27और तम्बू के दूसरे भाग के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी। और तम्बू के पश्चिमी भाग के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी अर्थात् तम्बू के पीछे। 28पाँचों कुण्डियों के बीच की कुण्डी तख्तों के मध्य में होनी चाहिए। यह कुण्डी तख्तों के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचनी चाहिए।\* 29तख्तों को सोने से मढ़ो। और तख्तों की कुण्डियों को फँसाने के लिए कड़े बनवाओ। ये कड़े भी सोने के ही बनने चाहिए। कुण्डियों को भी सोने से मढ़ो। 30पवित्र तम्बू को तुम उसी ढंग की बनाओ जैसा मैंने तुम्हें पर्वत पर दिखाया था।

### पवित्र तम्बू का भीतरी भाग

31“सन के अच्छे रेशों का उपयोग करो और तम्बू के भीतरी भाग के लिए एक विशेष पर्दा बनाओ। इस पर्दे को नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े से बनाओ। करूब के प्रतिरूप कपड़े में काढो। 32बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाओ। चारों खम्भों पर सोने की बनी

खूंटियाँ लगाओ। खम्भों को सोने से मढ़ दो। खम्भों के नीचे चाँदी के चार आधार रखो। तब सोने की खूंटियों में पर्दा लटकाओ। 33खूंटियों पर पर्दे को लटकाने के बाद, साक्षीपत्र के सन्दूक को पर्दे के पीछे रखो। यह पर्दा पवित्र स्थान को सर्वाधिक पवित्र स्थान से अलग करेगा। 34सर्वाधिक पवित्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक पर ढक्कन रखो। 35पवित्र स्थान में पर्दे के दूसरी ओर विशेष मेज़ को रखो। मेज़ तम्बू के उत्तर में होनी चाहिए। तब दीपाधार को तम्बू के दक्षिण में रखो। दीपाधार मेज़ के ठीक सामने होगा।

### पवित्र तम्बू का मुख्य द्वार

36“तब तम्बू के मुख्य द्वार के लिए एक पर्दा बनाओ। इस पर्दे को बनाने के लिए नीले बैंगनी, लाल कपड़े तथा सन के उत्तम रेशों का उपयोग करो। और कपड़े में चित्रों की कढ़ाई करो। 37द्वार के इस पर्दे के लिए सोने के छल्ले बनवाओ। सोने से मढ़े बबूल की लकड़ी के पाँच खम्भे बनाओ और पाँचों खम्भों के लिए काँसे के पाँच आधार बनाओ।”

### भेंट जलाने के लिए वेदी

27 यहोवा ने मूसा से कहा, “बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और एक वेदी बनाओ। वेदी वर्गाकार होनी चाहिए। यह साढ़े सात फुट\* लम्बी साढ़े सात फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट\* ऊँची होनी चाहिए। 2वेदी के चारों कोनों पर सींग बनाओ। हर एक सींग को इसके कोनों से ऐसे जोड़ो कि सभी एक हो जाये तब वेदी को काँसे से मढ़ो।

3“वेदी पर काम आने वाले सभी उपकरणों और तश्तरियों को काँसे का बनाओ। काँसे के बर्तन, पल्टे, कटोरे, काँटे और तसले बनाओ। ये वेदी से राख को निकालने में काम आएंगे। 4जाल के जैसी काँसे की एक बड़ी जाली बनाओ। जाली के चारों कोनों पर काँसे के कड़े बनाओ। 5जाली को वेदी की परत के नीचे रखो। जाली वेदी के भीतर बीच तक रहेगी। 6वेदी के लिए बबूल की लकड़ी के बल्ले बनाओ और उन्हें काँसे से मढ़ो। 7वेदी के दोनों ओर लगे कुड़ों में इन बल्लों को डालो। इन बल्लों को वेदी को ले जाने के लिए काम में लो। 8वेदी भीतर से खोखली रहेगी और इसकी अगल-बगल तख्तों की बनी होगी। वेदी वैसी ही बनाओ जैसी मैंने तुमको पर्वत पर दिखाई थी।

### पवित्र तम्बू का आँगन

9“तम्बू के चारों ओर कनानों की एक दीवार बनाओ। यह तम्बू के लिए एक आँगन बनाएगी। दक्षिण की

साढ़े सात फुट शाब्दिक “पाँच हाथा”

साढ़े चार फुट शाब्दिक “तीन हाथा”

पन्द्रह फुट शाब्दिक “दस हाथा”

तले में धातु के आधार पर बने छेदों में ये खूंटियाँ बैठाई जाएंगी जिन्हसे तख्ते कनानों के लिए खड़े ढाँचे बन सकें।

यह कुण्डी ... चाहिए या मध्यवर्ती कुण्डी तख्तों से होती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक होनी चाहिए।

ओर कनातों की यह दीवार पचास गज\* लम्बी होनी चाहिए। ये कनातें सन के उत्तम रेशों से बनी होनी चाहिए। 10बीस खम्भों और उनके नीचे बीस काँसे के आधारों का उपयोग करो। खम्भों के छल्लें और पर्द की छड़े\* चाँदी की बननी चाहिए। 11उत्तर की ओर लम्बाई उतनी ही होनी चाहिए जितनी दक्षिण की ओर थी। इसमें पचास गज लम्बी पर्दों की दीवार, बीस खम्भे और बीस काँसे के आधार होने चाहिए। खम्भे और उनके पर्दों की छड़ों के छल्ले चाँदी के बनने चाहिए।

12“आँगन के पश्चिमी सिरे पर कनातों की एक दीवार पच्चीस गज लम्बी होनी चाहिए। वहाँ उस दीवार के साथ दस खम्भे और दस आधार होने चाहिए। 13आँगन का पूर्वी सिरा भी पच्चीस गज लम्बा होना चाहिए। 1415यह पूर्वी सिरा आँगन का प्रवेश द्वार है। प्रवेश द्वार की हर एक ओर की कनातें साढ़े सात गज लम्बी होनी चाहिए। उस ओर तीन खम्भे और तीन आधार होने चाहिए।

16“एक कनात दस गज\* लम्बी आँगन के प्रवेश द्वार को ढकने के लिए बनाओ। इस कनात को सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से बनाओ। इन कनातों पर चित्रों को काढ़ो। उस पर्दे के लिए चार खम्भे और चार आधार होने चाहिए। 17आँगन के चारों ओर के सभी खम्भे चाँदी की छड़ों से ही जोड़े जाने चाहिए। \* खम्भों के छल्ले चाँदी के बनाने चाहिए और खम्भों के आधार काँसे के होने चाहिए। 18आँगन पचास गज लम्बा और पच्चीस गज\* चौड़ा होना चाहिए। आँगन के चारों ओर की दीवार साढ़े सात फुट ऊँची होनी चाहिए। पर्दा सन के उत्तम रेशों का बना होना चाहिए। सभी खम्भों के नीचे के आधार काँसे के होने चाहिए। 19सभी उपकरण, तम्बू की खूँटियाँ, और तम्बू में लगी हर एक चीज़ काँसे की ही बननी चाहिए। और आँगन के चारों ओर के पर्दों के लिए खूँटियाँ काँसे की ही होनी चाहिए।

### दीपक के लिए तेल

20“इज़्राएल के लोगों को सर्वात्म जैतून का तेल लाने का आदेश दो। इस तेल का उपयोग हर एक सन्ध्या को जलने वाले दीपक के लिए करो। 21हारून और उसके पुत्र प्रकाश का प्रबन्ध करने का कार्य संभालेंगे। वे

पचास गज शाब्दिक “सौ हाथा”

छड़े ये या तो खम्भों को एक साथ जोड़ने वाली छड़े थी या पर्द में सिले कड़े थे।

दस गज शाब्दिक “बीस हाथा”

आँगन ... चाहिए ये सम्भवतः पर्द की छड़े हैं जिनका वर्णन सँख्या दस में हुआ है।

पच्चीस गज शाब्दिक “पचास हाथा।”

मिलापवाले तम्बू के पहले कमरे में जाएंगे। यह कमरा साक्षीपत्र के सन्दूक वाले कमरे के बाहर उस पर्दे के सामने है जो दोनों कमरों को अलग करता है। वे इसका ध्यान रखेंगे कि इस स्थान पर यहोवा के सामने दीपक सन्ध्या, से प्रातः तक लगातार जलते रहेंगे। इज़्राएल के लोग और उनके वंशज इस नियम का पालन सदैव करेंगे।”

### याजकों के वस्त्र

28“अपने भाई हारून और उसके पुत्रों नादाब, अबीहू, एलिआजार और ईतामर को इज़्राएल के लोगों में से अपने पास आने को कहो। ये व्यक्ति मेरी सेवा याजक के रूप में करेंगे।

2“अपने भाई हारून के लिए विशेष वस्त्र बनाओ। ये वस्त्र उसे आदर और गौरव देंगे। श्लोगों में ऐसे कुशल कारीगर हैं जो ये वस्त्र बना सकते हैं। मैंने इन व्यक्तियों को विशेष बुद्धि दी है। उन लोगों से हारून के लिए वस्त्र बनाने को कहो। ये वस्त्र बताएंगे कि वह मेरी सेवा विशेष रूप से करता है। तब वह मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकता है। 4कारीगरों को इन वस्त्रों को बनाना चाहिए: न्याय का शैला एपोद बिना बाँह की विशेष एपोद एक नीले रंग का लबादा, एक सफ़ेद बुना चोगा, सिर को ढकने के लिये एक साफ़ा और एक पटुका लोगों को ये विशेष वस्त्र तुम्हारे भाई हारून और उसके पुत्रों के लिए बनवाने चाहिए। तब हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं। श्लोगों से कहो कि वे सुनहरे धागों, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े उपयोग में लाएं।

### एपोद और पटुका

6“एपोद बनाने के लिए सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग करो। इस विशेष एपोद को कुशल कारीगर बनाएंगे। 7एपोद के हर एक कंधे पर पट्टी लगी होगी। कंधे की ये पट्टियाँ एपोद के दोनों कोनों पर बंधी होंगी।

8“कारीगर बड़ी सावधानी से एपोद पर बांधने के लिए एक पटुका बुनेंगे। (यह पटुका उन्हीं चीज़ों का होगा जिनका एपोद, सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों और बैंगनी कपड़े।)

9“तुम्हें दो गोमेदक रत्न लेने चाहिए। इन नगों पर इज़्राएल के बारह पुत्रों के नाम खोदो। 10छः नाम एक नग पर और छः नाम दूसरे नग पर। नामों को सबसे बड़े से सबसे छोटे के क्रम में लिखो। 11इज़्राएल के पुत्रों के नामों को इन नगों पर खुदवाओ। यह उसी प्रकार करो जिस प्रकार वह व्यक्ति जो मुहरें बनाता है, शब्द और चित्रों को खोदता है। नग के चारों ओर सोना लगाओ जिससे उन्हें एपोद के कंधों पर टँका जा सके।

12तब एपोद के हर एक कंधे के पट्टी पर इन दोनों नगों को जड़ो। हारून यहोवा के सम्मुख जब खड़ा होगा, इस विशेष एपोद को पहनेगा और इम्राएल के पुत्रों के नाम वाले दोनों नग एपोद पर होंगे। यह इम्राएल के लोगों को याद रखने में यहोवा की सहायता करेगा। 13अच्छा सोना ही नगों को एपोद पर ढाँकने के लिए उपयोग में लाओ। 14रस्सी की तरह एक में शुद्ध सोने की जंजीरें बटो। सोने की ऐसी दो जंजीरें बनाओ और सोने के जड़ाव के साथ इन्हें बांधो।

### सीनाबन्द

15“महायाजक के लिए सीनाबन्द बनाओ। कुशल कारीगर इस सीनाबन्द को वैसे ही बनाए जैसे एपोद को बनाया। वे सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग करें। 16सीनाबन्द नौ इंच लम्बा और नौ इंच \* चौड़ा होना चाहिए। चौकोर जेब बनाने के लिए इसकी दो तह करनी चाहिए। 17सीनाबन्द पर सुन्दर रत्नों की चार पक्तियाँ जड़ो। रत्नों की पहली पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और एक मर्कत मणि होनी चाहिए। 18दूसरी पंक्ति में फिरोज़ा, नीलम तथा पन्ना होना चाहिए। 19तीसरी पंक्ति में धूम्रकान्त, अक्रीक और याकूत लगना चाहिए। 20चौथी पंक्ति में लहसुनिया, गोमेदक रत्न और कपिश मणि लगानी चाहिए। सीनाबन्द पर इन्हें लगाने के लिए इन्हें सोने में जड़ो। 21सीनाबन्द पर बारह रत्न होंगे जो इम्राएल के बारह पुत्रों का एक प्रतिनिधित्व करेंगे। हर एक नग पर इम्राएल के पुत्रों \* में से एक-एक का नाम लिखो। मुहर की तरह हर एक नग पर इन नामों को खोदो।

22“सीनाबन्द के चारों ओर जाती हुई सोने की जंजीरें बनाओ। ये जंजीर बटी हुई रस्सी की तरह होंगी। 23दो सोने के छल्ले बनाओ और इन्हें सीनाबन्द के दोनों कोनों पर लगाओ। 24(दोनों सुनहरी जंजीरों को सीनाबन्द में दोनों में लगे छल्लों में डालो।) 25सोने की जंजीरों को दूसरे सिरों को कंधे की पट्टियों पर के जड़ाव में लगाओ। जिससे वे एपोद के साथ सोने पर कसे रहें। 26दो अन्य सोने के छल्ले बनाओ और उन्हें सीनाबन्द के दूसरे दोनों कोनों पर लगाओ। यह सीनाबन्द का भीतरी भाग एपोद के समीप होगा। 27दो और सोने के छल्ले बनाओ और उन्हें कंधे की पट्टी के तले एपोद के सामने लगाओ। सोने के छल्लों को एपोद की पेट्टी के समीप ऊपर के स्थान पर लगाओ। 28सीनाबन्द के छल्लों को एपोद के छल्लों से जोड़ो। उन्हें पेट्टी से एक

नौ इंच शाब्दिक “बालिस्त” अंगूठे के सिर से छोटी अँगुली के सिर तक की दूरी।

इम्राएल के पुत्रों अर्थात् बारह वंशों के नाम, ये नाम इम्राएल (याकूब) के बारह पुत्रों के नाम पर ही रखे गए थे।

साथ जोड़ने के लिए नीली पट्टियों का उपयोग करो। इस प्रकार सीनाबन्द एपोद से अलग नहीं होगा।

29“हारून जब पवित्र स्थान में प्रवेश करे तो उसे इस सीनाबन्द को पहने रहना चाहिए। इस प्रकार इम्राएल के बारहों पुत्रों के नाम उसके मन में रहेंगे और यहोवा को सदा ही उन लोगों की याद दिलाई जाती रहेगी। 30ऊरीम और तुम्मीम को सीनाबन्द में रखो। हारून जब यहोवा के सामने जाएगा तब ये सभी चीज़ें उसे याद होंगी। इसलिए हारून जब यहोवा के सामने होगा तब वह इम्राएल के लोगों का न्याय करने का साधन सदा अपने साथ रखेगा।

### याजक के अन्य वस्त्र

31“एपोद के नीचे पहनने के लिए एक चोगा बनाओ। चोगा केवल नीले कपड़े का बनाओ। 32सिर के लिए इस कपड़े के बीचोबीच एक छेद बनाओ। इस छेद के चारों ओर गोट लगाओ जिससे यह फटे नहीं। 33नीले, लाल और बैंगनी कपड़े के फुँदने बनाओ जो अनार के आकार के हों। इन अनारों को चोगे के निचले सिरों में लटकाओ और उनके बीच सोने की घंटियाँ लटकाओ। 34इस प्रकार चोगे के निचले सिरों के चारों ओर क्रमशः एक अनार और एक सोने की घंटी होगी। 35हारून तब इस चोगे को पहनेगा जब वह याजक के रूप में सेवा करेगा और यहोवा के सामने पवित्र स्थान में जाएगा। जब वह पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा और वहाँ से निकलेगा तब ये घंटियाँ बजेंगी। इस प्रकार हारून मरेगा नहीं।\*

36“शुद्ध सोने का एक पतरा बनाओ। सोने में मुहर की तरह शब्द लिखो। ये शब्द लिखो: “यहोवा के लिए पवित्र” 37सोने के इस पत्रे को उस पगड़ी पर लगाओ जो सिर को ढकने के लिए पहनी गयी है। उस पगड़ी से सोने के पत्रे को बाँधने के लिए नीले कपड़े की पट्टी का उपयोग करो। 38हारून यह दर्शाने के लिए इसे अपने ललाट पर पहनेगा कि इम्राएल के लोगों ने अपने अपराधों के लिए जो पवित्र भेंट यहोवा को अर्पित की हैं उनके अपराधों को प्रतीक रूप में हारून वहन कर रहा है। हारून जब भी यहोवा के सामने जायेगा ये सदा पहने रहेगा, ताकि यहोवा उन्हें स्वीकार कर ले।

39“लबादा बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों को उपयोग में लाओ, और उस कपड़े को बनाने के लिए भी सन के उत्तम रेशों को उपयोग में लाओ जो सिर को ढकता है, इसमें कड़ाई कड़ी होनी चाहिए। 40लबादा, पटुका और पगड़ियाँ हारून के पुत्रों के लिए भी बनाओ, ये उन्हें गौरव तथा आदर देंगे। 41ये पोशाक अपने भाई

इस ... नहीं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है। इससे पता चलता रहेगा कि हारून जीवित है।

हारून और उसके पुत्रों को पहनाओ। उसके बाद जैतून का तेल उनके सिर पर यह दिखाने के लिए डालो कि वे याजक हैं, यह उन्हें पवित्र बनायेगा। तब वे मेरी सेवा याजक के रूप में करेंगे।

42“उन के वस्त्रों को बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों का उपयोग करो जो विशेष याजक के वस्त्रों के नीचे पहनने के लिए होंगे। ये अधोवस्त्र कमर से जाँघ तक पहने जाएंगे। 43हारून और उसके पुत्रों को इन वस्त्रों को ही पहनना चाहिए जब कभी वे मिलापवाले तम्बू में जाएं। उन्हें इन्हें वस्त्रों को पहनना चाहिए जब कभी वे पवित्र स्थान में याजक के रूप में सेवा के लिए वेदी के समीप आएँ। यदि वे इन पोशाकों को नहीं पहनेंगे, तो वे अपराध करेंगे और उन्हें मरना होगा। यह ऐसा नियम होना चाहिए जो हारून और उसके बाद उसके वंश के लोगों के लिए सदा के लिए बना रहेगा।”

### याजकों की नियुक्ति का उत्सव

29“अब मैं तुम्हें बताऊँगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप में करते हैं, यह दिखाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। एक दोष रहित बछड़ा और दो दोष रहित मेढ़े लाओ। 2जिसमें खमीर न मिलाया गया हो ऐसा महीन आटा लो और उससे तीन तरह की रोटियाँ बनाओ—पहली बिना खमीर की सादी रोटी। दूसरी तेल का मोमन डली रोटी और तीसरी वैसे ही आटे की छोटी पतली रोटी बनाकर उस पर तेल चुपड़ो। 3इन रोटियों को एक टोकरी में रखो और फिर इस टोकरी को हारून और उसके पुत्रों को दो, साथ ही वह बछड़ा और दोनों मेढ़े भी दो। 4“तब हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार के सामने लाओ, तब उन्हें पानी से नहलाओ। 5हारून की विशेष पोशाक उसे पहनाओ, लबादा, चोगा और एपोदा। फिर उस पर सीनाबन्द, फिर विशेष पटुका बांधो 6और फिर पगड़ी उसके सिर पर बाँधो। सोने की पट्टी को जो एक विशेष मुकुट के जैसी है पगड़ी के चारों ओर बाँधो 7और जैतून का तेल डालो। जो बताएगा कि हारून इस काम के लिए चुना गया है।

8“तब उसके पुत्रों को उस स्थान पर लाओ और उन्हें चोगे पहनाओ। 9तब उनकी कमर के चारों ओर पटुके बाँधो। उन्हें पहनने को पगड़ी दो। उस समय से वे याजक के रूप में काम करना आरम्भ करेंगे। वे उस नियम के अनुसार जो सदा रहेगा, याजक होंगे। यही ढंग है जिससे तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाओगे।

10“तब मिलापवाले तम्बू के सामने के स्थान पर बछड़े को लाओ। हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे बछड़े के सिर पर हाथ रखें। 11तब उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने मार

डालो। 12तब बछड़े का कुछ खून लो और वेदी तक जाओ। अपनी उँगली से वेदी पर लगे सींगों पर कुछ खून लगाओ। बचा हुआ सारा खून नीचे वेदी पर डालो। 13तब बछड़े में से सारी चर्बी निकालो। तब कलेजे के चारों ओर की चर्बी और दोनों गुर्दे और उसकी चारों ओर की चर्बी लो। इस चर्बी को वेदी पर जलाओ। 14तब बछड़े के माँस, उसके चमड़े, और उसके दूसरे अंगों को लो और अपने डेरे से बाहर जाओ। इन चीजों को डेरे के बाहर जलाओ। यह भेंट है जो याजकों के पापों को दूर करने के लिए चढ़ाई जाती है।

15“तब हारून और उसके पुत्रों से मेढ़े के सिर पर हाथ रखने को कहो। 16तब उस मेढ़े को मार डालो और उसके खून को लो। खून को वेदी के चारों ओर छिड़को। 17तब मेढ़े को कई टुकड़ों में काटो। मेढ़े के भीतर के सभी अंगों और पैरों को धोओ। इन चीजों को सिर तथा मेढ़े के अन्य टुकड़ों के साथ रखो। 18तब वेदी पर इन को जलाओ। यह वह विशेष भेंट है जो जलाई जाती है। यह होमबलि यहोवा के लिए है। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। यह ऐसी होमबलि है जो यहोवा को आग के द्वारा दी जाती है।

19“हारून और उसके पुत्रों को दूसरे मेढ़े पर हाथ रखने को कहो। 20उस मेढ़े को मारो और उसका कुछ खून लो। उस खून को हारून और उसके पुत्रों के दाएँ कान के निचले भाग में लगाओ। उनके दाएँ हाथ के अंगुठों पर भी कुछ खून लगाओ और कुछ खून उनके दाएँ पैर के अंगुठों पर लगाओ। बाकी के खून को वेदी के चारों ओर छिड़को। 21तब वेदी पर छिड़के खून में से कुछ खून लो। इसे अभिषेक के तेल में मिलाओ और हारून तथा उसके वस्त्रों पर छिड़को और उसके पुत्रों और उन उनके वस्त्रों पर भी छिड़को। यह बताएगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप से करते हैं। और यह सूचित करेगा कि उनके वस्त्र विशेष अवसर पर ही काम में आते हैं।

22“तब उस मेढ़े से चर्बी लो। (यही मेढ़ा है जिसका उपयोग, हारून को महायाजक बनाने में होगा।) पूँछ के चारों ओर की चर्बी तथा उस चर्बी को लो जो शरीर के भीतर के अंगों को ढकती है, कलेजे को ढकने वाली चर्बी को लो, दोनों गुर्दे और दाएँ पैर को लो। 23तब उस रोटी की टोकरी को लो जिसमें तुमने अखमीरी रोटियाँ रखी थीं। यही टोकरी है जिसे तुम्हें यहोवा के सम्मुख रखना है। इन रोटियों को टोकरी से बाहर निकालो। एक रोटी, सादी, एक तेल से बनी और एक छोटी पतली चुपड़ी हुई। 24तब इन को हारून और उसके पुत्रों को दो: फिर उनसे कहो कि वे यहोवा के सामने इन्हें अपने हाथों में उठाएँ। यह यहोवा को विशेष भेंट होगी। 25तब इन रोटियों को हारून और उसके पुत्रों से लो और इन्हें वेदी पर मेढ़े के साथ रखो। यह एक होमबलि है, यह



यहोवा को ऐसी भेंट होगी जो आग के द्वारा दी जाती है। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

26<sup>तब</sup> इस मेड़े से उसकी छाती को निकालो। यही मेड़ा है जिसका उपयोग हारून को महायाजक बनाने के लिए बलि दिया जाएगा। मेड़े की छाती को विशेष भेंट के रूप में यहोवा के सामने पकड़ो। जानवर का यह भाग तुम्हारा होगा। 27<sup>तब</sup> मेड़े की उस छाती और टाँग को लो जो हारून को महायाजक बनाने के लिए उपयोग में आयी थी। इन्हें पवित्र बनाओ और इन्हें हारून और उसके पुत्रों को दो। यह भेंट का विशेष अंश होगा। 28<sup>इझ्राएल</sup> के लोग इन अंगों को हारून और उसके पुत्रों को सदा देंगे जब कभी इझ्राएल के लोग यहोवा को मेलबलि चढ़ायेंगे तो ये भाग सदा याजकों के होंगे। जब वे इन भागों को याजकों को देंगे तो यह यहोवा को देने जैसा ही होगा।

29<sup>उन</sup> विशेष वस्त्रों को सुरक्षित रखो जो हारून के लिए बने थे। ये वस्त्र उसके उत्तराधिकारी वंशजों के लिए होंगे। वे उन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब याजक नियुक्त किए जाएँगे। 30<sup>हारून</sup> का जो पुत्र उसके बाद अगला महायाजक होगा, वह सात दिन तक उन वस्त्रों को पहनेगा, जब वह मिलापवाले तम्बू के पवित्र स्थान में सेवा करने आएगा।

31<sup>उस</sup> मेड़े के माँस को पकाओ जो हारून को महायाजक बनाने के लिए उपयोग में आया था। उस माँस को एक पवित्र स्थान पर पकाओ। 32<sup>तब</sup> हारून और उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू के द्वार पर माँस खाएँगे, और वे उस टोकरी की रोटी भी खाएँगे। 33<sup>इन</sup> भेंटों का उपयोग उनके पाप को समाप्त करने के लिए तब हुआ था जब वे याजक बने थे। ये मेड़े बस उन्हीं को खाना चाहिए किसी अन्य को नहीं। क्योंकि ये पवित्र हैं। 34<sup>यदि</sup> उस मेड़े का कुछ माँस या कोई रोटी अगले सवरे के लिए बच जाये तो उसे जला देना चाहिए। तुम्हें वह रोटी या माँस नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह केवल विशेष दंग से विशेष समय पर ही खाया जाना चाहिए।

35<sup>वैसा</sup> ही करो जैसा मैंने तुम्हें हारून और उसके पुत्रों के लिए करने को आदेश दिया है। यह समारोह सात दिन तक चलेगा। 36<sup>सात</sup> दिन तक हर रोज़ एक-एक बछड़े को मारो। यह हारून और उसके पुत्रों के पाप के लिए भेंट होगी। तुम इन दिनों दिए गए बलिदानों का उपयोग वेदी को शुद्ध करने के लिए करना, और वेदी को पवित्र बनाने के लिए जैतून का तेल इस पर डालना। 37<sup>तुम</sup> सात दिन तक वेदी को शुद्ध और पवित्र करना। उस समय वेदी अत्यधिक पवित्र होगी। वेदी को छूने वाली कोई भी चीज़ पवित्र हो जाएगी।

38<sup>हर</sup> एक दिन वेदी पर तुम्हें एक भेंट चढ़ानी चाहिए। तुम्हें एक-एक वर्ष के दो ममनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 39<sup>एक</sup> ममने की भेंट प्रातः काल चढ़ाओ

और दूसरे की सन्ध्या के समय। 40-41<sup>जब</sup> तुम पहले ममने को मारो, दो पौण्ड \* गेहूँ का महीन आटा भी भेंट चढ़ाओ। गेहूँ के आटे को एक क्वार्ट \* भेंट स्वरूप दाखमधु में मिलाओ। जब तुम दूसरे ममने को सन्ध्या के समय मारो तब दो पौण्ड महीन आटा भी भेंट में चढ़ाओ और एक क्वार्ट दाखमधु भी भेंट करो। यह वैसा ही है जैसा तुमने प्रातः काल किया था। यह यहोवा को भोजन की भेंट होगी। जब तुम उस भेंट को जलाओगे तो यहोवा इसकी सुगन्ध लेगा और यह उसे प्रसन्न करेगी।

42<sup>तुम्हें</sup> इन चीज़ों को यहोवा को भेंट में रोज़ जलाना चाहिए। यह यहोवा के सामने, मिलापवाले तम्बू के द्वार पर करो। यह सदा करते रहो। जब तुम भेंट चढ़ाओगे तब मैं अर्थात् यहोवा, वहाँ तुम से मिलूँगा और तुमसे बातें करूँगा। 43<sup>मैं</sup> इझ्राएल के लोगों से उस स्थान पर मिलूँगा, और वह स्थान मेरे तेज के कारण पवित्र बन जाएगा।

44<sup>इस</sup> प्रकार मैं मिलापवाले तम्बू को पवित्र बनाऊँगा, और मैं वेदी को भी पवित्र बनाऊँगा, और मैं हारून और उसके पुत्रों को पवित्र बनाऊँगा जिससे वे मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकें। 45<sup>मैं</sup> इझ्राएल के लोगों के साथ रहूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। 46<sup>लोग</sup> यह जानेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। वे जानेंगे कि मैं ही वह हूँ जो उन्हें मिश्र से बाहर लाया ताकि मैं उनके साथ रह सकूँ। मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।”

### धूप जलाने की वेदी

30 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “बबूल की लकड़ी की एक वेदी बनाओ। तुम इस वेदी का उपयोग धूप जलाने के लिए करोगे। 2<sup>तुम्हें</sup> वेदी को वर्गाकार अट्टारह इंच लम्बी और अट्टारह इंच चौड़ी बनानी चाहिए। यह छत्तीस इंच ऊँची होनी चाहिए। चारों कोनों पर सींग लगे होने चाहिए। ये सींग वेदी के साथ एक ही इकाई के रूप में वेदी के साथ जुड़े जाने चाहिए। 3<sup>वेदी</sup> के ऊपरी सिरे तथा उसकी सभी भुजाओं को शुद्ध सोने से मढ़ो। वेदी के चारों ओर सोने की पट्टी लगाओ। 4<sup>इस</sup> पट्टी के नीचे सोने के दो छल्ले होने चाहिए। वेदी के दूसरी ओर भी सोने के दो छल्ले होने चाहिए। ये छल्ले वेदी को ले जाने के लिए बल्लियों को फँसाने के लिए होंगे। 5<sup>बल्लियों</sup> को भी बबूल की लकड़ी से ही बनाओ। बल्लियों को सोने से मढ़ो। 6<sup>वेदी</sup> को विशेष पर्दे के सामने रखो। साक्षीपत्र का सन्दूक उस पर्दे के दूसरी ओर है। उस सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन के सामने वेदी रहेगी। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलूँगा।

दो पौण्ड शाब्दिक “एपा माप का 1/10”

एक क्वार्ट शाब्दिक “1 लीन”

7“हारून हर प्रातः सुगन्धित धूप वेदी पर जलाएगा। वह यह तब करेगा जब वह दीपकों की देखभाल करने आएगा। 8उसे शाम को जब वह दीपकों की देखभाल करने आए फिर धूप जलानी चाहिए। जिससे यहोवा के सामने नित्य प्रति सुबह शाम धूप जलती रहे। 9इस वेदी का उपयोग किसी अन्य प्रकार की धूप या होमबलि के लिए मत करना। इस वेदी का उपयोग अन्नबलि या पेय भेंट के लिए मत करना।

10“वर्ष में एक बार हारून यहोवा को विशेष बलिदान अवश्य चढाए। हारून पापबलि के खून का उपयोग लोगों के पापों को धोने के लिए करेगा, हारून इस वेदी के सींगों पर यह करेगा। यह दिन प्रायश्चित्त का दिन कहलाएगा। यह यहोवा के लिए अति पवित्र दिन होगा।”

### मन्दिर के लिए कर

11यहोवा ने मूसा से कहा, 12“इझ्राएल के लोगों को गिना जिससे तुम जानोगे कि वहाँ कितने लोग हैं। जब कभी यह किया जाएगा हर एक व्यक्ति अपने जीवन के लिए यहोवा को धन देगा। यदि हर एक व्यक्ति यह करेगा तो लोगों के साथ कोई भी भयानक घटना घटित नहीं होगी। 13हर व्यक्ति जिसे गिना जाये वह आधा शेकेल चाँदी अवश्य दे। 14हर एक पुरुष जिसे गिना जाये और जो बीस वर्ष या उससे अधिक आयु का हो, यहोवा को यह भेंट देगा। 15धनी लोग आधे शेकेल से अधिक नहीं देंगे, और गरीब लोग आधे शेकेल से कम नहीं देंगे। सभी लोग यहोवा को बराबर ही भेंट देंगे यह तुम्हारे जीवन का मूल्य होगा। 16इझ्राएल के लोगों से यह धन इकट्ठा करो। मिलापवाले तम्बू में सेवा के लिए इसका उपयोग करो। यह भुगतान यहोवा के लिए अपने लोगों को याद करने का एक तरीका होगा। वे अपने जीवन के लिए भुगतान करते रहेंगे।”

### हाथ पैर धोने की चिलमची

17यहोवा ने मूसा से कहा, 18“एक काँसे की चिलमची बनाओ और इसे काँसे के आधार पर रखो। तुम इसका उपयोग हाथ पैर धोने के लिए करोगे। चिलमची को मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच रखो। चिलमची को पानी से भरओ। 19हारून और उसके पुत्र इस चिलमची के पानी से अपने हाथ पैर धोएंगे। 20हर बार जब वे मिलापवाले तम्बू में आएँ तो पानी से हाथ पैर अवश्य धोएँ, इससे वे मरेंगे नहीं। जब वे वेदी के समीप यहोवा की सेवा करने या धूप जलाने आये, 21तो वे अपने हाथ पैर अवश्य धोएँ, इससे वे मरेंगे नहीं। यह ऐसा नियम होगा जो हारून और उसके लोगों के लिए सदा बना रहेगा। यह नियम हारून के उन सभी लोगों के लिए बना रहेगा जो भविष्य में होंगे।”

### अभिषेक का तेल

22तब यहोवा ने मूसा से कहा, 23“बहुत अच्छे मसाले लाओ। बारह पौंड \* द्रव लोबान लाओ और इस तेल का आधा अर्थात् छः पौंड \* सुगन्धित दालचीनी और बारह पौंड सुगन्धित छाल, 24और बारह पौंड तेजपात लाओ। इन्हें नापने के लिए प्रामाणिक बाटों का उपयोग करो। एक गैलन \* जैतून का तेल भी लाओ।

25“सुगन्धित अभिषेक का तेल बनाने के लिए इन सभी चीजों को मिलाओ। 26मिलापवाले तम्बू और साक्षीपत्र के सन्दूक पर इस तेल को डालो। यह इस बात का संकेत करेगा कि इन चीजों का विशेष उद्देश्य है। 27मेज़ और मेज़ पर की सभी तश्तरियों पर तेल डालो। इस तेल को दीपक और सभी उपकरणों पर डालो। 28धूप वाली वेदी पर तेल डालो। यहोवा के लिए होमबलि वाली वेदी पर भी तेल डालो। उस वेदी की सभी चीजों पर यह तेल डालो। कटोरे और उसके नीचे के आधार पर यह तेल डालो। 29तुम इन सभी चीजों को समर्पित करोगे। वे अत्यन्त पवित्र होंगी। कोई भी चीज़ जो इन्हें छूएगी वह भी पवित्र हो जाएगी।

30“हारून और उसके पुत्रों पर तेल डालो। यह स्पष्ट करेगा कि वे मेरी विशेष ढंग से सेवा करते हैं। तब वे मेरी सेवा याज्ञक कि तरह कर सकते हैं। 31इझ्राएल के लोगों से कहो कि अभिषेक का तेल मेरे लिए सदैव अति विशेष होगा। 32साधारण सुगन्ध की तरह कोई भी इस तेल का उपयोग नहीं करेगा। उस प्रकार कोई सुगन्ध न बनाओ जिस प्रकार तुमने यह विशेष तेल बनाया। यह तेल पवित्र है और यह तुम्हारे लिए अति विशेष होना चाहिए। 33यदि कोई इस पवित्र तेल की तरह सुगन्ध बनाए और उसे किसी विदेशी को दे तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाये।”

### धूप

34तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इन सुगन्धित मसालों को लो: रसगंधा, कस्तूरी गंधिका, बिरोजा और शुद्ध लोबान। सावधानी रखो कि तुम्हारे पास मसालों की बराबर मात्रा हो। 35मसालों को सुगन्धित धूप बनाने के लिए आपस में मिलाओ। इसे उसी प्रकार करो जैसा सुगन्ध बनाने वाला व्यक्ति करता है। इस धूप में नमक भी मिलाओ। यह इसे शुद्ध और पवित्र बनाएगा। 36कुछ धूप को तब तक पीसते रहो जब तक उसका बारीक चूर्ण न हो जाये। मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इस चूर्ण को रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं

बारह पौंड शाब्दिक “पाँच सौ माप।”

छः पौंड शाब्दिक “ढाई सौ माप।”

एक गैलन शाब्दिक “एक हिना।”

तुम्हें मिलेंगा। तुम्हें इस धूप के चूर्ण का उपयोग इसके अति विशेष अवसर पर ही करना चाहिए।<sup>37</sup> तुम्हें इस चूर्ण का उपयोग केवल विशेष ढंग से यहोवा के लिए ही करना चाहिए। तुम इस धूप को विशेष ढंग से बनाओगे। इस विशेष ढंग का उपयोग अन्य कोई धूप बनाने के लिए मत करो।<sup>38</sup> कोई व्यक्ति अपने लिए कुछ ऐसे धूप बनाना चाह सकता है जिससे वह सुगन्ध का आनन्द ले सके। किन्तु यदि वह ऐसा करे तो उसे अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाये।”

### बसलेल और ओहोलीआब

**31** तब यहोवा ने मूसा के कहा, “मैंने यहूदा के कबीले से ज़रो के पुत्र बसलेल को चुना है। ज़रो हूर का पुत्र था। मैंने बसलेल को परमेश्वर की आत्मा से भर दिया है, अर्थात् मैंने उसे सभी प्रकार की चीज़ों को करने का ज्ञान और निपुणता दे दी है।<sup>4</sup> बसलेल बहुत अच्छा शिल्पकार है और वह सोना, चाँदी तथा कँसे की चीज़ें बना सकता है।<sup>5</sup> बसलेल सुन्दर रत्नों को काट और जड़ सकता है। वह लकड़ी का भी काम कर सकता है। बसलेल सब प्रकार के काम कर सकता है।<sup>6</sup> मैंने ओहोलीआब को भी उसके साथ काम करने को चुना है। आहोलीआब दान कबीले के अहीसामाक का पुत्र है और मैंने दूसरे सब श्रमिकों को भी ऐसी निपुणता दी है कि वे उन सभी चीज़ों को बना सकते हैं जिसे मैंने तुमको बनाने का आदेश दिया है:

<sup>7</sup>मिलापवाला तम्बू, साक्षीपत्र का सन्दूक, सन्दूक को ढकने वाला ढक्कन, मिलापवाले तम्बू का साजोसामान,<sup>8</sup> मेज और उस पर की सभी चीज़ें, शुद्ध सोना का दीपाधार, धूप जलाने की वेदी,

<sup>9</sup>भेंट जलाने के लिए वेदी, और वेदी पर उपयोग की चीज़ें, चिलमची और उसके नीचे का आधार,

<sup>10</sup>याजक हारून के लिए सभी विशेष वस्त्र और उसके पुत्रों के लिए सभी विशेष वस्त्र, जिन्हें वे याजक के रूप में सेवा करते समय पहनेंगे,

<sup>11</sup>अभिषेक का सुगन्धित तेल, और पवित्र स्थान के लिए सुगन्धित धूप। इन सभी चीज़ों को उसी ढंग से बनाएँगे जैसा मैंने तुमको आदेश दिया है।”

### सब्त

<sup>12</sup>“तब यहोवा ने मूसा से कहा, <sup>13</sup>“इब्राएल के लोगों से यह कहो: ‘तुम लोग मेरे विशेष विश्राम के दिन वाले नियमों का पालन करोगे। तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए, क्योंकि ये मेरे और तुम्हारे बीच सभी पीढ़ियों के लिए प्रतीक स्वरूप रहेंगे। इससे तुम्हें पता चलेगा कि मैंने अर्थात् यहोवा ने तुम्हें अपना विशेष जनसमूह बनाया है।”

<sup>14</sup>“सब्त के दिन को विशेष दिवस मनाओ। यदि कोई व्यक्ति सब्त के दिन को अन्य दिनों की तरह मानता है तो वह व्यक्ति अवश्य मार दिया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करता है अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाना चाहिए।<sup>15</sup> सप्ताह में दूसरे अन्य छः दिन काम करने के लिए हैं, किन्तु सातवाँ दिन विश्राम करने का विशेष दिन है, अर्थात् यहोवा को सम्मान देने का विशेष दिन है, कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करेगा अवश्य ही मार दिया जाये।<sup>16</sup> इब्राएल के लोग सब्त के दिन को अवश्य याद रखें और इसे विशेष दिन बनाएं। वे इसे लगातार मनाते रहें। यह मेरे और उनके बीच साक्षीपत्र है जो सदा बना रहेगा।<sup>17</sup> सब्त का दिन मेरे और इब्राएल के लोगों के बीच सदा के लिए प्रतीक रहेगा। यहोवा ने छः दिन काम किया तथा आकाश एवं धरती को बनाया। सातवें दिन उसने अपने को विश्राम दिया।”

<sup>18</sup>इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से सीनै पर्वत पर बात करना समाप्त किया। तब परमेश्वर ने उसे आदेश लिखे हुए दो समतल पत्थर दिए। परमेश्वर ने अपनी अंगुलियों का उपयोग किया और पत्थर पर उन नियमों को लिखा।

### सोने का बड़ड़ा

**32** लोगों ने देखा कि लम्बा समय निकल गया और मूसा पर्वत से नीचे नहीं उतरा। इसलिए लोग हारून के चारों ओर इकट्ठा हुए। उन्होंने उससे कहा, “देखो, मूसा ने हमें मिश्र देश से बाहर निकाला। किन्तु हम यह नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ है। इसलिए कोई देवता हमारे आगे चलने और हमें आगे ले चलने वाला बनाओ।”

<sup>2</sup>हारून ने लोगों से कहा, “अपनी पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों के कानों की बालियाँ मेरे पास लाओ।”

<sup>3</sup>इसलिए सभी लोगों ने कान की बालियाँ इकट्ठी कीं और वे उन्हें हारून के पास लाए।<sup>4</sup> हारून ने लोगों से सोना लिया, और एक बड़ड़े की मूर्ति बनाने के लिए उसका उपयोग किया। हारून ने मूर्ति बनाने के लिए मूर्ति को आकार देने वाले एक औज़ार का उपयोग किया। तब इसे उसने सोने से मढ़ दिया।

तब लोगों ने कहा, “इब्राएल के लोगों, ये तुम्हारे वे देवता हैं जो तुम्हें मिश्र से बाहर ले आया।”\*

<sup>5</sup>हारून ने इन चीज़ों को देखा। इसलिए उसने बड़ड़े के सम्मुख एक वेदी बनाई। तब हारून ने घोषणा की। उसने कहा, “कल यहोवा के लिए विशेष दावत होगी।”

**इब्राएल के ... आया** यहाँ मूल में पाँच बड़ड़ों के लिए बहवचन का प्रयोग किया गया है। इसका मतलब यह हो सकता है कि सोने का वह बड़ड़ा बहुत से मिथ्या देवताओं का प्रतीक था।

6अगले दिन सुबह लोग शीघ्र उठ गए। उन्होंने जानवरों को मारा और होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाई। लोग खाने और पीने के लिये बैठे। तब वे खड़े हुए और उनकी एक उन्मत्त दावत हुई।

7उसी समय यहोवा ने मूसा से कहा, “इस पर्वत से नीचे उतर। तुम्हारे लोग अर्थात् उन लोगों ने, जिन्हें तुम मिश्र से लाए हो, भयंकर पाप किया है। 8उन्होंने उन चीजों को करने से शीघ्रता से इन्कार कर दिया है जिन्हें करने का आदेश मैंने उन्हें दिया था। उन्होंने पिछले सोने से अपने लिए एक बछड़ा बनाया है। वे उस बछड़े की पूजा कर रहे हैं और उसे बलि भेंट कर रहे हैं। लोगों ने कहा है, ‘इष्ट्राएल, ये देवता है जो तुम्हें मिश्र से बाहर लाए हैं।’”

9यहोवा ने मूसा से कहा, “मैंने इन लोगों को देखा है। मैं जानता हूँ कि ये बड़े हठी लोग हैं जो सदा मेरे विरुद्ध जाएंगे। 10इसलिए अब मुझे इन्हें क्रोध करके नष्ट करने दो। तब मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।”

11किन्तु मूसा ने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना की। मूसा ने कहा, “हे यहोवा, तू अपने क्रोध को अपने लोगों को नष्ट न करने दे। तू अपार शक्ति और अपने बल से इन्हें मिश्र से बाहर ले आया। 12किन्तु यदि तू अपने लोगों को नष्ट करेगा तब मिश्र के लोग कह सकते हैं, ‘यहोवा ने अपने लोगों के साथ बुरा करने की योजना बनाई। यही कारण है कि उसने इनको मिश्र से बाहर निकाला। वह उन्हें पर्वतों में मार डालना चाहता था। वह अपने लोगों को धरती से मिटाना चाहता था।’ इसलिए तू लोगों पर क्रुद्ध न हो। अपना क्रोध त्याग दे। अपने लोगों को नष्ट न कर। 13तू अपने सेवक इष्ट्राएल, इसहाक और इष्ट्राएल (याकूब) को याद कर। तूने अपने नाम का उपयोग किया और तूने उन लोगों को वचन दिया। तूने कहा: ‘मैं तुम्हारे लोगों को उतना अनगिनत बनाऊँगा जितने आकाश में तारे हैं। मैं तुम्हारे लोगों को वह सारी धरती दूँगा जिसे मैंने उनको देने का वचन दिया है। यह धरती सदा के लिए उनकी होगी।’” 14इसलिए यहोवा ने लोगों के लिए अफ़सोस किया। यहोवा ने वह नहीं किया जो उसने कहा कि वह करेगा अर्थात् लोगों को नष्ट नहीं किया।

15तब मूसा पर्वत से नीचे उतरा। मूसा के पास आदेश वाले दो समतल पत्थर थे। ये आदेश पत्थर के सामने तथा पीछे दोनों तरफ लिखे हुए थे। 16परमेश्वर ने स्वयं उन पत्थरों को बनाया था और परमेश्वर ने स्वयं उन आदेशों को उन पत्थरों पर लिखा था। 17जब वे पर्वत से उतर रहे थे यहोवा ने लोगों को उन्मत्त शोर सुना। यहोवा ने मूसा से कहा, “नीचे पड़ाव में युद्ध की तरह का शोर है।”

18मूसा ने उत्तर दिया, “यह सेना का विजय के लिए शोर नहीं है। यह हार से चिल्लाने वाली सेना का शोर

भी नहीं है। मैं जो आवाज़ सुन रहा हूँ वह संगीत की है।”

19जब मूसा डेरे के समीप आया तो उसने सोने के बछड़े और गाते हुए लोगों को देखा। मूसा बहुत क्रोधित हो गया और उसने उन विशेष पत्थरों को ज़मीन पर फेंक दिया। पर्वत की तलहटी में पत्थरों के कई टुकड़े हो गए। 20तब मूसा ने लोगों के बनाए बछड़े को नष्ट कर दिया। उसने इसे आग में गला दिया। उसने सोने को तब तक पीसा जब तक यह चूर्ण न हो गया और उसने उस चूर्ण को पानी में फेंक दिया। उसने इष्ट्राएल के लोगों को वह पानी पीने को विवश किया। 21मूसा ने हारून से कहा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया? तुम उन्हें ऐसा बुरा पाप करने की ओर क्यों ले गए?”

22हारून ने उत्तर दिया, “महाशय, क्रोधित मत हो। आप जानते हैं कि ये लोग सदा गलत काम करने को तैयार रहते हैं। 23लोगों ने मुझे से कहा, ‘मूसा हम लोगों को मिश्र से बाहर लाया। किन्तु हम लोग नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित हुआ।’ इसलिए हम लोगों का मार्ग दिखाने वाला कोई देवता बनाओ, 24इसलिए मैंने लोगों से कहा, ‘यदि तुम्हारे पास सोने की अंगुठियाँ हों तो उन्हें मुझे दे दो।’ लोगों ने मुझे अपना सोना दिया। मैंने इस सोने को आग में फेंका और उस आग से यह बछड़ा आया।”

25मूसा ने देखा कि हारून ने विद्रोह उत्पन्न किया है। लोग मूर्खों की तरह उग्र व्यवहार इस तरह कर रहे थे कि उनके सभी शत्रु देख सकें। 26इसलिए मूसा डेरे के द्वार पर खड़ा हुआ। मूसा ने कहा, “कोई व्यक्ति जो यहोवा का अनुसरण करना चाहता है मेरे पास आए” तब लेवी के परिवार के सभी लोग दौड़कर मूसा के पास आए। 27तब मूसा ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें बताऊँगा कि इष्ट्राएल का परमेश्वर यहोवा क्या कहता है: ‘हर व्यक्ति अपनी तलवार अवश्य उठा ले और डेरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाये। तुम लोग इन लोगों को अवश्य दण्ड दोगे चाहे किसी व्यक्ति को अपने भाई, मित्र और पड़ोसी को ही क्यों न मारना पड़े।”

28लेवी के परिवार के लोगों ने मूसा का आदेश माना। उस दिन इष्ट्राएल के लगभग तीन हज़ार लोग मरे। 29तब मूसा ने कहा, “यहोवा ने आज तुम को ऐसे लोगों के रूप में चुना है जो अपने पुत्रों और भाइयों को आशीर्वादिंगे।”

30अगली सुबह मूसा ने लोगों से कहा, “तुम लोगों ने भयंकर पाप किया है। किन्तु अब मैं यहोवा के पास ऊपर जाऊँगा और ऐसा कुछ कर सकूँगा जिससे वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर दें।” 31इसलिए मूसा वापस यहोवा के पास गया और उसने कहा, “कृपया सुन! इन लोगों ने बहुत बुरा पाप किया है और सोने का एक देवता बनाया है। 32अब उन्हें इस पाप के लिए क्षमा

कर। यदि तू क्षमा नहीं करेगा तो मेरा नाम उस किताब से मिटा दें जिसे तूने लिखा है।”\*

33किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, “जो मेरे विरुद्ध पाप करते हैं केवल वे ही ऐसे लोग हैं जिनका नाम मैं अपनी पुस्तक से मिटाता हूँ। 34इसलिए जाओ और लोगों को वहाँ ले जाओ जहाँ मैं कहता हूँ। मेरा दूत तुम्हारे आगे आगे चलेगा और तुम्हें रास्ता दिखाएगा। जब उन लोगों को दण्ड देने का समय आएगा जिन्होंने पाप किया है तब उन्हें दण्ड दिया जायेगा।” 35इसलिए यहोवा ने लोगों में एक भयंकर बीमारी उत्पन्न की। उन्होंने यह इसलिए किया कि उन लोगों ने हारून से सोने का बछड़ा बनाने को कहा था।

### “मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा”

33 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम और तुम्हारे वे लोग जिन्हें तुम मित्र से लाए हो उस जगह को अवश्य छोड़ दो। और उस प्रदेश में जाओ जिसे मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकब को देने का वचन दिया था। मैंने उन्हें वचन दिया मैंने कहा, मैं वह प्रदेश तुम्हारे भावी वंशजों को दूँगा। 34मैं एक दूत तुम्हारे आगे आगे चलने के लिए भेजूँगा, और मैं कनानी, एमोरी, हिती, परिजी, हिब्वी और यबूसी लोगों को हराऊँगा, मैं उन लोगों को तुम्हारा प्रदेश छोड़ने को विवश करूँगा। 35इसलिए उस प्रदेश को जाओ जो बहुत ही अच्छी चीज़ों\* से भरा है। किन्तु मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, तुम लोग बड़े हठी हो, यदि मैं तुम्हारे साथ गया तो मैं तुम्हें शायद रास्ते में ही नष्ट कर दूँ।”

4लोगों ने यह बुरी खबर सुनी और वे बहुत दुःखी हुए। इसके बाद लोगों ने आभूषण नहीं पहने। 5उन्होंने आभूषण नहीं पहने क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा, “इब्राएल के लोगों से कहो, ‘तुम हठी लोग हो। यदि मैं तुम लोगों के साथ थोड़े समय के लिए भी यात्रा करूँ तो मैं तुम लोगों को नष्ट कर दूँगा, इसलिए अपने सभी गहने उतार लो। तब मैं निश्चय करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या करूँ।’”

6इसलिए इब्राएल के लोगों ने हारेब (सीनै) पर्वत पर अपने सभी गहने उतार लिए।

### मिलापवाला तम्बू

7मूसा मिलापवाला तम्बू को डेरे से कुछ दूर ले गया। वहाँ उसने उसे लगाया और उसका नाम “मिलापवाला तम्बू” रखा। कोई व्यक्ति जो यहोवा से कुछ जानना चाहता था उसे डेरे के बाहर मिलापवाले तम्बू तक

उस किताब ... लिखा है संभवतः यह “जीवन की पुस्तक” की ओर संकेत है। यह वैसा ही है कि परमेश्वर एक किताब रखता है जिसमें उसके सभी लोगों के नाम लिखे रहते हैं।

अच्छी चीज़ें अर्थात् दूध और शहद से भरपूर।

जाना होता था। 8जब कभी मूसा बाहर तम्बू में जाता तो लोग उसको देखते रहते। लोग अपने तम्बूओं के द्वार पर खड़े रहते और मूसा को तब तक देखते रहते जब तक वह मिलापवाले तम्बू में चला जाता। 9जब मूसा तम्बू में जाता तो एक लम्बा बादल का स्तम्भ सदा नीचे उतरता था। वह बादल तम्बू के द्वार पर ठहरता। इस प्रकार यहोवा मूसा से बात करता था। 10जब लोग तम्बू के द्वार पर बादल को देखते तो सामने झुकते और उपासना करते थे। हर एक व्यक्ति अपने तम्बू के द्वार पर उपासना करता था।

11यहोवा मूसा से आमने-सामने बात करता था। यहोवा मूसा से इस प्रकार बात करता था जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने मित्र से बात करता है। यहोवा से बात करने के बाद मूसा हमेशा अपने डेरे में वापस लौटता था। नून का पुत्र नवयुवक यहोशू मूसा का सहायक था। यहोशू सदा तम्बू में रहता था जब मूसा उसे छोड़ता था।

### मूसा को यहोवा की महिमा का दर्शन

12मूसा ने यहोवा से कहा, “तूने मुझे इन लोगों को ले चलने को कहा। किन्तु तूने यह नहीं बताया कि मेरे साथ किसे भेजेगा। तूने मुझसे कहा, ‘मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ और मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।’ 13यदि तुझे मैंने सचमुच प्रसन्न किया है तो अपने निर्णय मुझे बता। तुझे मैं सचमुच जानना चाहता हूँ। तब मैं तुझे लगातार प्रसन्न रख सकता हूँ। याद रख कि ये सभी तेरे लोग हैं।”

14यहोवा ने कहा, “मैं स्वयं तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा।”\*

15तब मूसा ने उससे कहा, “यदि तू हम लोगों के साथ न चले तो तू इस स्थान से हम लोगों को दूर मत भेज। 16हम यह भी कैसे जानेंगे कि तू मुझसे और इन लोगों से प्रसन्न है? यदि तू साथ चलेगा तो हम लोग निश्चयपूर्वक यह जानेंगे। यदि तू हम लोगों के साथ नहीं जाता तो मैं और ये लोग धरती के अन्य दूसरे लोगों से भिन्न नहीं होंगे।”

17तब यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं वह करूँगा जो तू कहता है। मैं यह करूँगा क्योंकि मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। मैं तुझे अच्छी तरह जानता हूँ।”

18तब मूसा ने कहा, “अब कृपया मुझे अपनी महिमा दिखा।”

19तब यहोवा ने उत्तर दिया, “मैं अपनी सम्पूर्ण भलाई को तुम तक जाने दूँगा। मैं यहोवा हूँ और मैं अपने नाम की घोषणा करूँगा जिससे तुम उसे सुन सको। मैं उन लोगों पर कृपा और प्रेम दिखाऊँगा जिन्हें मैं चुनूँगा। 20किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख सकते। कोई भी व्यक्ति

मैं ... दिखाऊँगा या “आराम दूँगा।”

मुझे देख नहीं सकता और यदि देख ले तो जीवित नहीं रह सकता है।

21“मेरे समीप के स्थान पर एक चट्टान है। तुम उस चट्टान पर खड़े हो सकते हो। 22मेरी महिमा उस स्थान से होकर गुजरेगी। उस चट्टान की बड़ी दरार में मैं तुम को रखूँगा और गुजरते समय मैं तुम्हें अपने हाथ से ढकूँगा। 23तब मैं अपना हाथ हटा लूँगा और तुम मेरी पीठ मात्र देखोगे। किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख पाओगे।”

### पत्थर की नयी पट्टियाँ

**34** तब यहोवा ने मूसा से कहा, “दो और समतल चट्टानें ठीक वैसी ही बनाओ जैसे पहली दो थीं जो टूट गईं। मैं इन पर उन्हीं शब्दों को लिखूँगा जो पहले दोनों पर लिखे थे। 2कल प्रातःकाल तैयार रहना और सीनै पर्वत पर आना। वहाँ मेरे सामने पर्वत की चोटी पर खड़े रहना। 3किसी व्यक्ति को तुम्हारे साथ नहीं आने दिया जाएगा। पर्वत के किसी भी स्थान पर कोई भी व्यक्ति दिखाई तक नहीं पड़ना चाहिए। यहाँ तक कि तुम्हारे जानवरों के झुण्ड और भेड़ों की रेवडें भी पर्वत की तलहटी में घास नहीं चर सकेंगी।”

4इसलिए मूसा ने पहले पत्थरों की तरह पत्थर की दो समतल पट्टियाँ बनाईं। तब अगले सवरे ही वह सीनै पर्वत पर गया। उसने हर एक चीज़ यहोवा के आदेश के अनुसार की। मूसा अपने साथ पत्थर की दोनों समतल पट्टियाँ ले गया। 5मूसा के पर्वत पर पहुँच जाने के बाद यहोवा उसके पास बादल में नीचे पर्वत पर आया। यहोवा वहाँ मूसा के साथ खड़ा रहा, और उसने यहोवा का नाम लिया।\*

6यहोवा मूसा के सामने से गुजरा था और उसने कहा, “यहोवा दयालु और कृपालु परमेश्वर है। यहोवा जल्दी क्रोधित नहीं होता। यहोवा महान, प्रेम से भरा है। यहोवा विश्वसनीय है। 7यहोवा हजारों पीढ़ियों पर कृपा करता है। यहोवा लोगों को उन गलतियों के लिए जो वे करते हैं क्षमा करता है। किन्तु यहोवा अपराधियों को दण्ड देना नहीं भूलता। यहोवा केवल अपराधी को ही दण्ड नहीं देगा अपितु उनके बच्चों, उनके पौत्रों और प्रपौत्रों को भी उस बुरी बात के लिए कष्ट सहना होगा जो वे लोग करते हैं।”

8तब तत्काल मूसा भूमि पर झुका और उसने यहोवा की उपासना की। मूसा ने कहा, “यहोवा, यदि तू मुझसे प्रसन्न है तो मेरे साथ चला। मैं जानता हूँ कि ये लोग हठी हैं। किन्तु तू हमें उन पापों और अपराधों के लिए क्षमा कर जो हमने किए हैं। अपने लोगों के रूप में हमें स्वीकार कर।”

यहोवा ... लिया शाब्दिक “उसने यहोवा के नाम पर पुकारा” इस का अर्थ “मूसा ने यहोवा की उपासना की” या “यहोवा ने अपना नाम मूसा से कहा।”

10तब यहोवा ने कहा, “मैं तुम्हारे सभी लोगों के साथ यह साक्षीपत्र बना रहा हूँ। मैं ऐसे अद्भुत काम करूँगा जैसे इस धरती पर किसी भी दूसरे राष्ट्र के लिए पहले कभी नहीं किए। तुम्हारे साथ सभी लोग देखेंगे कि मैं यहोवा अत्यन्त महान हूँ। लोग उन अद्भुत कामों को देखेंगे जो मैं तुम्हारे लिए करूँगा। 11आज मैं जो आदेश देता हूँ उसका पालन करो और मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारा देश छोड़ने को विवश करूँगा। मैं एमोरी, कनानी, हित्ती, परिजी, हिब्वी और यबूसी को बाहर निकल जाने को विवश करूँगा। 12सावधान रहो। उन लोगों के साथ कोई सन्धि न करो जो उस प्रदेश में रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ सन्धि करोगे जो उस प्रदेश में रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ साक्षीपत्र बनाओगे तो तुम उस में फँस जाओगे। 13उनकी वेदियों को नष्ट कर दो। उन पत्थरों को तोड़ दो जिनकी वे पूजा करते हैं। उनकी मूर्तियों\* को काट गिराओ। 14किसी दूसरे देवता की पूजा न करो। मैं यहोवा (कना) जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ। यह मेरा नाम है। मैं (एलकना) जल उठने वाला परमेश्वर हूँ।

15“सावधान रहो उस प्रदेश में जो लोग रहते हैं उनसे कोई सन्धि न हो। यदि तुम यह करोगे तो जब वे अपने देवताओं की पूजा करेंगे तब तुम उनके साथ हो सकोगे। वे लोग तुम्हें अपने में मिलने के लिए आमंत्रित करेंगे और तुम उनकी बलियों को खाओगे। 16तुम उनकी कुछ लड़कियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में चुन सकते हो। वे पुत्रियाँ असत्य देवताओं की सेवा करती हैं। वे तुम्हारे पुत्रों से भी वही करवा सकती हैं।

17मूर्तियाँ मत बनाना। 18“अखमीरी रोटियों की दावत का उत्सव मनाओ। मेरे दिए आदेश के अनुसार सात दिन तक अखमीरी रोटी खाओ। इसे उस महाने में करो जिसे मैंने चुना है—आबीब का महाना। क्यों? क्योंकि यह वही महाना है जब तुम मिश्र से बाहर आए।

19“किसी भी स्त्री का पहलौटा बच्चा सदा मेरा है। पहलौटा जानवर भी जो तुम्हारी गाय, बकरियों या भेड़ों से उत्पन्न होता है, मेरा है। 20यदि तुम पहलौटे गधे को रखना चाहते हो तो तुम इसे एक मेमने के बदले खरीद सकते हो। किन्तु यदि तुम उस गधे को मेमने के बदले नहीं खरीदते तो तुम उस गधे की गर्दन तोड़ दो। तुम्हें अपने पहलौटे सभी पुत्र मुझसे वापस खरीदने होंगे। कोई व्यक्ति बिना भेंट के मेरे सामने नहीं आएगा।

21“तुम छः दिन काम करोगे। किन्तु सातवें दिन अवश्य विश्राम करोगे। पौधे रोपने और फसल काटने के समय भी तुम्हें विश्राम करना होगा।

पत्थरों ... मूर्तियाँ शाब्दिक “स्मारक अशोरा स्तम्भा” ये पत्थर के प्रतीक और लकड़ी के स्तम्भ थे जिन्हें लोग असत्य देवताओं को याद रखने तथा श्रद्धा अर्पित करने के लिए खड़ी करते थे।”

22"सप्ताह की दावत को मनाओ। गेहूँ की फ़सल के पहले अनाज का उपयोग इस दावत में करो और वर्ष के अन्त में फ़सल कटने की दावत मनाओ।

23"हर वर्ष तुम्हारे सभी पुरुष तीन बार अपने स्वामी, परमेश्वर इज़्राएल के यहोवा के पास जाएंगे।

24"जब तुम अपने प्रदेश में पहुँचोगे तो मैं तुम्हारे शत्रुओं को उस प्रदेश से बाहर जाने को विवश करूँगा। मैं तुम्हारी सीमाओं को बढ़ाऊँगा और तुम अधिकाधिक प्रदेश पाओगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने वर्ष में तीन बार जाओगे। और उन दिनों तुम्हारा देश तुम से लेने का कोई भी प्रयत्न नहीं करेगा।

25"यदि तुम मुझे बलि से खून भेंट करो तो उसी समय मुझे खमीर भेंट मत करो

"और फ़सल पर्व का कुछ भी माँस अगली सुबह तक के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

26"यहोवा को अपनी पहली काटी हुई फ़सलें दो। उन चीज़ों को अपने परमेश्वर यहोवा के घर लाओ।

"कभी बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाओ।"

27तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जो बातें मैंने बताई हैं उन्हें लिख लो। ये बातें हमारे तुम्हारे और इज़्राएल के लोगों के मध्य साक्षीपत्र हैं।"

28मूसा वहाँ यहोवा के साथ चालीस दिन और चालीस रात रहा। उस पूरे समय उसने न भोजन किया न ही पानी पिया। और मूसा ने साक्षीपत्र के शब्दों के दस-आदेशों को, पत्थर की दो समतल पट्टियों पर लिखा।

### मूसा का तेजस्वी मुख

29तब मूसा सीनै पर्वत से नीचे उतरा। वह यहोवा की दोनों पत्थरों की समतल पट्टियों को साथ लाया जिन पर यहोवा के नियम लिखे थे। मूसा का मुख चमक रहा था। क्योंकि उसने परमेश्वर से बातें की थीं। किन्तु मूसा यह नहीं जानता था कि उसके मुख पर तेज हैं। 30हारून और इज़्राएल के सभी लोगों ने देखा कि मूसा का मुख चमक रहा था। इसलिए वे उसके पास जाने से डरे। 31किन्तु मूसा ने उन्हें बुलाया। इसलिए हारून और लोगों के सभी अंगुवा मूसा के पास गए। मूसा ने उन से बातें कीं। 32उसके बाद इज़्राएल के सभी लोग मूसा के पास आए। और मूसा ने उन्हें वे आदेश दिए जो यहोवा ने सीनै पर्वत पर उसे दिए थे। 33जब मूसा ने बातें करना खत्म किया तब उसने अपने मुख को एक कपड़े से ढक लिया। 34जब कभी मूसा यहोवा के सामने बातें करने जाता तो कपड़े को हटा लेता था। तब मूसा बाहर आता और इज़्राएल के लोगों को वह बताता जो यहोवा का आदेश होता था। 35इज़्राएल के लोग देखते थे कि मूसा का मुख तेज से चमक रहा है। इसलिए मूसा अपना मुख फिर ढक लेता था। मूसा अपने मुख को

तब तक ढके रखता था जब तक वह यहोवा के साथ बात करने अगली बार नहीं जाता था।

### सब्त के नियम

35 मूसा ने इज़्राएल के सभी लोगों को एक साथ इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, "मैं वे बातें बताऊँगा जो यहोवा ने तुम लोगों को करने के लिए कही हैं:

2"काम करने के छः दिन हैं। किन्तु सातवाँ दिन तुम लोगों का विश्राम का विशेष दिन होगा। उस विशेष दिन को विश्राम करके तुम लोग यहोवा को श्रद्धा अर्पित करोगे। यदि कोई सातवें दिन काम करेगा तो उसे अवश्य मार दिया जाएगा। सब्त के दिन तुम्हें किसी स्थान पर आग तक नहीं जलानी चाहिए, जहाँ कहीं तुम रहते हो।"

### पवित्र तम्बू के लिए चीज़ें

4मूसा ने इज़्राएल के सभी लोगों से कहा, "यही है जो यहोवा ने आदेश दिया है। यहोवा के लिए विशेष भेंट इकट्ठी करो। तुम्हें अपने मन में निश्चय करना चाहिए कि तुम क्या भेंट करोगे। और तब तुम वह भेंट यहोवा के पास लाओ। सोना, चाँदी और काँसा; 6नीला बैंगनी और लाल कपड़ा, सन का उत्तम रेशा; बकरी के बाल; 7भेंड़ की लाल रंगी खाल, सुइयों का चमड़ा; बबूल की लकड़ी; 8दीपकों के लिए जैतून का तेल; अभिषेक के तेल के लिए मसाले, सुगन्धित धूप के लिए मसाले, 9गोमेदक नग तथा अन्य रत्न भेंट में लाओ। ये नग और रत्न एपोद और सीनाबन्द पर लगाए जाएंगे।

10"तुम सभी कुशल कारीगरों को चाहिए कि यहोवा ने जिन चीज़ों का आदेश दिया है उन्हें बनाए। ये वे चीज़ें हैं जिनके लिए यहोवा ने आदेश दिया है: 11पवित्र तम्बू, इसका बाहरी तम्बू, और इसका आच्छादन, छल्ले, तख्ते, पट्टियाँ, स्तम्भ और आधार; 12पवित्र सन्दूक, और इसकी बल्लियाँ तथा सन्दूक का ढक्कन, और सन्दूक रखे जाने की जगह को ढकने के लिए पर्दे; 13मेज और इसकी बल्लियाँ, मेज पर रहने वाली सभी चीज़ें, और मेज पर रखी जाने वाली विशेष रोटी; 14प्रकाश के लिए उपयोग में आने वाला दीपाधार, और वे सभी चीज़ें जो दीपाधार के साथ होती हैं अर्थात् दीपक, और प्रकाश के लिए तेल; 15धूप जलाने के लिए वेदी और इसकी बल्लियाँ अभिषेक का तेल और सुगन्धित धूप, मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार को ढकने वाली कनात; 16होमबलियों के लिए वेदी और इसकी काँसे की जाली, बल्लियों और वेदी पर उपयोग में आने वाली सभी चीज़ें, काँसे की चिलमवी और इसका आधार; 17आँगन की चारों ओर की कनातें, और उनके खंभे और आधार, और आँगन के प्रवेशद्वार को ढकने वाला कनात; 18आँगन

और तम्बू के सहारे के लिए उपयोग में आने वाली खूंटियाँ, और खूंटियों से बँधने वाली रस्सियाँ; 19और विशेष बुने वस्त्र जिन्हें याजक पवित्र स्थानों में पहनेंगे। ये विशेष वस्त्र याजक हासून और उसके पुत्रों के पहनने के लिए हैं वे इन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब वे याजक के रूप में सेवा-कार्य करेंगे।”

### लोगों की महान भेंट

20तब इज़्राएल के सभी लोग मूसा के पास से चले गए। 21सभी लोग जो भेंट चढ़ाना चाहते थे आए और यहोवा के लिए भेंट लाए। ये भेंटें मिलापवाले तम्बू को बनाने, तम्बू की सभी चीजों, और विशेष वस्त्र बनाने के काम में लाई गई। 22सभी स्त्री और पुरुष, जो चढ़ाना चाहते थे, हर प्रकार के अपने सोने के गहने लाए। वे चिमटी कान की बालियाँ, अगूठियाँ, अन्य गहने लेकर आए। उन्होंने अपने सभी सोने के गहने यहोवा को अर्पित किए। यह यहोवा को विशेष भेंट थी।

23हर व्यक्ति जिसके पास सन के उत्तम रेशे, नीला, बैंगनी और लाल कपड़ा था वह इन्हें यहोवा के पास लाया। वह व्यक्ति जिसके पास बकरी के बाल, लाल रंग से रंगी भेड़ की खाल, सुइसों का खाल था उसे वह यहोवा के पास लाया। 24हर एक व्यक्ति जो चाँदी, काँसा, चढ़ाना चाहता था यहोवा को भेंट के रूप में उसे लाया। हर एक व्यक्ति जिसके पास बबूल की लकड़ी थी, आया और उसे यहोवा को अर्पित किया। 25हर एक कुशल स्त्री ने सन के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी तथा लाल कपड़ा बनाया। 26उन सभी स्त्रियों ने जो कुशल थीं और हाथ बँटाना चाहती थीं उन्होंने बकरी के बालों से कपड़ा बनाया।

27अगुवा लोग गोमेदक नग तथा अन्य रत्न ले आए। ये नग और रत्न याजक के एपोद तथा सीनाबन्द में लगाए गए। 28लोग मसाले और जैतून का तेल भी लाए। ये चीजें सुगन्धित धूप, अभिषेक का तेल और दीपकों के तेल के लिए उपयोग में आईं।

29इज़्राएल के वे सभी लोग जिनके मन में प्रेरणा हुई यहोवा के लिए भेंट लाए। ये भेंटें मुक्त भाव से दी गई थीं, लोगों ने इन्हें दिया क्योंकि वे देना चाहते थे। ये भेंट उन सभी चीजों के बनाने के लिए उपयोग में आईं जिन्हें यहोवा ने मूसा और लोगों को बनाने का आदेश दिया था।

### बसलेल और ओहोलीआब

30तब मूसा ने इज़्राएल के लोगों से कहा, “देखो! यहोवा ने बसलेल को चुना है जो ऊरी का पुत्र और यहूदा के परिवार समूह का है। (ऊरी हर का पुत्र था।) 31यहोवा ने बसलेल को परमेश्वर की शक्ति से भर दिया अर्थात् बसलेल को हर प्रकार का काम करने

की विशेष निपुणता और जानकारी दी। 32वह सोने, चाँदी और काँसे की चीजों का आलेखन करके उन्हें बना सकता है। 33वह नग और रत्न को काट और जड़ सकता है। बसलेल लकड़ी का काम कर सकता है और सभी प्रकार की चीजें बना सकता है। 34यहोवा ने बसलेल और ओहोलीआब को अन्य लोगों के सिखाने की विशेष निपुणता दे रखी है। (ओहोलीआब दान के परिवार समूह से अहीसामाक का पुत्र था।) 35यहोवा ने इन दोनों व्यक्तियों को सभी प्रकार का काम करने की विशेष निपुणता दे रखी है। वे बढ़ई और ठठरे का काम करने की निपुणता रखते हैं, वे नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों में चित्रों को काढ़ कर उन्हें सी सकते हैं और वे ऊन से भी चीजों को बुन सकते हैं।”

36 “इसलिए, बसलेल, ओहोलीआब और सभी निपुण व्यक्ति उन कामों को करेंगे जिनका आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने इन व्यक्तियों को उन सभी निपुण काम करने की बुद्धि और समझ दे रखी है जिनकी आवश्यकता इस पवित्र स्थान को बनाने के लिए है।”

2तब मूसा ने बसलेल, ओहोलीआब और सभी अन्य निपुण लोगों को बुलाया जिन्हें यहोवा ने विशेष निपुणता दी थी और ये लोग आए क्योंकि ये काम में सहायता करना चाहते थे। मूसा ने इज़्राएल के इन लोगों को उन सभी चीजों को दे दिया जिन्हें इज़्राएल के लोग भेंट के रूप में लाए थे। और उन्होंने उन चीजों का उपयोग पवित्र स्थान बनाने में किया। लोग प्रत्येक सुबह भेंट लाते रहे। 4अन्त में प्रत्येक निपुण कारीगरों ने उस काम को छोड़ दिया जिसे वे पवित्र स्थान पर कर रहे थे और वे मूसा से बातें करने गए। 5उन्होंने कहा, “लोग बहुत कुछ लाए हैं। हम लोगों के पास उससे अधिक है जितना तम्बू को पूरा करने के लिए यहोवा ने कहा है।”

6तब मूसा ने पूरे डेरे में यह खबर भेजी : “कोई पुरुष या स्त्री अब कोई अन्य भेंट तम्बू के लिए नहीं चढ़ाएगा।” इस प्रकार लोग और अधिक न देने के लिए विवश किए गए। 7लोगों ने पर्याप्त से अधिक चीजें पवित्र स्थान को बनाने के लिए दीं।

### पवित्र तम्बू

8तब निपुण कारीगरों ने पवित्र तम्बू बनाना आरम्भ किया। उन्होंने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों की दस कनतें बनाईं। और उन्होंने करूब के पंख सहित चित्रों को कपड़े पर काढ़ दिया। 9हर एक कनत बराबर नाप की थी। यह चौदह गज\* लम्बी तथा, दो गज चौड़ी थी। 10पाँच कनतें एक गज

\*चौदह गज शाब्दिक “अट्ठाइस हाथा”



आपस में जोड़ी गई जिससे वे एक ही बन गईं। दूसरी को बनाने के लिए अन्य पाँच कनातों आपस में जोड़ी गईं। 11पाँच से बनी पहली कनात को अन्तिम कनात के सिरे के साथ लुप्पी बनाने के लिए उन्होंने नीले कपड़े का उपयोग किया। उन्होंने वही काम दूसरी पाँच से बनी अन्य कनातों के साथ भी किया। 12एक में पचास छेद थे और दूसरी में भी पचास छेद थे। छेद एक दूसरे के आमने-सामने थे। 13तब उन्होंने पचास सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने इन छल्लों का उपयोग दोनों कनातों को जोड़ने के लिए किया। इस प्रकार पूरा तम्बू एक ही कपड़े में जुड़कर एक हो गया।

14तब कारीगरों ने बकरी के बालों का उपयोग तम्बू को ढकने वाली ग्यारह कनातों को बनाने के लिए किया। 15सभी ग्यारह कनातों एक ही माप की थीं। वे पन्द्रह गज लम्बी और दो गज चौड़ी थीं। 16कारीगरों ने पाँच कनातों को एक में सीआ, और तब छः को एक दूसरे में एक साथ सीआ। 17उन्होंने पहले समूह की अन्तिम कनात के सिरे में पचास लुप्पियाँ बनाईं। और दूसरे समूह की अन्तिम कनात के सिरे में पचास। 18कारीगरों ने दोनों को एक में मिलाने के लिए पचास काँसे के छल्ले बनाए। 19तब उन्होंने तम्बू के दो और आच्छादन बनाए। एक आच्छादन लाल रंगे हुए मेढ़े की खाल से बनाया गया। दूसरा आच्छादन सुइसों के चमड़े का बनाया गया।

20तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी के तख्ते बनाए। 21हर एक तख्ता पन्द्रह फीट लम्बा और सताइस इंच चौड़ा बनाया। 22हर एक तख्ते के तले में अगल बगल दो चूल्हे थीं। इनका उपयोग तख्त्तों को जोड़ने के लिए किया जाता था। पवित्र तम्बू के लिए हर एक तख्ता इसी प्रकार का था। 23बसलेल ने तम्बू के दक्षिण भाग के लिए बीस तख्ते बनाए। 24तब उसने चालीस चाँदी के आधार बनाए जो बीस तख्त्तों के नीचे लगे। हर एक तख्ते के दो आधार थे अर्थात् हर तख्ते की हर "चूल" के लिए एक। 25उसने बीस तख्ते तम्बू की दूसरी ओर उत्तर की तरफ के भी बनाए।

26उसने हर एक तख्ते के नीचे दो लगने वाले चाँदी के चालीस आधार बनाए। 27उसने तम्बू के पिछले भाग (पश्चिमी ओर) के लिए छः तख्ते बनाए। 28उसने तम्बू के पिछले भाग के कोनों के लिए दो तख्ते बनाए।

29ये तख्ते तले में एक दूसरे से जोड़े गए थे, और ऐसे छल्लों में लगे थे जो उन्हें जोड़ते थे। उसने प्रत्येक सिरे के लिए ऐसा किया। 30इस प्रकार वहाँ आठ तख्ते थे, और हर एक तख्ते के लिए दो आधार के हिसाब से सोलह चाँदी के आधार थे।

31-32तब उसने तम्बू के पहली बाजू के लिए पाँच, और तम्बू की दूसरी बाजू के लिए पाँच तथा तम्बू के पश्चिमी (पिछली) ओर के लिए पाँच कीकर की कड़ियाँ

बनाईं। 33उसमें बीच की कड़ियाँ ऐसी बनाईं जो तख्त्तों में से एक दूसरे से होकर एक दूसरे तक जाती थीं। 34उसने इन तख्त्तों को सोने से मढ़ा। उसने कड़ियों को भी सोने से मढ़ा और उसने कड़ियों को पकड़े रखने के लिए सोने के छल्ले बनाए।

35तब उसने सर्वाधिक पवित्र स्थान के द्वार के लिए पर्दे बनाए। उसने सन के उत्तम रेशों और नीले लाल तथा बैंगनी कपड़े का उपयोग किया। उसने सन के उत्तम रेशों में करूबों का चित्र काढ़ा। 36उसने बबूल की लकड़ी के चार खम्भे बनाए और उन्हें सोने से मढ़ा। तब उसने खम्भों के लिए सोने के छल्ले बनाए और उसने खम्भों के लिए चार चाँदी के आधार बनाए।

37तब उसने तम्बू के द्वार के लिए पर्दा बनाया। उसने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े तथा सन के उत्तम रेशों का उपयोग किया। उसने कपड़े में चित्र काढ़े।

38तब उसने इस पर्दे के लिए पाँच खम्भे और उनके लिए छल्ले बनाए। उसने खम्भों के सिरों और पर्दे की छड़ों को सोने से मढ़ा, और उसने काँसे के पाँच आधार खम्भों के लिए बनाए।

### साक्षीपत्र का सन्दूक

**37** बसलेल ने बबूल की लकड़ी का पवित्र सन्दूक बनाया। सन्दूक पैतालिस इंच लम्बा, सताइस इंच चौड़ा, और सताइस इंच ऊँचा था। 2उसने सन्दूक के भीतरी और बाहर भाग को शुद्ध सोने से मढ़ दिया। तब उसने सोने की पट्टी सन्दूक के चारों ओर लगाई। 3फिर उसने सोने के चार कड़े बनाए और उन्हें नीचे के चारों कोनों पर लगाया। ये कड़े सन्दूक को ले जाने के लिए उपयोग में आते थे। दोनों तरफ दो-दो कड़े थे। 4तब उसने सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियों को बनाया। बल्लियों के लिए उसने बबूल की लकड़ी का उपयोग किया और बल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा। 5उसने सन्दूक के हर एक सिरे पर बने कड़ों में बल्लियों को डाला। 6तब उसने शुद्ध सोने से ढक्कन को बनाया। ये ढाई हाथ लम्बा तथा डेढ़ हाथ चौड़ा था। 7तब बसलेल ने सोने को पीट कर दो करूब बनाए। उसने ढक्कन के दोनों छोरों पर करूब लगाये। 8उसने एक करूब को एक ओर तथा दूसरे को दूसरी ओर लगाया। करूब को ढक्कन से एक बनाने के लिए जोड़ दिया गया। 9करूबों के पंख आकाश की ओर उठा दिए गए। करूबों ने सन्दूक को अपने पंखों से ढक लिया। करूबों एक दूसरे के सामने ढक्कन को देख रहे थे।

### विशेष मेज

10तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी की मेज बनाई। मेज छतीस इंच लम्बी, अट्ठारह इंच चौड़ी और सताइस इंच ऊँची थी। 11उसने मेज को शुद्ध सोने से मढ़ा।

उसने सोने की सजावट मेज के चारों ओर की। 12तब उसने मेज के चारों ओर एक किनारे बनायी। यह किनारे लगभग तीन इंच\* चौड़ी थी। उसने किनारे पर सोने की झालर लगाई। 13तब उसने मेज के लिए चार सोने के कड़े बनाए। उसने नीचे के चारों कोनों पर सोने के चार कड़े लगाए। ये वहीं-वहीं थे जहाँ चार पैर थे। 14कड़े किनारी के समीप थे। कड़ों में वे बल्लियाँ थीं जो मेज को ले जाने में काम आती थीं। 15तब उसने मेज को ले जाने के लिए बल्लियाँ बनाईं। बल्लियों के लिए उसने बबूल की लकड़ी का उपयोग किया और उन को शुद्ध सोने से मढ़ा। 16तब उसने उन चीजों को बनाया जो मेज पर काम आती थीं। उसने तश्तरी, चम्मच, परात, और पेय भेंटों के लिए उपयोग में आने वाले घड़े बनाए। ये सभी चीजें शुद्ध सोने से बनाई गई थीं।

### दीपाधार

17तब उसने दीपाधार बनाया। इसके लिए उसने शुद्ध सोने का उपयोग किया और उसे पीट कर आधार तथा उसके डंडे को बनाया। तब उसने फूलों के समान दिखने वाले प्याले बनाए। प्यालों के साथ कलियाँ और खिले हुए पुष्प थे। हर एक चीज शुद्ध सोने की बनी थी। ये सभी चीजें एक ही इकाई बनाने के रूप में परस्पर जुड़ी थीं। 18दीपाधार के दोनों ओर छः शाखाएँ थीं। एक ओर तीन शाखाएँ थी तथा तीन शाखाएँ दूसरी ओर। 19हर एक शाखा पर सोने के तीन फूल थे। ये फूल बादाम के फूल के आकार के बने थे। उनमें कलियाँ और पंखुडियाँ थीं। 20दीपाधार की डंडी पर सोने के चार फूल थे। वे भी कली और पंखुडियों सहित बादाम के फूल के आकार के बने थे।

21छः शाखाएँ दो-दो करके तीन भागों में थीं। हर एक भाग की शाखाओं के नीचे एक कली थी। 22ये सभी कलियाँ, शाखाएँ और दीपाधार शुद्ध सोने के बने थे। इस सारे सोने को पीट कर एक ही में मिला दिया गया था। 23उसने इस दीपाधार के लिए सात दीपक बनाए तब उसने तश्तरियाँ और चिमटे बनाए। हर एक वस्तु को शुद्ध सोने से बनाया। 24उसने लगभग पचहत्तर पौंडे शुद्ध सोना दीपाधार और उसके उपकरणों को बनाने में लगाया।

### धूप जलाने की वेदी

25तब उसने धूप जलाने की एक वेदी बनाई। उसने इसे बबूल की लकड़ी का बनाया। वेदी वर्गाकार थी। यह अट्टारह इंच लम्बी, अट्टारह इंच चौड़ी और छत्तीस इंच ऊँची थी। वेदी पर चार सिंग बनाए गए थे।

\*तीन इंच शाब्दिक "एक हथेली" एक व्यक्ति के हाथ की चौड़ाई।

हर एक कोने पर एक सिंग बना था। ये सिंग वेदी के साथ एक इकाई बनाने के लिए जोड़ दिए गए थे। 26उसने सिरें, सभी बाजुओं और सिंगों को शुद्ध सोने के पतरे से मढ़ा। तब उसने वेदी के चारों ओर सोने की झालर लगाई। 27उसने सोने के दो कड़े वेदी के लिए बनाए। उसने सोने के कड़ों को वेदी के हर ओर की झालर से नीचे रखा। इन कड़ों में वेदी को ले जाने के लिए बल्लियाँ डाली जाती थीं। 28तब उसने बबूल की लकड़ी की बल्लियाँ बनाई और उन्हें सोने से मढ़ा। 29तब उसने अभिषेक का पवित्र तेल बनाया। उसने शुद्ध सुगन्धित धूप भी बनाई। ये चीजें उसी प्रकार बनाई गईं जिस प्रकार कोई निपुण बनाता है।

### होमबलि की वेदी

38 तब उसने होमबलि की वेदी बनाई। यह वेदी होमबलि के लिए उपयोग में आने वाली थी। उसने बबूल की लकड़ी से इसे बनाया। वेदी वर्गाकार थी। यह साढ़े सात फुट लम्बी, साढ़े सात फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट ऊँची थी। 2उसने हर एक कोने पर एक सिंग बनाये। उसने सिंगों को वेदी के साथ जोड़ दिया। तब उसने हर चीज को काँसे से ढक लिया।

3तब उसने वेदी पर उपयोग में आने वाले सभी उपकरणों को बनाया। उसने इन चीजों को काँसे से ही बनाया। उसने पात्र, बेलचे, कटोरे, माँस के लिए काँटे, और कढ़ाहियाँ बनाईं। 4तब उसने वेदी के लिए एक जाली बनायी। यह जाली काँसे की जाली की तरह थी। जाली को वेदी के पायदान से लगाया। यह वेदी के भीतर लगभग मध्य में था। 5तब उसने काँसे के कड़े बनाए। ये कड़े वेदी को ले जाने के लिए बल्लियों को पैँसाने के काम आते थे। उसने पर्दे के चारों कोनों पर कड़ों को लगाया। 6तब उसने बबूल की लकड़ी की बल्लियाँ बनाई और उन्हें काँसे से मढ़ा। 7उसने बल्लियाँ को कड़ों में डाला। बल्लियाँ वेदी की बगल में थीं। वे वेदी को ले जाने के काम आती थीं। उसने वेदी को बनाने के लिए बबूल के तख्तों का उपयोग किया। वेदी भीतर खाली थी, एक खाली सन्दूक की तरह।

8उसने हाथ धोने के बड़े पात्र तथा उसके आधार को उस काँसे से बनाया जिसे पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर सेवा करने वाली स्त्रियों द्वारा दर्पण के रूप में काम में लाया जाता था।

### पवित्र तम्बू के चारों ओर का आँगन

9तब उसने आँगन के चारों ओर पर्दे की दीवार बनाई। दक्षिण की ओर के पर्दे की दीवार पचास गज लम्बी थी। ये पर्दे सन के उत्तम रेशों के बने थे। 10दक्षिणी ओर के पर्दे को बीस खम्भों पर सहारा दिया गया था। ये खम्भे काँसे के बीस आधारों पर थे। खम्भों और

बल्लियों के लिए छल्ले चाँदी के बने थे। 11उत्तरी तरफ़ का आँगन भी पचास गज लम्बा था और उसमें बीस खम्भे बीस काँसे के आधारों के साथ थे। खम्भों और बल्लियों के लिए छल्ले चाँदी के बने थे।

12आँगन के पश्चिमी तरफ के पर्दे पच्चीस गज लम्बे थे। वहाँ दस खम्भे और दस आधार थे। खम्भों के लिए छल्ले तथा कुँड़े चाँदी के बनाए गए थे।

13आँगन की पूर्वी दीवार पच्चीस गज चौड़ी थी। आँगन का प्रवेश द्वार इसी ओर था। 14प्रवेश द्वार के एक तरफ पर्दे की दीवार साढ़े सात गज लम्बी थी। इस तरफ तीन खम्भे और तीन आधार थे। 15प्रवेश द्वार के दूसरी तरफ़ पर्दे की दीवार की लम्बाई भी साढ़े सात गज थी। वहाँ भी तीन खम्भे और तीन आधार थे। 16आँगन के चारों ओर की कनाते सन के उत्तम रेशों की बनी थीं। 17खम्भों के आधार काँसे के बने थे। छल्लों और कनातों की छड़े चाँदी की बनी थीं। खम्भों के सिरे भी चाँदी से मढ़े थे। आँगन के सभी खम्भे कनात की चाँदी की छड़ों से जुड़े थे।

18आँगन के प्रवेश द्वार की कनात सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल तथा बैंगनी कपड़े की बनी थी। इस पर कढ़ाई कढ़ी हुई थी। कनात दस गज लम्बी और ढाई गज\* ऊँची थी। ये उसी ऊँचाई की थी जिस ऊँचाई की आँगन की चारों ओर की कनातें थीं। 19कनात चार खम्भों और चार काँसे के आधारों पर खड़ी थी। खम्भों के छल्ले चाँदी के बने थे। खम्भों के सिरे चाँदी से मढ़े थे और पर्दे की छड़े भी चाँदी की बनी थीं। 20पवित्र तम्बू और आँगन के चारों ओर की कनातों की खूंटियों काँसे की बनी थीं।

21मूसा ने सभी लेवी लोगों को आदेश दिया कि वे तम्बू अर्थात् साक्षीपत्र का तम्बू बनाने में काम आई हुई चीज़ों को लिख ले। हारून का पुत्र ईतामार इस सूची को रखने का अधिकारी था। 22यहूदा के परिवार समूह से हर के पुत्र जरी के पुत्र बसलेल ने भी सभी चीज़ें बनाई जिनके लिए यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। 23दान के परिवार समूह से अहोसात्माक के पुत्र ओहोलीआब ने भी उसे सहायता दी। ओहोलीआब एक निपुण कारीगर और शिल्पकार था। वह सन के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी और लाल कपड़े बुनने में निपुण था। 24दो टन\* से अधिक सोना पवित्र तम्बू के लिए यहोवा को भेंट किया गया था। (यह मन्दिर के प्रामाणिक बाटों से तोला गया था।)

25लोगों ने पौने चार टन\* से अधिक चाँदी दी। (यह अधिकारिक मन्दिर के बाट से तोली गयी थी।) 26यह

चाँदी उनके द्वारा कर वसूल करने से आई। लेवी पुरुषों ने बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों की गणना की। छः लाख तीन हजार पाँच सौ पचास लोग थे और हर एक पुरुष को एक बेका\* चाँदी कर के रूप में देनी थी। (मन्दिर के अधिकारिक बाट के अनुसार एक बेका आधा शेकेल होता था।) 27पौने चार टन चाँदी का उपयोग पवित्र तम्बू के सौ आधारों और कनातों को बनाने में हुआ था। उन्होंने पचहत्तर पौंड चाँदी हर एक आधार में लगायी। 28अन्य पचास पौंड\* चाँदी का उपयोग खूंटियों कनातों की छड़ों और खम्भों के सिरो को बनाने में हुआ था।

29साढ़े छब्बीस टन\* से अधिक काँसा यहोवा को भेंट चढ़ाया गया। 30उस काँसे का उपयोग मिलापवाले तम्बू के प्रवेश द्वार के आधारों को बनाने में हुआ। उन्होंने काँसे का उपयोग वेदी और काँसे की जाली बनाने में भी किया और वह काँसा, सभी उपकरण और वेदी की तश्तरियों को बनाने के काम में आया। 31इसका उपयोग आँगन के चारों ओर की कनातों के आधारों और प्रवेश द्वार की कनातों के आधारों के लिए भी हुआ। और काँसे का उपयोग तम्बू के लिए खूंटियों को बनाने और आँगन के चारों ओर की कनातों के लिए हुआ।

### याजकों के विशेष वस्त्र

**39** कारीगरों ने नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों के विशेष वस्त्र याजकों के लिए बनाए जिन्हें वे पवित्र स्थान में सेवा के समय पहनेगे। उन्होंने हारून के लिए भी वैसे ही विशेष वस्त्र बनाये जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

### एपोद

2उन्होंने एपोद सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से बनाया। 3(उन्होंने सोने को बारीक पट्टियों के रूप में पीटा और तब उन्होंने उसे लम्बे धागों के रूप में काटा। उन्होंने सोने को नीले, बैंगनी, लाल कपड़ों और सन के उत्तम रेशों में बुना। इसे निपुणता के साथ किया गया।) 4उन्होंने एपोद के कंधों की पट्टियाँ बनाई। और कंधे की इन पट्टियों को एपोद के कंधे पर टाँका। 5पट्टिका उसी प्रकार बनाया गया था। यह एपोद से एक ही इकाई के रूप में जोड़ दिया गया। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों, नीला, लाल और बैंगनी कपड़े से वैसा ही बना जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

एक बेका या "1/5 औंस।"

पचास पौंड शाब्दिक "1,775 शेकेल।"

साढ़े छब्बीस टन शाब्दिक "सत्तर किक्कर और दो हजार चार सौ शेकेल।"

ढाई गज शाब्दिक "पाँच हाथा।"

दो टन शाब्दिक "उत्तम किक्कर और सात सौ शेकेल।"

पौने चार टन शाब्दिक "सौ किक्कर और 1,775 शेकेल।"

6कारिगरों ने रत्नों को सोने को पट्टी में जड़ा। उन्होंने इम्राएल के पुत्रों के नाम रत्नों पर लिखे। 7तब उन्होंने रत्नों को एपोद के कंधे के पेबन्द पर लगाया। हर एक रत्न इम्राएल के बारह पुत्रों में से एक-एक का प्रतिनिधित्व करता था। यह वैसा ही किया गया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

### सीनाबन्द

8तब उन्होंने सीनाबन्द बनाया। यह वही निपुणता के साथ बनाया गया था। सीनाबन्द एपोद की तरह बनाया गया था। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों, नीला, लाल और बैंगनी कपड़े का बनाया गया था। 9सीनाबन्द बर्गाकार दोहरा तह किया हुआ था। यह नौ इंच लम्बा और नौ इंच चौड़ा था। 10तब कारिगर ने इस पर सुन्दर रत्नों की पकियाँ जड़ीं। पहली पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और एक मर्कतमणि थी। 11दूसरी पंक्ति में एक फिरोज़ा, एक नीलम तथा एक फन्ना था। 12तीसरी पंक्ति में एक धूम्रकान्त, अकीक और एक याकूत था। 13चौथी पंक्ति में एक लहसुनिया, एक गोमेदक मणि, और एक कपिश मणि थी। ये सभी रत्न सोने में जड़े थे। 14इन बारह रत्नों पर इम्राएल के पुत्रों के नाम उसी प्रकार लिखे गये थे जिस प्रकार एक कारिगर मुहर पर खोदता है। हर एक रत्न पर इम्राएल के बारह पुत्रों में से एक-एक का नाम था।

15सीनाबन्द के लिए शुद्ध सोने की एक जंजीर बनाई गई। ये रस्सी की तरह बटी थी। 16कारिगरों ने सोने की दो पट्टियों और दो सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने दोनों छल्लों को सीनाबन्द के ऊपरी कोनों पर लगाया। 17तब उन्होंने दोनों सोने की जंजीरों को दोनों छल्लों में बाँधा। 18उन्होंने सोने की जंजीरों के दूसरी सिरों को दोनों पट्टियों से बाँधा। तब उन्होंने एपोद के दोनों कंधों से सामने की ओर उन्हें फँसाया। 19तब उन्होंने दो और सोने के छल्ले बनाए और सीनाबन्द के निचले कोनों पर उन्हें लगाया। उन्होंने छल्लों को चोगे के समीप अन्दर लगाया। 20उन्होंने सामने की ओर कंधे की पट्टी के तले में सोने के दो छल्ले लगाए। ये छल्ले बटनों के समीप ठीक पट्टुके के ऊपर थे। 21तब उन्होंने एक नीली पट्टी का उपयोग किया और सीनाबन्द के छल्लों को एपोद के छल्लों से बाँधा। इस प्रकार सीनाबन्द पेटी के समीप लगा रहा। यह गिर नहीं सकता था। उन्होंने यह सब चीज़ें यहोवा के आदेश के अनुसार कीं।

### याजक के अन्य वस्त्र

22तब उन्होंने एपोद के नीचे का चोगा बनाया। उन्होंने इसे नीले कपड़े से बनाया। यह एक निपुण व्यक्ति का काम था। 23चोगे के बीचोंबीच एक छेद था। इस छेद के

चारों ओर कपड़े की गोठ लगी थी। यह गोठ छेद को फटने से बचाती थी। 24तब उन्होंने सन के उत्तम रेशों, नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से फूँदने बनाए जो अनार के आकार के नीचे लटके थे। उन्होंने इन अनारों को चोगे के नीचे के सिरों पर चारों ओर बाँधा। 25तब उन्होंने शुद्ध सोने की घंटियाँ बनाईं। उन्होंने अनारों के बीच में चोगे के नीचे के सिरों के चारों ओर इन्हें बाँधा। 26लबादे के नीचे के सिरों के चारों ओर अनार और घंटियाँ थीं। हर एक अनारों के मध्य घंटी थी। याजक उस चोगे को तब पहनता था जब वह यहोवा की सेवा करता था, जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

27कारिगरों ने हारून और उसके पुत्रों के लिए लबादे बनाए। ये लबादे सन के उत्तम रेशों के थे। 28और कारिगरों ने सन के उत्तम रेशों के साफ़े बनाए। उन्होंने सिर की पगड़ियाँ और अधोवस्त्र भी बनाए। उन्होंने इन चीज़ों को सन के उत्तम रेशों का बनाया। 29तब उन्होंने पट्टुके को सन के उत्तम रेशों, नीले, बैंगनी और लाल कपड़े से बनाया। कपड़े में काढ़ने काढ़े गए। ये चीज़ें वैसी ही बनाई गईं जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

30तब उन्होंने सिर पर बाँधने के लिए सोने का पतरा बनाया। उन्होंने सोने पर ये शब्द लिखे: यहोवा के लिए पवित्र। 31तब उन्होंने पतरे से एक नीली पट्टी बाँधी और उसे पगड़ी पर इस प्रकार बाँधा जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

### मूसा द्वारा पवित्र तम्बू का निरीक्षण

32इस प्रकार मिलापवाले तम्बू का सारा काम पूरा हो गया। इम्राएल के लोगों ने हर चीज़ ठीक वैसी ही बनाई जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। 33तब उन्होंने मिलापवाला तम्बू मूसा को दिखाया। उन्होंने उसे तम्बू और उसमें की सभी चीज़ें दिखाईं। उन्होंने उसे छल्ले, तख्ते, छड़ें खम्भें तथा आधार दिखाए। 34उन्होंने उसे तम्बू का आच्छादन दिखाया जो लाल रंगी हुई भेड़ की खाल का बना था और उन्होंने वह आच्छादन दिखाया जो सुइसों के चमड़े का बना था और उन्होंने वह कनात दिखाई जो प्रवेश द्वार से सब से अधिक पवित्र स्थान को ढकती थी।

35उन्होंने मूसा को साक्षीपत्र का सन्दूक दिखाया। उन्होंने सन्दूक को ले जाने वाली बल्लियाँ तथा सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन को दिखाया। 36उन्होंने विशेष रोटी की मेज़ तथा उस पर रहने वाली सभी चीज़ें और साथ में विशेष रोटी मूसा को दिखायी। 37उन्होंने मूसा को शुद्ध सोने का दीपाधार और उस पर रखे हुए दीपकों को दिखाया। उन्होंने तेल और अन्य सभी चीज़ें मूसा को दिखाईं, जिनका उपयोग दीपकों के साथ होता था। 38उन्होंने उसे सोने की वेदी, अभिषेक का तेल,

सुगन्धित धूप, और तम्बू के प्रवेश द्वार को ढकने वाली कनात को दिखाया। 39 उन्होंने काँसे की वेदी और काँसे की जाली को दिखाया। उन्होंने वेदी को ले जाने के लिए बनी बल्लियों को भी मूसा को दिखाया। और उन्होंने उन सभी चीजों को दिखाया जो वेदी पर काम में आती थी। उन्होंने चिलमची और उसके नीचे का आधार दिखाया।

40 उन्होंने आँगन के चारों ओर की कनातों को, खम्भों और आधारों के साथ मूसा को दिखाया। उन्होंने उसको उस कनात को दिखाया जो आँगन के प्रवेशद्वार को ढके थी। उन्होंने उसे रस्सियाँ और काँसे की तम्बू वाली खूंटियाँ दिखाई। उन्होंने मिलापवाले तम्बू में उसे सभी चीजें दिखाई।

41 तब उन्होंने मूसा को पवित्र स्थान में सेवा करने वाले याजकों के लिए बने वस्त्रों को दिखाया। वे उन वस्त्रों को तब पहनते थे जब वे याजक के रूप में सेवा करते थे।

42 यहोवा ने मूसा को जैसा आदेश दिया था इम्राएल के लोगों ने ठीक सभी काम उसी तरह किया। 43 मूसा ने सभी कामों को ध्यान से देखा। मूसा ने देखा कि सब काम ठीक उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा ने आदेश दिया था। इसलिए मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

### मूसा द्वारा पवित्र तम्बू की स्थापना

**40** तब यहोवा ने मूसा से कहा, 1 पहले महीने के पहले दिन पवित्र तम्बू जो मिलाप वाला तम्बू है खड़ा करो। 2 साक्षीपत्र के सन्दूक को मिलापवाले तम्बू में रखो। सन्दूक को पर्दे से ढक दो। 3 तब विशेष रोटी की मेज को अन्दर लाओ। जो सामान मेज पर होने चाहिए उन्हें उस पर रखो। तब दीपाधार को तम्बू में रखो। दीपाधार पर दीपकों को ठीक स्थानों पर रखो।

5 सोने की वेदी को, धूप की भेंट के लिए तम्बू में रखो। वेदी को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखो। तब कनात को पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर लगाओ।

6 होमबलि की वेदी को मिलापवाले तम्बू की पवित्र तम्बू के प्रवेशद्वार पर रखो। 7 चिलमची को वेदी और मिलापवाले तम्बू के बीच में रखो। चिलमची में पानी भरो। 8 आँगन के चारों ओर कनाते लगाओ। तब आँगन के प्रवेशद्वार पर कनात लगाओ।

9 अभिषेक के तेल को डालकर पवित्र तम्बू और इसमें की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। जब तुम इन चीजों पर तेल डालोगे तो तुम इन्हें पवित्र बनाओगे। \* 10 होमबलि की वेदी का अभिषेक करो। वेदी की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। तुम वेदी को पवित्र

पवित्र बनाओगे या "दिखाओ कि वे विशेष उद्देश्य के लिए दूसरों से अलग हैं।"

करोगे। यह अत्यधिक पवित्र होगी। 11 तब चिलमची और उसके नीचे के आधार का अभिषेक करो। ऐसा उन चीजों के पवित्र करने के लिए करो।

12 हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के प्रवेशद्वार पर लाओ। उन्हें पानी से नहलाओ। 13 तब हारून को विशेष वस्त्र पहनाओ। तेल से उसका अभिषेक करो और उसे पवित्र करो। तब वह याजक के रूप में मेरी सेवा कर सकता है। 14 तब उसके पुत्रों को वस्त्र पहनाओ। 15 पुत्रों का अभिषेक वैसे ही करो जैसे उनके पिता का अभिषेक किया। तब वे भी मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं। जब तुम अभिषेक करोगे, वे याजक हो जाएंगे। वह परिवार भविष्य में भी सदा के लिए याजक बना रहेगा।" 16 मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने वह सब किया जिसका यहोवा ने आदेश दिया था।

17 इस प्रकार ठीक समय पर पवित्र तम्बू खड़ा किया गया। यह मिस्र छोड़ने के बाद के दूसरे वर्ष में पहले महीने का पहला दिन था। 18 मूसा ने पवित्र तम्बू को यहोवा के कथानानुसार खड़ा किया। पहले उसने आधारों को रखा। तब उसने आधारों पर तख्तों को रखा। फिर उसने बल्लियाँ लगाई और खम्भों को खड़ा किया। 19 उसके बाद मूसा ने पवित्र तम्बू के ऊपर आच्छादन रखा। इसके बाद उसने तम्बू के आच्छादन पर दूसरा आच्छादन रखा। उसने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

20 मूसा ने साक्षीपत्र के उन पत्थरों को जिन पर यहोवा के आदेश लिखे थे, सन्दूक में रखा। मूसा ने बल्लियों को सन्दूक के छल्लों में लगाया। तब उसने ढक्कन को सन्दूक के ऊपर रखा। 21 तब मूसा सन्दूक को पवित्र तम्बू के भीतर लाया। और उसने पर्दे को ठीक स्थान पर लटकवाया। उसने पवित्र तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक को ढक दिया। मूसा ने ये चीजें यहोवा के आदेश के अनुसार कीं। 22 तब मूसा ने विशेष रोटी की मेज को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने इसे पवित्र तम्बू के उत्तर की ओर रखा। उसने इसे पर्दे के सामने रखा। 23 तब उसने यहोवा के सामने मेज पर रोटी रखी। उसने यह यहोवा ने जैसा आदेश दिया था, वैसा ही किया। 24 तब मूसा ने दीपाधार को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने दीपाधार को पवित्र तम्बू के दक्षिण ओर मेज के पार रखा। 25 तब यहोवा के सामने मूसा ने दीपाधार पर दीपक रखे। उसने यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया। 26 तब मूसा ने सोने की वेदी को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने सोने की वेदी को पर्दे के सामने रखा। 27 तब उसने सोने की वेदी पर सुगन्धित धूप जलाई। उसने यह यहोवा के आदेशानुसार किया। 28 तब मूसा ने पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर कनात लगाई। 29 मूसा ने होमबलि वाली वेदी को, मिलापवाले

तम्बू के प्रवेशद्वार पर रखा। तब मूसा ने एक होमबलि उस वेदी पर चढ़ाई। उसने अन्नबलि भी यहोवा को चढ़ाई। उसने ये चीज़ें यहोवा के आदेशानुसार कीं।

30तब मूसा ने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच चिलमची को रखा। और उसमें धोने के लिए पानी भरा। 31मूसा, हारून और हारून के पुत्रों ने अपने हाथ और पैर धोने के लिए इस चिलमची का उपयोग किया। 32वे हर बार जब मिलापवाले तम्बू में जाते तो अपने हाथ और पैर धोते थे। जब वे वेदी के निकट जाते थे तब भी वे हाथ और पैर धोते थे। वे इसे वैसे ही करते थे जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

33तब मूसा ने पवित्र तम्बू के आँगन के चारों ओर कनातें खड़ी कीं। मूसा ने वेदी को आँगन में रखा। तब उसने आँगन के प्रवेश द्वार पर कनात लगाई। इस प्रकार मूसा ने वे सभी काम पूरे कर लिए जिन्हें करने का आदेश यहोवा ने दिया था।

### यहोवा की महिमा

34जब सभी चीज़ें पूरी हो गईं, बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढक लिया। और यहोवा के तेज से पवित्र तम्बू भर गया। 35बादल मिलापवाले तम्बू पर उतर आया। और यहोवा के तेज ने पवित्र तम्बू को भर दिया। इसलिए मूसा मिलापवाले तम्बू में नहीं घुस सका। 36इस बादल ने लोगों को संकेत दिया कि उन्हें कब चलना है। जब बादल तम्बू से उठता तो इज़्राएल के लोग चलना आरम्भ कर देते थे।

37किन्तु जब बादल तम्बू पर ठहर जाता तो लोग चलने की कोशिश नहीं करते थे। वे उसी स्थान पर ठहरे रहते थे, जब तक बादल तम्बू से नहीं उठता था। 38इसलिए दिन में यहोवा का बादल तम्बू पर रहता था, और रात को बादल में आग होती थी। इसलिए इज़्राएल के सभी लोग यात्रा करते समय बादल को देख सकते थे।

*Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at [www.bibleleague.org/donate](http://www.bibleleague.org/donate) or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.*

## **Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)**

© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.



Bible League International

1 Bible League Plaza

Crete, IL 60417, USA

Phone: 866-825-4636

Email: [permissions@bibleleague.org](mailto:permissions@bibleleague.org)

Web: [www.bibleleague.org](http://www.bibleleague.org)

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0

B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2

B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6

B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8

**Free downloads: [www.bibleleague.org/downloads](http://www.bibleleague.org/downloads)**

